इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

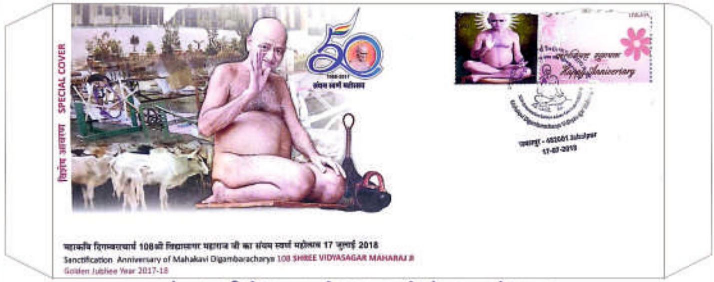

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		अक्टूबर 2024	
16	बुधवार	चतुर्दशी	उत्तराभाद्रपद
17	गुरुवार	पूर्णिमा	रेवती
18	शुक्रवार	प्रतिपदा	अश्विनी
19	शनिवार	द्वितीया	भरणी
20	रविवार	तृतीया	कृत्तिका
21	सोमवार	चतुर्थी	रोहिणी मृगशिरा
22	मंगलवार	पंचमी	आर्द्रा
23	बुधवार	षष्ठी	पुनर्वसु
24	गुरुवार	सप्तमी	पुष्य दिन/रात
25	शुक्रवार	अष्टमी	पुष्य
26	शनिवार	नवमी	आश्लेषा
27	रविवार	दशमी	मघा
28	सोमवार	एकादशी	पूर्वाफाल्गुनी
29	मंगलवार	द्वादशी	उत्तराफाल्गुनी
30	बुधवार	त्रयोदशी	हस्त
31	गुरुवार	चतुर्दशी	चित्रा
		नवम्बर 2024	
1	शुक्रवार	अमावस	स्वाती
2	शनिवार	प्रतिपदा	विशाखा
3	रविवार	द्वितीया	अनुराधा दि.रा.
4	सोमवार	तृतीया	अनुराधा
5	मंगलवार	चतुर्थी	ज्येष्ठा
6	बुधवार	पंचमी	मूल
7	गुरुवार	षष्ठी	पूर्वाषाढ
8	शुक्रवार	सप्तमी	उत्तराषाढ
9	शनिवार	अष्टमी	श्रवण
10	रविवार	नवमी	धनिष्ठा
11	सोमवार	दशमी	शतभिषा
12	मंगलवार	एकादशी	पूर्वाभाद्रपद
13	बुधवार	द्वादशी	रेवती
14	गुरुवार	त्रयोदशी-चतुर्दशी	अश्विनी
15	शुक्रवार	पूर्णिमा	भरणी

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः अक्टूबर 22,28 नवम्बर-3,8,13,14
मशीनरी प्रारंभ : अक्टूबर 17,18,23,24,30 नवम्बर-4,13,14
वाहन खरीदनेः अक्टूबर 17,18,23,24,30 नवम्बर-11,13

तीर्थंकर कल्याणक

18 अक्टूबरः भगवान अनन्तनाथ गर्भ कल्याणक
20 अक्टूबरः भगवान संभवनाथ ज्ञान कल्याणक
30 अक्टूबरः भगवान पद्मप्रभ जन्म तप कल्याणक
01 नवम्बरः भगवान महावीरस्वामी मोक्ष कल्याणक
03 नवम्बरः भगवान पुष्पदन्त जी ज्ञान कल्याणक
07 नवम्बरः भगवान नेमिनाथ गर्भ कल्याणक
13 नवम्बरः भगवान अरनाथ जी ज्ञान कल्याणक
15 नवम्बरः भगवान संभवनाथ जन्म कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

17 अक्टूबरः शरद पूर्णिमा, गुरु उपकार दिवस
21 अक्टूबरः रोहिणी व्रत
29 अक्टूबरः मुक्तावली
30 अक्टूबरः धनतेरस मंगल त्रयोदशी
31 अक्टूबरः चातुर्मास निष्ठापन वर्षायोग पूर्ण
01 नवम्बरः दीपावली, भ. महावीर स्वामी जी निर्वाण प्रातः काल केवलज्ञान सांयकाल
04 नवम्बरः मुक्तावली व्रत
08 नवम्बरः अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
12 नवम्बरः मुक्तावली व्रत
15 नवम्बरः अष्टान्हिका व्रत पूर्ण

सर्वार्थ सिद्धि

17 अक्टूबर : 06/13 बजे से ता. 18-13/26 बजे तक।
21 अक्टूबर : 06/15 बजे से 29/51 बजे तक।
24 अक्टूबर : 22/17 बजे से 30/17 बजे तक।
30 अक्टूबर : 06/20 बजे से 21/43 बजे तक।
04 नवम्बर : 06/23 बजे से 08/04 बजे तक।
08 नवम्बर : 12/03 बजे से 9-11/47 बजे तक।
12 नवम्बर : 07/52 बजे से 29/40 बजे तक।
14 नवम्बर : 06/29 बजे से 24/33 बजे तक।

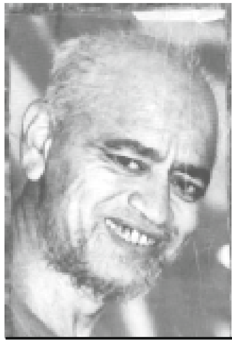

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 306 • अक्टूबर 2024
• वीर नि.संवत 2550-51 • विक्रम सं. 2080 • शक सं. 1945

लेख

• निरंजन शतक में आप्त भक्ति का स्वरुप 08
• श्रमण शतक में प्रतिपादित आत्मत्रय 14
• अकालमरण और मीमांसा 18
• जैन धर्म पर्यावरण और अहिंसा 21
• पुण्य, कब, कैसे 47
• सदी के महानतम संत आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज 50
• **वरिष्ठ नागरिकः** जब डॉक्टर से मिलने जायें 57
• जिसने कैल्केरिया फास अपनाया पाये स्वस्थ विकसित काया 59

बाल कहानी

• रास्ता बदल गया 62

कविता

• हारे का सहारा 20
• तेरी प्रभा से निजको लखा 36
• सत् शिव सुन्दर मुक्ति द्वारा 49
• ईश्वर ने यह संसार बनाया कैसे 56
• उपकारी गुरु 58

कहानी

• कल्लू चाय वाला 52

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 17
चलो देखें यात्रा : 35 • आगम दर्शन :36 • माथा पच्ची : 38 • पुराण प्रेरणा : 39
• कैरियर गाइड : 40 • दुनिया भर की बातें : 41 • इसे भी जानियेः 45
•दिशा बोध : 46• हमारे गौरव : 56 • वरिष्ठ नागरिक : 57 • हास्य तरंग-पाककला : 51
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर -9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढ़ूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया -**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक -**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय -संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर -10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, बांग्लादेश में शेख हसीना का तख्ता पलट हुआ उनके 15 वर्ष के कार्यकाल में आतंकवादी बढ़ावा नहीं ले पाये किंतु आश्चर्य की बात तो यह है कि छात्र आरक्षण आंदोलन ने इतना उग्र रूप लिया कि बांग्लादेश में चारों ओर हाहाकार मच गया यदि शेख हसीना के बयान को सच माना जाये तो यू.एस.ए का हाथ तख्ता पलट में हो सकता है क्योंकि बड़े राष्ट्र विश्व पर अपनी दादागिरि चलाने में बहुत प्रसिद्ध हैं। इनकी छवि इस मामले में कोई खास अच्छी नहीं है। लोगों की धर्मांधता का कोई भी फायदा उठा लेता है। हमारे पडौसी देश का तालीबानीकरण होना भारत के लिये बहुत चिंता का विषय बन सकता है। आतंक के पर्याय ऐसे जाने माने वाले संगठनों से भारतीय सेना को सतर्क रहना बहुत जरूरी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के रहते आतंकियों का सिर उठाना कठिन है।

राजकुमार जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, डॉ. अनिल जैन का लेख पढ़ा **शिथिलाचार रोकने के लिये आवश्यक है सुदृढ़ सामाजिक संगठन** उक्त शीर्षक ने समस्या की जड़ पर प्रहार करने का प्रयास किया है। आये दिन जब शिथिलाचारी साधक किसी अनाचार में पकड़ा जाता है तो वह किसी भी तरह से पंथ जाति की आड़ लेकर बच निकलता है जबकि वह कानून के शिकंजे में फंसता है तो वह शिथिलाचारी जेल में ही फड़फड़ाता रहता है फिर जातिपंथ का कार्ड नहीं चल पाता है। अब यदि सामाजिक संगठन मजबूत रहता है तो शिथिलाचारी को किसी गली से भागने का मौका नहीं मिलता है डॉ. अनिल जैन और विचारणीय लेख लिया है। वह साधुवाद के पात्र हैं।

श्रीमती अर्चना जैन, भोपाल

• सम्पादक महोदय, डॉ. नेमीचन्द्र ज्योतिषाचार्य द्वारा लिखित प्राचीन लेख आचार्य नेमचन्द्र जी और उनका ज्योतिष शीर्षक से लेख पढ़ा लेख में ज्योतिष संबंधी गंभीरताओं को पढ़कर ऐसा लगा कि जैन ज्योतिष की गहराईयां समझ आना आज के समाज के लिये कठिन ही प्रतीत होता हैं। कुछ अजैन विद्वानों का यह कथन भी गलत साबित होता है कि जैनों के ज्योतिष शास्त्र नहीं है प्रस्तुत लेख यह सिद्ध कर देता है कि जैन दर्शन के अनेक आचार्यों ने ज्योतिष की गहराईयों को खूब अच्छी तरह से सुना समझा और अभिव्यक्त किया है। जैन आचार्य यदि वृषभ जी का तिलोय पण्णत्ति और आचार्य नेमिचन्द्र जी का त्रिलोकसार जैसे महान ग्रंथों को पढ़कर जैन ज्योतिष की गहराई स्वतः समझ में आ जाती है।

राखी जैन, सावरमति अहमदाबाद

• सम्पादक महोदय, कोलकाता की प्रशिक्षु डॉक्टर की हत्या और बलात्कार का मामला बड़ी जोर-शोर से उछला देश के एक लाख डॉक्टर हड़ताल पर चले गये किन्तु ममता बेनर्जी का एक नारी के प्रति न्याय दिलाने का मन नहीं बना। जब राजनैतिक उलझन बढ़ती दिखी लेकिन एक मृत प्रशिक्षु के प्रति न्याय मिलने की कोई आशा नहीं दिखी होईकोर्ट ने जांच सी.बी.आई को सौंपकर न्याय दिलाने का ठोस कदम उठाया। पश्चिमी बंगाल के ऐसे कई अत्याचारी प्रकरण जिनमें मुख्यमंत्री ममता बेनर्जी की भूमिका सख्त नहीं रही इससे ऐसा लगता है प्रमुता पाकर कौन नहीं बहक जाता है प्रभुता का घमंड अधिक दिन तक नहीं चलता है एक न एक दिन सच सामने आता है और घमंड भी चूर-चूर हो जाता है। अब देखना यह है प्रशिक्षु डॉक्टर के लिये न्याय कब मिलता है। परन्तु देर से मिला न्याय अन्याय ही कहलाता है।

अभिषेक जैन, नोयडा (उ.प्र.)

भक्ति तरंग
चेतो रे भाई

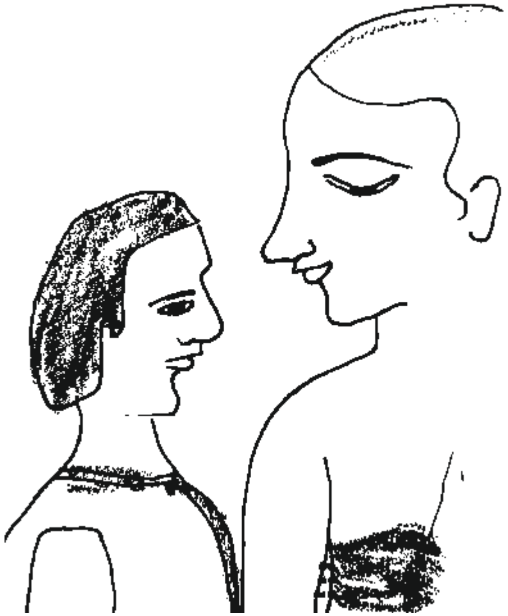

अरे ! हा चेतो रे भाई ।।

मानुष देह लही दुलही, सुधरी उधरी सतसंगति पाई ।।1।।
जे करनी वरनी करनी नहिं, ते समझी करनी समझाई ।।2।।
यों शुभ थान जग्यो उर ज्ञान, विषै विषपान तृषा न बुझाई ।।3।।
पारस पाय सुधारस भूधर भीखके मांहि सुलाज न आई ।।4।।

अरे भाई ! संभलो और चेत करो । मनुष्य की दुर्लभ देह तुम्हें मिली है, और अच्छी घड़ी (समय) प्रकट हुई है कि तुम्हें सत्संगति का अवसर मिला है। (इस मनुष्य देह से) जैसी करनी (करने योग्य कार्य) कही गई है वैसी करनी तो तुम करते नहीं/समझने नहीं। इसलिये (बार-बार) करनी समझाई जाती है।

इस सब शुभ स्थान (मनुष्य जीवन) में अंतर में ज्ञान जगा है कि विषय रूप विष का पान करने से प्यास नहीं बुझती, तृष्णा नहीं मिटती।

अब भगवान पारसनाथ के अमृतसम दर्शन हुये हैं, भूधरदास कहते हैं कि उनसे याचना करनें में मुझको कोई लाज नहीं हैं।

अहिंसा का अनादर क्यों

वही धर्म उत्कृष्ट होता है जिसमें अहिंसा का परिपालन पूर्ण रूप से किया जाता है। जिस धर्म में अहिंसा, संयम और तप होता है उस धर्म को स्वर्ग के देवता भी आकर नमस्कार करते हैं। दुनिया के प्रसिद्ध ग्रंथ महाभारत में **अहिंसा परमो धर्म** का सूत्र वाक्य उपलब्ध होता है। जिस आधार पर विश्व के नेता महात्मा गांधी ने भारत की आजादी के लिये अहिंसा को प्राथमिकता दी और हिंसा से परहेज किया, जिस आंदोलन में हिंसा का प्रसंग आने लगा उस आंदोलन को बापु ने तुरंत वापस ले लिया। परिणाम सामने यह आया कि अहिंसा की विजय हुई और भारत को अहिंसा के बल पर गुलामी की जंजीरों से महात्मा गांधी ने मुक्त कराया। उनकी अहिंसा के जीत को चिरस्थायी बनाने को संयुक्त राष्ट्रसंघ ने बापू के जन्मदिन को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित किया।

आज आये दिन धार्मिक आंदोलनों में जब हिंसात्मक दंगो को देखा जाता है, तब यह कहने में संकोच नहीं होता है कि राम के भक्त, रहीम के बंदे अहिंसा को अनादर कर रहे हैं। कोई भी धर्म हिंसा फैलाने में विश्वास नही रखता है, परंतु धर्म के नाम पर छल फरेब करने वाले नसेडी तथाकथित धर्मात्मा अपने भय से तो करूणा और प्रेम प्रदर्शित करते हैं, परंतु वे सच्चे हृदय से करूणा और प्रेम को स्वीकार नहीं करते क्योंकि उनका मन और मस्तिष्क मजहबी सत्ता सापेक्ष होता है।

जैन धर्म मुलतः अहिंसा की नींव पर ही टिका है किंतु तीर्थ हडपने की मानसिकता रखने वाले वस्त्र पात्र के समर्थक, पंथ विशेष के जैन लोग अपनी सुविधा का समर्थन जुटाने के लिये, तीर्थ हड़पने के प्रयास में अपना स्तर गिराते जा रहे हैं। अहिंसा पक्ष को छोड़कर हिंसक क्रूरता का परहेज करना प्रायः बंद कर चुके हैं वे अपना स्तर इतना गिरा चुके हैं कि लोग उनसे पुछते हैं कि अहिंसा के पुजारी इतने हिंसक क्यों बन रहे हैं। पंथवाद के कटीले झाड़ की छाँव में बैठकर हिंसक वृत्ती का अपनाने वाले दकियानुसी जैन जब पंथवाद के छोटे से नाले में धंसते दिखाई देते हैं, तब यह कहना स्वाभाविक होता है, कि अहिंसा के पुजारी अहिंसा का अनादर कर रहे हैं।

अहिंसा को अनादर का परिणाम सदैव दुःखमय होता है। परिग्रहवादी अहिंसा का पालन तो नहीं कर सकता है। सच्ची अहिंसा का पालन तो वही कर सकता है जो हर प्रकार से परिग्रह का त्याग कर दे। अहिंसा का अनादर करना दुर्गति का कारण होता है, और अहिंसा का अनादर वे ही लोग करते हैं जो पंथवाद के कट्टर पोषक होते हैं। जैन धर्म के अनेकांत और स्याद्वाद के शैली को अपनाने वाले लोग सदैव उदारवादी होते हैं और कभी भी अहिंसा का अनादर नहीं करते। अतः सच्चे जैनी से अहिंसा के अनादर की अपेक्षा कभी नहीं की जा सकती।

निरंजन शतक में आप्त भक्ति का स्वरुप

✻ ब्र. समता जैन मारौरा, इंदौर ✻

इस उत्तर भारत मेंआचार्य ज्ञानसागर जी महाराज 20वीं शताब्दी के लब्ध प्रतिष्ठा और लोक विश्रुत संस्कृत महाकवि हुए हैं । उन्हीं का अनुकरण करते हुए उनके ही शिष्य आचार्य विद्यासागर जी संस्कृत के महाकवि हैं। संस्कृत भाषा, भारतीय संस्कृति की संवाहक रही है। संस्कृत साहित्य का विशाल भण्डार भारत के 3 प्रमुख संप्रदायों वैदिक, जैन, बौद्ध मनीषियों की सेवा से समृद्ध रहा है। संत शिरोमणि आचार्य श्री द्वारा रचित **निरंजन शतक** में जिनेन्द्र भगवान का स्तवन है।

'निरंजन शतक' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना हैं निरंजन व 'शतक'। यहाँ 'निरंजन' शब्द वे अनेक पर्यायवाची शब्द हैं- निष्कलंक, निर्दोष, मिथ्यात्व से रहित, ऋजु और परमात्मा। शतक का अर्थ है -सौ। अर्थात् 100 श्लोकों में जिनेन्द्र की भक्ति विश्मात्मा की भक्ति की गई है वह निरंजन शतक है।

जिस प्रकार समाधितंत्र/समाधि शतक में आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने 105 श्लोक लिखे हैं उसी प्रकार निरंजन शतक में जिनेन्द्र के स्तवन रूप 100 श्लोक हैं, अंत में 5 अनुष्टुप श्लोकों में मंगल कामना व्यक्त की गई है। इस शतक में 99 पद द्रुत विलंबित छंद में तथा अंतिमआर्या छंद में है, जिसमें गुरु को स्मरण किया गया है।

आचार्य श्री ने निरंजन शतक अंत के 5 श्लोकों में रचना स्थल एवं रचना काल का उल्लेख किया है। आचार्य श्री ने निरंजन शतक को श्री धर केवली की निर्वाण स्थली दि. जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलगिरी दमोह में वीर नि. सं 2503, विक्रम सं 2032 में ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी 23 मई 1977 सोमवार को पूर्ण किया।

भारत वर्ष में भारतीय साहित्य परंपरा में अनेक मनीषी हुए हैं जिनके द्वारा कई शतकों का सृजन हुआ है। फिर भी 5 से अधिक शतकों के निर्माता कवि का साहित्य पर उल्लेख नहीं मिलता है।

भारतीय साहित्य परंपरा के मूक कवि के द्वारा सबसे अधिक 5 शतक लिखे गये हैं - वे निम्न हैं 1. आर्याशतकम 2. कटाक्षशतकम् 3. मंदस्मित शतकम् 4. स्तुतिशतकम् 5. पादारविन्द शतकम्।

दिगम्बर जैन श्रमण परंपरा में परम पूज्य आचार्य श्री का यह अनुदान हमें गौरव प्रदान कर रहा है, जिन्होंने षटशतकों की रचना की है। 1. श्रमण शतकम् 2. भावना शतकम् 3. निरञ्जन शतकम् 4. परीषह शतकम् 5. सुनीति शतकम् 6. चैतन्य चंद्रोदय।

आचार्य श्री ने निरञ्जन शतक के प्रारंभ में सुर नरों से नमित, मुनिरंजक एवं कर्म कालुष्य से हीन निरंजन सिद्ध भगवान को नमस्कार किया है, साथ ही आचार्य श्री भावना भाते हैं कि मैं संसार परिभ्रमण से मुक्त होने के लिये जिनेन्द्र भगवान सिद्ध परमेष्ठी की स्तुति करता हूँ।

आचार्य श्री के निरञ्जनादि शतक द्वीप स्तंभो की शांति हैं, जो सागर की विराट परिधि में अंधकार ग्रस्त, दिग्भ्रमित नाविकों को दिशा निर्देश देते हैं।

आचार्य श्री के सभी शतकों को संजीवनी औषध कहा जा सकता है, जिसका सेवन कर मुमुक्षु साधक अमृतमय हो जाता है स्वयं अमृतरूप हो जाने अथवा अमृत के आस्वादन की कला का कौशल इन शतकों से प्राप्त होता है।

निरंजन शतक की रचना का उद्देश्य- आचार्य श्री ने इस शतक की रचना मनः शांति के लिये की है। वे जानते हैं इंद्रियों के आकर्षणों से मन की शांति भंग होती है। संसारी प्राणी प्रायः इंद्रियों के जाल में फंसकर अपने को दुखी करता है,उसे आत्मशांति के लिये अवकाश प्राप्त नहीं होता है, इसलिये इस शतक का उद्देश्य दुखी एवं चिंताग्रस्त मानव को शांति पहुंचाना है।

आचार्य श्री ऐसे साधक है, जिनके जीवन का लक्ष्य ध्यान के द्वारा चित्त की एकाग्रता प्राप्त करना है, वे पंचइन्द्रियों के विषयों से बहुत दूर हैं। यह शतक जिनेन्द्र देव का स्तवन है और जिनेन्द्र देव का स्तवन मन के विचारों को दूर कर आत्मशांति प्रदान करता है

यही उद्देश्य आचार्य श्री के निरंजन शतक में परिलक्षित होता है। जैन धर्म में जीवन का चरम लक्ष्य अर्हत् पद प्राप्ति है। अरिहंत की भक्ति से संसार से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। इसलिये आचार्य श्री ने अरिहंत की भक्ति करते हुए श्लोक नं.100 के माध्यम से अनंत ज्ञानादि चतुष्टय रूप आत्मा विद्यारूपी सुधा को प्राप्त करना चाहते हैं।

वै विषमयीमविद्यां, विहाय ज्ञानसागरजां विद्याम्।
सुधा मेम्यात्म विद्यां, नेच्छामि सुकृतजां भुवि द्याम्।।100।।

अर्थात् हे भगवान! इस पृथ्वी पर मैं निश्चय से पुण्योदय से प्राप्त होने वाले स्वर्ग को नहीं चाहता हूँ, किन्तु विषरूप अविद्या को छोड़कर ज्ञानरूप सागर (ज्ञानसागर गुरु) में उत्पन्न आत्म विद्या रूप सुधा को प्राप्त होता हूँ।

आचार्य संमतभद्र स्वामी शांतिनाथ भगवान की स्तुति करते हुये स्वयंभू स्तोत्र के 80 नं. श्लोक में कहते हैं-

स्वदोष शान्त्या विहितात्म शांतिः शान्ते र्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद् भवक्लेष भयो पशान्त्यै, शान्तिर्जिनो मे भगवान शरण्यः।।

अर्थात् तीर्थंकरों के गुणानुवाद से स्वयं के दोष नष्ट होकर आत्मा की शांति प्राप्त होती है। केवली भगवान की शरण में जाने से ही भव-भव के क्लेश भी क्षण भर में शांत हो जाते हैं, अर्थात भव-भव के कर्मों की निर्जरा क्षण भर में हो जाती है।

निरंजन शतक की महिमा- यह निरञ्जन शतक एक स्तोत्र है। पूर्वाचार्यों ने कहा है - पूजा कोटि समं स्तोत्रं। अर्थात् एक स्तोत्र का फल एक कोटि पूजाओं के बराबर होता है अतः इस निरञ्जन शतक को पढ़ने का फल एक कोटि पूजाओं के बराबर पुज्य संलय होता है।

इस शतक की रचना सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान सम्यक चारित्र की वृद्धि के लिये की गई है। जिनेन्द्र भगवान की स्तुति करने के लिये आचार्य श्री ने निरंतन शतक में आचार्य जिनसेन स्वामी की परंपरा का अनुशरण करते हुए जिनेन्द्र भगवान के कई नामों और संबोधनों का उल्लेख किया है। ये नाम आचार्य जिनसेन स्वामी कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र से भिन्न हैं।

निरंजन शतक में आचार्य श्री ने जिनेन्द्र भगवान की स्तुति करते हुए जिनेन्द्र भगवान

को विदित विश्व (सर्वज्ञ) ! विजितायते ! अर्थात् आगामी संसार के विजेता ! यते ! मनो ! विभो ! अयि ! जिन ! अभय ! सदय ! अजातीत ! अतनो ! विमानस ! अमनः! अभयंगत ! जैसे लगभग 100 विशेषणों से पुकारा है।

निरंजन शतक में आचार्य श्री के द्वारा जिनेन्द्र भगवान की स्तुति केवल अंध श्रद्धा न होकर युक्तियाँ तर्क से सिद्ध की जाने वाली न्याय स्तुति है।

जैन साहित्य में जिनेन्द्र भगवान की स्तुति की विभिन्न 4 विशेषतायें मिलती हैं। ये 4 विशेषताओं इस निरंजन शतक में भी परिलक्षित है।

1. सामान्य जिन स्तुति- निरञ्जन शतकों में आचार्य श्री भगवान की स्तुति करते समय भगवान के अनंत गुणों का आख्यान करते हैं, फिर भी वे कभी सम्यक्दर्शन से युक्त जिनेन्द्र स्तुति को वैचित्र्य के साथ भी कहते हैं। कहीं कहीं पर जिनेन्द्र भगवान की स्तुति सर्व सामान्य गुणों का निर्देश करते हुए कहते हैं-वह सामान्य जिन स्तुति कहलाती है यथा-श्लोक नं. 26 में

2. विशेष जिन स्तुति- आ. श्री निरञ्जन शतक में जहाँ पर जिनेन्द्र भगवान के विशेष गुणों का निर्देश करते हुए गुणगान करते हुए हैं, वह विशेष जिन स्तुति कहलाती है यथा-

निज निधेर्निलयेन, सताऽतनो, मेतिमता, वमता ममता तनोः।
कनकता फलतो ह्युदिता तनौ, यदसि, मोहतमः सविताऽतनोः ।।10।।

अर्थात् हे अतनो ! हे अशरीर ! यतश्च आप विशाल आत्मसंपदा के आधार हैं, स्वपरभेद विज्ञानी होकर आपने शरीर सबंधी ममताओं को दूर किया है और आपके शरीर में सुवर्ण जैसी आभा प्रकट हुई है अतः मेरे मोहरूपी तिमिर को नष्ट करने के लिये आप सूर्य तुल्य हैं।

3. निष्पक्ष जिन स्तुति- निरंजनशतक में आ. श्री अरहंत देव की निष्पक्ष स्तुति करते हुए श्लोक नं. 4 में कहते हैं -

पदयुगं शिवदं न, शमीह ते, श्रयतु चेत्स्वपदं स समीहते।
अधनिनो धनिनंहि धनाप्यते, किमु, भजंति न लब्ध धनाप्त ! ये ।।4।।

अर्थात् - हे आत्मधन को प्राप्त करने वाले अरहंत देव ! इस जगत में यदि शांत स्वभाव वाला जन सुख स्वरूप स्वपद, शुद्धात्म तत्त्व को प्राप्त करना चाहता है तो वह मोक्षदायक अथवा कल्याण प्रदाता चरणयुगल की सेवा करें, क्योंकि इस जगत में जोनिर्धन मनुष्य हैं, वे धन प्राप्ति के लिये क्या धनिक पुरुष की सेवा नहीं करते अर्थात् अवश्य करते हैं।

4. आत्मनिंदा गर्भित जिनस्तुति- निरञ्जन शतक में आचार्य श्री अरहंत देव की आत्म निंदा पूर्वक स्तुति करते हुये श्लोक नं. 31 में कहते हैं

नहिरूचिस्तव तां, प्रति काञ्चन, प्रकृत, भू तिमितोऽपि च काचन।
गणधरैः शमिनस्तव, गीयते , न गरिमा, ममका तनुगीर्यते ।।31।।

अर्थात् हे मुनीन्द ! स्वर्ण निर्मित छत्र त्रयादि वैभव को प्राप्त होने पर भी आपकी उस ओर रूचि प्रीति नहीं है , तथा अत्यंत शांत रहने वाले आपकी गरिमा महिमा गणधरों द्वारा भी जब गायी नहीं जाती है तब मेरी अल्पवाणी क्या है ? कुछ नहीं।

समयसार में आचार्य कुंद कुंद स्वामी आप्त का स्वरूप कहते हैं।

णिस्सेस दोस रहिओ केवल एग रार परम विभव जुदो।
सो परमप्पा उच्च तव्विवमो णा परमप्पा।।

अर्थात जो समस्त दोषों से रहित और केवल ज्ञान आदि परम ऐश्वर्य से रहित हैं उसे ही परम आप्त कहते हैं, इससे विपरीत आप्त नही हैं।

निरंजन शतक में आप्त के स्वरूप को परिलक्षित करते हुये जिनेन्द्र भगवान का स्तवन करते हुये आचार्य श्री श्लोक नं. 55 में कहते हैं-

प्रवचनेऽचिति साऽप्रतिमानता, ननु ,मतात्र सता शुचि मानता।
तव विदं हि हठा द्य, दसंग ! ताः समयकाः, स्वयमीश्वर। संगताः ।।55।।

हे निर्ग्रन्थ ! हे नाथ ! यहाँ आपकी अचेतन वाणी में निश्चय से जो प्रसिद्ध अनुपमता सत्पु रूषों ने स्वीकृत की है तथा निर्मलता को प्राप्त हैं , उसका कारण यह है कि जगत के समस्त पदार्थ आपके ज्ञान में हठपूर्वक स्वयं प्राप्त हुये हैं।

निरंजन शतक में आचार्य श्री वीतरागता को उपादेय और सरागता को हेय बताते हुए श्लोक नं. 28 में कहते हैं-

विगत रागतया, स्वमहिंसया, शिवमतोऽसि जगन्नहि हिंसया।
उचितमेव सदोचित साधनं, भुवि, ददाति शुभं सहसा धनम्।।28।।

अर्थात् हे भगवान ! आप वीतरागता रूप अहिंसा से(शिव) मोक्ष अथवा अनंत सुख को प्राप्त हुए हैं। इसके विपरीत सरागता रूप हिंसा से जगत् मोक्ष अथवा सुख को प्राप्त नहीं हो रहा है। यह उचित ही है कि पृथ्वी पर योग्य साधन ही सदा इष्ट धन को शीघ्र देता है, अयोग्य साधन नहीं अर्थात् वीतरागता ही सुख का कारण है और सरागता दुख का कारण है।

निरंजन शतक में आचार्य श्री बर्फ के पानी से भी शीतल जिनेन्द्र भगवान को बताते हुए 38 नं. श्लोक में कहते हैं -

असि सदात्मनि वेति, मुनीरतः परम, शीतल को हिम नीरतः।
अनलतो निजतां, प्रविहाय तद दहति, नाजविधे र्विधिहा यतः ।।38।।

अर्थात् - हे अज ! हे जन्मातीत जिनेन्द्र ! आप सदा आत्म स्वरूप में लीन हो अथवा निश्चय से मुनि हो। बर्फ के पानी से अत्यधिक शीतल हो। वह पानी अग्नि से स्वरूप को निजी शीतलता को छोड़कर जलाने लगता है, परन्तु आप विधिहा कर्म को नष्ट करने वाले होने से कर्म से जलते जलाते नहीं हो।

निरंजन शतक में साहित्यिक पक्ष- आचार्य श्री जिनेन्द्र देव की महिमा का वर्णन करते हुए काव्य में सौष्ठव के लिये भाषा और गुणों का सुंदर प्रयोग किया है। गुणों से ही काव्य की शोभा बढ़ती है। जैन दर्शन और व्याकरण , शास्त्रीय,शब्द चातुरी और शब्द वैविध्य से वेष्टित आचार्य विद्यासागर जी की समस्त संस्कृत रचनायें अलंकार विधान और छंदो विधान से साधु तया मण्डित हैं। उनकी शब्द योजना श्रुति सुखद है, पदावली में लालित्य है और वाक्यावली में संगीत विद्यमान है, जो सुधी पाठकों की हृदयतंत्र को झंकृत करने में पूर्णतया समर्थ हैं।

निरंजन शतक में अंलकार संयोजना- आचार्य श्री का सबसे प्रिय अंलकार यमक है , इसलिये आचार्य श्री ने लगभग सभी शतकों श्रमण शतक, परीषह शतक, सुनीति शतक,

तथा निरञ्जन शतक में सर्वाधिक यमक अलंकार का ही प्रयोग किया, क्योंकि यमक अंलकार से माधुर्यमय वातावरण निर्मित होता है, जो कि शांत रस के सर्वथा अनुकूल है । यमक अलंकार से आचार्य श्री की वाक् प्रतिभा व रचना शैली की श्रेष्ठता सिद्ध होती है आचार्य श्री ने अर्थालंकारों में प्रमुखता से उपमा, दृष्टान्त विरोधाभास, व्यतिरेक, निदर्शना, अर्थान्तर न्यास आदि अंलकारों का भी बहुलता से प्रयोग किया है

निरंजन शतक में शान्तरस का प्रभाव- साहित्य जगत में सभी रसों में प्रमुख श्रृंगार रस है, किन्तु आचार्य श्री के अनुसार अध्यात्म का सर्वोत्तम रस शांत रस ही है। आचार्य श्री के सभी शतकों में शांत रस का ही प्रभाव है। आचार्य श्री के काव्य में शांत रस की ऐसी सुधा धारा प्रवाहित होती है, कि उसमें अवगाहन करने वाला प्रत्येक पाठक श्रोता अपने अन्तर्जगत में असीम शान्ति एवं सुख का अनुभव करने लगता है।

शान्त रस की प्रतिमूर्ति द्वारा जब शान्त रस के काव्य का सृजन होता है, तो वह इतना चमत्कारी होता है कि उसका एक-एक शब्द अंतस् के कण-कण को आन्दोलित कर आलौकिक आनन्द से परिपूरित कर देता है।

उदा.- **ननु मुनेश्च यथा धृत वृत्ततः स्रवति शान्तरसः प्रति वृत्ततः।**
अविरलं त्वदु पासकतोऽमनो, नहि तथा शशिनो मुखतो मनो ।।70।।

अर्थात् - हे भाव मन से रहित ! जिनदेव ! सम्यक् चारित्र को धारण करने वाले आपके उपासक मुझ मुनि से तथा इस काव्य के प्रत्येक छंद से जैसा शान्त रस झर रहा है वैसा चन्द्रमा के बिम्ब से नहीं झरता।

शब्दकोश के धनी आचार्यश्री की ललित कवितायें अपनी नाना कलापूर्ण भाव भंगिमाओं से काव्य जगत में मूर्तिमयी सी जान पड़ती हैं, जिनकी ललित चेष्टाओं से बड़े-बड़े विज्ञ और रस मर्मज्ञ काव्यकार आहत होकर अपना ज्ञान वैभव को खो बैठते हैं।

निरंजन शतक में माधुर्य गुण समागम - काव्य शास्त्रज्ञ कहते हैं , कि चित्त को प्रवीभूत करने वाला और प्रसन्नचित्त करने वाला माधुर्य गुण होता है जो करुण और शान्त रस में निहित होता है। निरंजन शतक में पदशय्या की ललित निबंधना के साथ माधुर्य का सुंदर समागम है। जो हृदय में एक अनिर्वचनीय आनंदानुभूति कराता है, जो श्लोक नं. 36 में दृष्टव्य है -

सुरनगः सुरगौः, सुरवैभवं, सुरपुरे, वितनोति च वै भवम्।
भव विमुक्ति सुखं, फलमेव च, स्तवन, तत्तव साध्विति मे वचः ।।36।।

भावार्थ - हे भगवान ! स्वर्ग में कल्पवृक्ष, कामधेनु और देवों का ऐश्वर्य है, वह निश्चय से संसार को विस्तृत करता है। परन्तु आपके स्तवन से सुखरूपी फल ही प्राप्त होता है, ऐसा मेरा कहना है।

निरंजन शतक में जिनेन्द्र की भक्ति करने से जिनेन्द्र के समाज बन जाते हैं ऐसा भाव आचार्य श्री श्लोक 2 में कहते हैं।

निजरूचा स्फुरते भवतेऽयते, गुणगणं , गणनातिगकं यते।
विदित विश्व ! विदा, विजितायते ! ननु, नमस्तत एष जिनायते ।।2।।

भावार्थ - जिन्होंने समस्त पदार्थ को जान लिया है, जिन्होंने ज्ञान के द्वारा अपने भविष्य

को विजित किया है तथा जो महामुनीन्द्र हैं, ऐसे हे जिनेन्द्र ! अपरिमित गुण समूह को प्राप्त करने वाले आपके लिए मेरा निश्चय से नमस्कार है। इस नमस्कार से मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि मैं जिन के समान हो गया हूँ। आपके स्तवन से मैं जिन बनूंगा, इसमें संशय नहीं है।

निरंजन शतक में छंद विधान - आचार्यश्री ने अपने सभी शतकों में एक ही छन्द द्रुत विलंबित का प्रयोग किया है, जिससे उनकी छंद योजना का भी वैशिष्ट्य प्रकट होता है।

आचार्य विद्यासागरजी महाराज विभिन्न कल्पनाओं के जनक : महाकवि आचार्य श्री विद्यासागरजी के काव्यों में विभिन्न प्रकार की कल्पनायें बड़ी ललित और मनोरम हैं, इस कल्पनाओं से जो श्लोक 39 में जिनेन्द्र की भक्ति का दृष्टव्य है।

सुरमणि प्रथमा, प्रगुणावलिः तव, परा च शुचिः सुगुणावलिः।
विरमतीव रतिश्च, सति त्वयि, त्रिभुवन, प्रगताऽपि सती त्वयि ।।39।।

भावार्थ - हे /अयि देव ! उत्तम गुणावली आपकी प्रथम सुभार्या है और उज्ज्वल कीर्ति द्वितीया सुभार्या है। इनमें प्रथम सुभार्या तो रति की तरह एक आप में ही विशेष रूप से रमती है, परन्तु द्वितीय सुभार्या त्रिभुवन में जाकर भी सती है। यह कैसा विरोध है ? यह विरोधाभास अलंकार है। यहाँ पद्यगत शब्दावली सुरमणी के समान सरल सरस आकर्षक तथा अति रमणीय है, तथापि अन्तर्निहित भाव बड़ा ही गंभीर है।

आचार्यश्री का निरंजन शतक मोदक के समान है, जिनका आस्वादन कर पाठक पुष्टि एवं तृप्ति का अनुभव करता है। आचार्यश्री के निरंजन शतक में जीवन को आलोकित करने वाले तथ्यों के दर्शन होते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आचार्यश्री के शतकों ने 20 वीं शताब्दी के संस्कृत साहित्य में आध्यात्मिक विवेचना के साथ-साथ काव्य सारणी का आश्रय लेकर नवीन भाव राशियों का उपहार दिया हैं। उनके शतकों के समावेश से निसंदेह सरस्वती का भण्डार समृद्धतर होगा।

आचार्यश्री के अमृतमय लेखनी से निरन्तर इसी प्रकार अमृत क्षरण होता रहेगा, यह विश्वास है। अन्त में गुरुदेव आचार्यश्री के 2 पंक्तियां समर्पित करती हूँ।

ध्यानं मूलं गुरोमूर्तिः पूजा मूलं गुरु पादमः।
मंत्र मूले गुरु वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरु कृपा।।

अर्थात् गुरु की मूर्ति ध्यान का मूल है, गुरु के चरण ही पूजा का मूल है। गुरु की वाणी मंत्रो का मूल है और गुरु कृपा मोक्ष का मूल है।

इन संगोष्ठियों आदि के माध्यम से हम जितना-जितना गुरु को याद करते हैं, उतना-उतना हम चारित्र और ज्ञान के समीप पहुंचते हैं।

गुरु को याद करना ही ज्ञान को याद करना है।
गुरु को भूलना, ज्ञान को भूलना है।
गुरु का सान्निध्य पाना, ज्ञान के निकट जाना है।
और गुरु से दूर भागना, रत्नत्रय से दूरी बनाना है।

हे गुरुदेव ! आज संयम स्वर्ण महोत्सव वर्ष में, मैं यही भावना भाती हूँ कि गुरु कृपा से रत्नत्रय की प्राप्ति हो, और बोधि-समाधि की प्राप्ति कर मोक्ष पद की यात्रा को प्रशस्त करूँ।

श्रमण-शतक में प्रतिपादित आत्मत्रय

✻ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✻

जैन दर्शन और अध्यात्म के व्याख्याता आचार्य ने अध्यात्म वृत्ति की शुरुआत आत्मत्रय से की है। मोक्ष पाहुड, परमात्मा प्रकाश, योगसार, ज्ञानार्णव जैसे अध्यात्म कालक ग्रंथों में तीन प्रकार की आत्माओं का वर्णन खूब गहराई से किया गया है। इसी पद्धति का अनुकरण करते हुये परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपनी अलंकारमयी रचना श्रमण-शतक में तीन प्रकार की आत्माओं को केन्द्र बनाया है। अध्यात्म के ज्ञाता वे ही माने जाते हैं जो बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा के स्वरूप को अपनी प्रज्ञा में स्पष्ट कर लेते हैं। यद्यपि छहढाला धवलाकार पंडित दौलतराम जी ने इस विषय को बहुत सरल और सुबोध शैली में स्पष्ट किया है। लेकिन श्रमण शतक ग्रंथ में अलंकारिक शैली से साहित्यक विद्या का समावेश करते हुये सरलता और सुबोधता को किसी प्रकार की क्षति न पहुचाते हुये आर्या छंद संस्कृत भाषा में प्रस्तुत विषय को विवेचित किया गया है। आचार्य श्री विद्यासागर जी जैसे स्थिति प्रज्ञ महर्षि द्वारा यह विषय प्रस्तुत करना पाठकों का सचमुच में सौभाग्य और विशेष पुण्य का उदय होगा।

चैतन्य शक्ति युक्त ज्ञान दर्शनमयी आत्मा प्रत्यक्ष प्राणी के तन में विद्यमान है उस आत्मा के अस्तित्व की अनुभूति जिस साधक को हो जाती है वह साधक अपनी आत्मा की स्थिति जानने में उत्सुक रहता है। बहुत कम ऐसा होता है जब कोई अपने ज्ञान के व्यापार को बाहर से समेटकर भीतर ला दें, क्योंकि ज्ञान का व्यापार अवधारणाओं के आधार पर बहिरगामी होता है। और वह अपने शरीर को ही चेतन समझने लगता है। यह समझ मोह से भरी हुई जब अनुभूति होती है तब वह छटपटाकर अपने अंतर की शक्तियों का शोध करना प्रारंभ कर देता है। अंतर की शक्तियों की अब पूर्ण आस्था स्थिर हो जाती है और उन अंतर की शक्तियों में ज्ञान दर्शन का व्यापार स्थिर हो जाता है उस समय जो संवेदना होती है वह संवदेना अद्वितीय आनंदमय होती है। उस आनंद को पाने की ललक जिस साधक को लग जाती है वह साधक बार-बार अंतरयात्रा के लिये प्रयत्नशील हो जाता है और एक समय ऐसा आता है जब वह पूर्ण अपने आप में ध्यानस्थ होकर स्थितीप्रज्ञ बन जाता है। विश्व चक्षु बनकर परमात्म स्वरूप को प्राप्त कर लेता है। ऐसे ही अध्यात्म की यात्रा पूर्ण होते ही निरंजन स्वरूप को प्राप्त करके आत्मा लोक के अग्र भाग में स्थिर हो जाती है। और हम यह कह सकते हैं कि एक आत्मा पतित से पावन बनकर भगवान बन जाती है।

श्रमण शतक में बहिरात्मा- शरीर और आत्मा को एक मानने वाला अनेक दुख और पापों से युक्त होकर जिसका मन-शरीर स्त्री पुत्र मकान में ममकार और अहंकार की प्रवृत्ति से युक्त हो जाता है और जो इन्हीं जड़ संपदाओं में फूलता- भूलता रहता है ऐसा कुटिल कुबुद्धि अज्ञानी मानव आत्मा के प्रति रूचि प्रतीति को प्राप्त नहीं होता है वह बहिरात्मा होता है। इससे विपरीत जो मुनि स्वस्थ आत्मस्थ होता हुआ सुख से जीवित रहता है उसे मैं शिर से नमस्कार करता हूँ। श्रमण-शतक के इस बहिरात्मा स्वरूप को रेखांकित करने वाले इस छन्द में तीन प्रकार के ककार

का तीन प्रकार से अलग अर्थ में प्रयोग किया गया है- एक ककार का अर्थ आत्मा लिया गया है, इससे ककार का अर्थ सुख और तीसरे ककार का अर्थ शिर लिया है। इस प्रकार यमक अलंकार की एक अक्षरीय अनेकार्थ प्रयुक्ति निरले ही साहित्य में देखी जाती है अध्यात्म को सुरूचिपूर्ण प्रस्तुत करने का आचार्य श्री का अपना तरीका सामान्य लेखकों से कुछ अलग ही है। विद्वानों की दृष्टि में यह छन्द अनुवाद सहित मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

रूचिमेति कुधः के न परवस्तुदन्तचिन्तो युतोऽकेन।
स्वस्थो जीवति केन सह मुनिस्तं नमामि केन ।।

आत्मा जिसे न रुचता वह तो मुधा है,
मिथ्यात्व से रम रहा पर मैं वृथा है।
ज्ञानी निजयी घर में रहते सदा ये,
वन्दूँ उन्हें द्रुत मिले निज संपदाये ।।46।।

इसी विषय को आगे स्पष्ट करते हुये आचार्य श्री ने अपनी लेखनी को साधते हुये सीधा बहिरात्मा पर निशाना बनाया है। और अलीक शब्द की अनुप्राय और उसकी यमकत्व कागज की रेत पर लेखनी से उकेरा है। ऐसा लगता है जैसे किसी कलाकार ने समुद्र की रेत पर कोई कृति उकेर दी हो। इस छन्द का भाव पक्ष यह है कि जो मनुष्य नालीक मूर्ख है जो आत्मा शक को प्राप्त नहीं होता है अतः नही जानता है अतः हे जिनेन्द्र देव ! जिसने अलीक अर्थात् मिथ्या अर्थ को ही जान रखा है जो समान नालीक अर्थात् अहंकारी एवं अज्ञानी है ऐसा मनुष्य शिव श्री कल्याणकारी लक्ष्मी अथवा मोक्ष लक्ष्मी के लिये अलीक अप्रिय क्यों नहीं होगा- अर्थात् अवश्य ही होगा। इस छन्द में नालीक का अर्थ मूर्ख है अलीक का अर्थ मिथ्या है और अलीक का अर्थ अप्रिय भी प्रयुक्त किया गया है। इस संदर्भ में छन्द 54 इस तरह अवश्य दृष्टव्य है।

स ना नैति नालीकः स्वतेनेतोऽर्थोऽतो नालीकः।
यः समाननालीकः शिवश्रियेऽप्यस्तु नालीकः ।।

संसार-बीच बहिरातम वो कहाता, झूठा पदार्थ गहता, भव को बढ़ाता बेकार मान करता निज को भुलाता, लक्ष्मी उसे न वरती, अति कष्ट पाता ।।54।।

श्रमण -शतक में प्रतिपादित अन्तररात्मा- शरीर से पृथक चेतन शक्ति अमूर्तिक आत्मा का बोध प्राप्त हो जाना और शरीर के प्रति मद, गर्व अथवा ममत्व का भाव छोड़ देना ही अन्तरात्मा का स्वरूप है। जैसे कमल जल से अलग होता है वैसे ही जड़ शरीर से भिन्न आत्मा को मानने वाला अंतरात्मा पांच इन्द्रिय के विषयों से निवृत्त होकर अप्रमादी हो जाता है। संसार से उत्पन्न होकर भी जड़ पौद्गलिक संसार से अपने आप को जो पृथक अनुभव करने लगता है वह अंतररात्मा बनेगा। अंतरात्मा तीन प्रकार के होते हैं। जघन्य अंतरात्मा अविरत सम्यक्दृष्टि होता है तथा मध्यम अंतरात्मा के अंतर्गत देशव्रती आते हैं। उत्तम अंतरात्मा मुनि शुद्धोपयोगी साधक माने जाते हैं। श्रमण शतक में इस विषय का विवेचन संकेत रूप में उपलब्ध है। अंतरात्मा का

स्वरूप जानकर ही शक्ति अंतरात्मा बन सकता है और अपने ध्यान के माध्यम से संपूर्ण कषाय कालिमा दूर करके आत्म सत्ता की संबोधि को प्राप्त कर सकता है। और आगे आकर धर्म शुक्ल ध्यान के माध्यम से भी आत्म विकास को प्राप्त कर सकता है। इस संदर्भ में परम पूज्य आचार्य श्री के दो छन्द 33 और 35 यहाँ प्रासंगिक द्रष्टव्य है।

जलाशये जलोद्भव मिवात्मानं भिन्नं जलतोऽनुभव
प्रमादी माऽये मन भव्य ! विषयतो विरतो भव ।।33।।
भिन्नोऽहमङ्गान्मद- रूपिणोऽपि च भिन्नभित्यङ्गमदः ।
मुञ्चामीत्वेति मद-माङ्ग हे गत भवहेतुमद ।।34।।

जैसे कहे जलज जो जल से निराला
वैसे बना रहा सदा जड़ से खुशाला।
क्यों तू प्रमत्त बनता, बन भोग त्यागी,
रागी नहीं बन कभी, बन वीतरागी ।।33।।
हूँ देह से पृथक चेतन शक्ति वाला,
स्वामी ! सदैव मुझसे तन भी निराला।
यों बान, मान तनका मद छोड़ता हूँ,
मैं मात्र मोक्ष-पथ से मन जोड़ता हूँ ।।34।।

श्रमण शतक में परमात्मा का स्वरूप- श्रमण शतक ग्रंथ में परमात्मा का स्वरूप प्रथम काव्य मे ही स्पष्ट किया है, जब आत्मा सर्व कर्मों से मुक्त हो जाती है तो वह परमात्मा बन जाती है। परमात्मा दो रूप में जैन दर्शन में मान्य है।

1. अरिहंत या सकल परमात्मा
2. सिद्ध या निकल परमात्मा

सकल परमात्मा चार घातियाँ कर्मो के नाशक होते हैं निकल परमात्मा शरीर रहित अष्ट गुण युक्त तीन प्रकार के कर्म (द्रव्य कर्म, भावकर्म, नो कर्म) रहित होते हैं। जिनका ज्ञान ही शरीर होता है ऐसे परमात्मा के संबंध में परम पूज्य आचार्य श्री ने एक छोटा सा संकेत दिया है चूंकि मुख्यता ग्रंथ में श्रमण के होने से परमात्मा का संकेत ही पर्याप्त माना है वह संकेत इस प्रकार है।

श्री वर्धमान ! माऽय आकलय नत-सुराप्तमानमाय।
विधीश्चामानमाय मचिरेण कलयामानमाय ।।

योगी करें स्तवन भाव भरे स्वरों से
जो हैं सुसंस्तुत नरों, असुरों, सुरों से।
वे वर्धमान गतमान मुझे बचावें,
काटें कुकर्म मम मोक्ष विभो ! दिलानें ।।1।।

इस तरह परमपूज्य आचार्य श्री ने अपने अध्यात्म ग्रंथ श्रमण-शतक में आत्मत्रय की विशद विवेचना की है जिसका आध्यात्मिक रसिक पूर्ण आनंद ले सकते हैं।

जलन का घरेलू इलाज

पानी- जलने पर जले हुये स्थान को तुरंत ठंडे पानी में डूबो देना चाहिये और उसे इतनी देर तक डुबोये रखना चाहिये जब तक जलन शांत न हो जाये। यदि शारीरिक गर्मी से पानी गरम हो जाये और उसके कारण रोगी को पुनः जलन मालूम देने लगे तो उस गरम पानी को ठंडे पानी से बदल देना चाहिये।

जले हुये अंग में जितनी देर जलन रहे तब-तक उसे ठंडे पानी में रखना चाहिये। जलन अनुभव खतम होने पर पानी से बाहर निकाल लेना चाहिये। जलने वाले को इस प्रयोग से शीघ्र आराम मिलता है। जो शरीर पर जलने का निशान भी नहीं गिरता जो अंग पानी में भिगोया नहीं जा सकता उस पर ठंडे पानी में भिगी पट्टिया रखना चाहिये।

उपाय- हरड-हरड को जलाकर बारीक पीसकर वैसलीन में मिलाकर जले हुये पर लगाये, जलन कम होगी। जलन जल्दी ठीक होगी।

आम-आम के पत्तों को जलाकर इसकी भस्म को जले हुये पर बुरकाये लाभ होगा।

सरसों का तेल- जले हुये अंग पर सरसों का तेल लगाने से छाला नही पड़ता।

चाय- किसी भी तरह का अंग जल गया हो, झुलस गया हो तो चाय के उबलते हुये पानी का ठंडा करके उसमें साफ कपडा भिगोकर जले अंग पर रखे। इससे फफोले नहीं होगे। जला हुआ ठीक होगा, जलन दर्द में भी आराम मिलेगा।

अकालमरण और मीमांसा

❋ पं. राजेन्द्र कुमार (सुमन), सागर ❋

क्या अकालमरण आगम सम्मत है ?

भुज्यमान आयु (जो आयु वर्तमान में भोग रहे हैं) जितनी थी, उससे पहले मरण हो जाना अकालमरण है।

अकाल मरण किन-किन कारणों से होता है ?

आचार्य श्री कुन्द कुन्द स्वामी ने भावपाहुड, गाथा 25 में अकाल मरण के निम्न कारण कहे है।

विसवेयण रत्तक्खय भय सत्थगहण संकिलेसाणं ।
आह्यरूस्सासाणं णिरोहणा खिजए आउ ।।

अर्थ- विष खाने वेदना, रक्तक्षय, शास्त्र की चोट, संक्लेश तथा आहार एवं श्वासोच्छवास के निरोध से आयु क्षीण हो जाती है। उसे अकाल मरण या कदलीघात मरण कहते हैं ।

अकालमरण क्या चारों गतियों में होता है ?

नहीं ! देव, नारकी एवं भोगभूमि के मनुष्य-तिर्यञ्चों का अकाल मरण नहीं होता है। मात्र कर्मभूमि के मनुष्यों एवं तिर्यञ्चों का होता है।

क्या सभी मनुष्यों एवं तिर्यञ्चों का अकामरण होता है ?

नहीं ! जिस जीव ने आगामी आयु का बंध (बद्वायुष्क) कर लिया है, उसका अकाल मरण नहीं होता एवं चरमोत्तम देह वालों का भी नहीं होता, किन्तु चरम देह वालों का अकाल मरण हो सकता है, जैस पाण्डव आदि। उत्तम देह वालों का भी अकाल मरण हो सकता है, जैसे पाण्डव आदि। उत्तम देह वालों का भी अकाल मरण हो सकता है, जैसे-सुभौम चक्रवर्ती, कृष्ण, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का हुआ था। जो चरम देह एवं उत्तम देह वाले भी हैं, ऐचे चरमोत्तम देहधारी मात्र तीर्थंकर को छोड़कर सभी का अकालमरण संभव है। (त.वृ. 2/53/110) किंतु आचार्य अकलंकदेव ने राजवार्तिक ग्रंथ (त.वृ2/53/6-9) में चरम शब्द उत्तम का विशेषण लिया है। अतः चरमदेह वालों की अकाल मृत्यु नहीं होती है।

उदाहरण द्वारा बताते हैं कि अकालमरण कैसे होता है-

एक मिट्टी का घड़ा है उसमें पानी भरा हुआ है। उस घड़े में एक छिद्र है, जिसमें से एक-एक बूंद पानी गिर रहा है, वह घड़ा मान लीजिये 24 घंटे में खाली होता है परंतु उस घड़े को किसी ने पत्थर मार दिया तो पूरा पानी एक साथ बाहर आ गया। उसी प्रकार आयु कर्म के निषेक (एक समय में जितने कर्म परमाणु उदय में आते हैं) उनकी समूह प्रतिसमय खिर (निकल) रहे हैं। इसी प्रकार किसी ने शरीर का घात कर दिया तो एक साथ निषेक खिर जाते हैं। यही अकाल मरण है।

अब भुज्यमान आयु किसे कहते हैं ? एवं क्या हम भुज्यमान आयु का अपकर्षण उत्कर्षण कर सकते हैं।

जो आयु वर्तमान में भोग रहे वह भुज्यमान आयु है। भुज्यमान आयु का उत्कर्षण तो नहीं हो सकता है किन्तु अपकर्षण हो सकता है।

क्या बध्यमान आयु का अपकर्षण-उत्कर्षण होता है ?

बध्यमान आयु का उत्कर्षण एवं अपकर्षण भी होता है ! उत्कर्षण तो अपकर्ष काल में ही होता है किन्तु अपकर्षण कभी भी हो सकता है। जैसे-रेत से भरा एक ट्रक जा रहा है उसमें से थोड़ी-थोड़ी रेत गिर रही है, अर्थात् अपकर्षण हो रहा है, किन्तु उत्कर्षण करना है अर्थात् उस ट्रक में और रेत डालना है, तो ट्रक को खड़ा करना पड़ेगा तब उनमें और रेत डाल सकते हैं अर्थात् उत्कर्ष काल में ही होता है एवं अपकर्षण कभी हो सकता है।

आठ अपकर्ष कालों में बंधी आयु का समीकरण क्या है ?

पहले अपकर्ष काल में 100 वर्ष की आयु का बंध किया, दूसरे अपकर्ष काल में 120 वर्ष की आयु का बंध किया तो मुख्यता 120 वर्ष की रहेगी। इसी प्रकार प्रथम अपकर्ष काल में 100 वर्ष की आयु का बंध किया, दूसरे अपकर्ष काल में 80 वर्ष की आयु का बंध किया तो मुख्यता 100 वर्ष की रहेगी (गो.क.जी 643)

आयु कर्म की आबाधा कितनी है ?

आयु कर्म की उत्कृष्ट आबाधा एक पूर्व कोटि का त्रिभाग है एवं जघन्य अबाधा असंक्षेपाद्धा काल प्रमाण (आंवली का संख्यातवां भाग) होती है। (गोक, 917)

अबाधा किसे कहते है ?

कर्म बंध होने के बाद जब तक वह उदय में नही आता है तब तक उसे आबाधा काल कहते हैं। जैसे खीर बनकर तैयार हो गयी किन्तु तुरन्त (उसी समय) नहीं खा सकते हैं, जब थोड़ी ठंडी हो जाती है तब खाते हैं। जो ठंडी होने का समय है उसे आबाधाकाल कहते हैं ।

क्या संक्लेश परिणामों से अकालमरण होता है ?

हाँ ! अधिक तनाव, अत्यधिक परिश्रम एवं पारिवारिक कलह से बढ़ता हुआ संक्लेश भी अकालमरण का कारण बनता है।

बध्यायुष्क किसे कहते हैं ? एवं क्या बध्यायुष्क सम्यकदर्शन प्राप्त कर सकता है ?

जिसने आगामी आयु का बंध कर लिया, वह बध्यायुष्क कहलाता है। चारों आयु में से किसी भी आयुबंध के बाद जीव सम्यकदर्शन प्राप्त कर सकता हैं। (गो.क. 334)

क्या बध्यायुष्क संयम प्राप्त कर सकता है ?

किसी भी आयु का बंध नहीं किया है तो जीव देशसंयम और सकल संयम प्राप्त कर सकता है। देवायु का बंध करने के बाद भी जीव देशसंयम और सकल संयम प्राप्त कर सकता है, किंतु नरकायु, तिर्यञ्चायु एवं मनुष्यायु का बंध कर लिया है तो जीव देशसंयम या सकल संयम प्राप्त नहीं कर सकता है। (गो.क. 334)

मरण के बाद जीव को पुनः नवीन शरीर धारण करने में कितना समय लगता है ?

अधिक से अधिक तीन समय। पश्चात् चौथे समय में शरीर की रचना प्रारंभ कर ही लेता है।

मरण के बाद जीव का गमन श्रेणी के अनुसार होता है। लोक के मध्यम से लेकर ऊपर नीचे और तिरछे क्रम में स्थित आकाश प्रदेशों की पंक्ति को श्रेणी कहते हैं। जैसे ग्राफ पेपर या वस्त्र में ताने-वाने होते हैं।

जीव मरण के बाद सीधा ही गमन करता है या मुड़ता है ?

दोनों प्रकार से। जिसमें जीव को मुड़ना पड़ता है, उसे विग्रहगति कहते हैं या विग्रह अर्थात् शरीर के लिये जो गति होती है, उसे विग्रहगति कहते हैं। जिसमें जीव को मुड़ना नहीं पड़ता है उसे ऋतुगति कहते हैं। (स.सि. 2/25/310)

विग्रह गतियाँ कितने प्रकार हैं ?

विग्रहगतियाँ चार प्रकार की हैं-

1. **इषुगति-** धनु के छुटे गये बाण के समान मोड़े से रहित गति को इषुगति कहते हैं। इसमें एक समय लगता है।

2. **पाणिमुक्ता गति-** जैसे- हाथ से छोड़े गये द्रव्य की एक मोड़े वाली गति को पाणिमुक्ता गति कहते हैं- इसमें दो समय लगते हैं।

3. **लांगलिका गति-** जैसे- हल में दो घड़े होते है। उसी प्रकार दो मोड़े वाली गति को लांगलिका गति कहते हैं। इसमें तीन समय लगते हैं।

4. **गोमूत्रिका गति**- जैसे- गाय चलते समय मूत्र करती है, तब अनेक अर्थात् तीन मोड़े हो जाते हैं, उसी प्रकार तीन मोड़े पाने वाली गति को गोमूत्रिका गति कहते हैं। इसमें चार समय लगते हैं।

विग्रह और अविग्रह गति के स्वामी कौन हैं ?

मुक्त जीव की गति विग्रह रहित ही होती है और संसारी जीवों की गति विग्रह सहित व विग्रह सहित दोनों प्रकार की होती है।

भजन

हारे का सहारा

हारे का एक सहारा, प्रभु राम नाम है प्यारा
सब जग का तारण हारा
हारे का एक सहारा प्रभु राम नाम है प्यारा
दशरथ का राज दुलारा, कौशल्या सुत सुखकारा
प्रभु मनहर जग में न्यारा
सर्वज्ञ वैरागी प्रभु कर हितकारी प्राणी दुखहर
चहुँगति दुख मेंटन हारा
जो राम शरण में आवे भव दुख से मुक्ति पावे
जय राम नाम हितकारा

जैन धर्म पर्यावरण और अहिंसा

✻ पं. सुरेश जैन मारौरा, इंदौर ✻

भारत की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक श्रमण संस्कृति है। इसके अंतर्गत न केवल स्वतंत्र दर्शन एवं धार्मिक चिंतन है अपितु एक सम्पूर्ण आचार पद्धति भी है।

जैन धर्म कदाचित् प्राचीनतम धर्म है जिसने पर्यावरण को इतनी गहराई से समझा और उसे धर्म और मानवता से जोड़ा।

पर्यावरण शब्द अंग्रेजी (Environment) का रूपान्तरण है। french word environer बना है। जिसका अर्थ To surround अर्थात् आसपास होना। अतः मानव के साथ आसपास रहने वाले सजीव और सभी निर्जीव घटक पर्यावरण के अंतर्गत हैं ।

पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ **परि+आवरण**। अर्थात् हमारे चारों ओर का वातावरण जो प्रकृति से ढँका हुआ आवरण पर्यावरण कहलाता।

जैनाचार्य पर्यावरण की समस्या से भली भांति परिचित थे और प्रदूषण की संभावनायें उनके सामने थी, इसलिये सबसे पहली व्यवस्था उन्होंने व्यक्ति यत्नपूर्वक चले, यत्नपूर्वक ठहरे, यत्नपूर्वक बैठे, यत्नपूर्वक सोयें, यत्नपूर्वक भोजन करें और यत्नपूर्वक बोले तो वह संयतजीवन जीना है और संयत जीवन से वह पाप कर्म से नहीं बंधता है।

जयं चरेजयं चिट्ठे जयमासे जयं सये।
जयं भूसेज्ज भासेज्ज एव पाप ण वज्जाई ।।

वस्तुतः सम्पूर्ण प्रकृति और मनुष्य के उसके साथ संबंधों में मधुरता नाम-पर्यावरण संरक्षण हैं। समता, अहिंसा, संतोष, अपरिग्रहवृत्ति आहार महत्व जीवन मूल्यों के द्वारा ही स्थाई रूप से पर्यावरण को शुद्ध रखा जा सकता है।

हजारों वर्ष पहले पर्यावरण संतुलित था, अब औद्योगिक क्रांति/भौतिक वातावरण ने इस पर्यावरण को प्रदूषित किया है। वातावरण को अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तित करना, उसे नया रूप देना, उसे सजाना-संवारना अच्छी बात है। किन्तु प्रकृति के मूलभूत नियमों का उल्लंघन करके पर्यावरण को प्रदूषित किया है। प्रदूषण कई प्रकार का है, जो दिनों दिन फैलता जा रहा है।

1. स्थल/भूमि प्रदूषण, 2 जल प्रदूषण, 3 अग्नि/धुआं प्रदूषण, 4 रेडियोधर्मी प्रदूषण 5. वायुप्रदूषण 6. वन प्रदूषण, 7 ध्वनि प्रदूषण।

इन प्रदूषण को हम अपने जैन धर्म के सिद्धांतों को अपनाकर नियंत्रित कर सकते हैं। मैं यहां पर जैन धर्म के मौलिक सिद्धांतों को संकलित करता हूँ। जिसका अनुपालन पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में समर्थ है। वास्तविकता तो यह है कि जैनाचार का पालन किया जाये तो प्रदूषण उत्पन्न नहीं हो सकता है।

जैन दर्शन में पर्यावरण संरक्षण के 2 मुख्य कारण बतायें हैं-

1. षट्काय जीवों की रक्षा और 2. कषाय मनोवृत्ति से अपने आपको बचाना।

दूसरी शताब्दी के आचार्य उमास्वामी ने तत्त्वार्थ सूत्र में लिखा है-

संसारिणस्त्रसस्थावराः। 2/12

पृथिव्यप्तेजो वायु वनस्पतयः स्थावराः। 2/13

अर्थात् संसारी जीव दो प्रकार के होते हैं, त्रस एवं स्थावर। पृथ्वी कायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पति कायिक से स्थावर हैं। इसमें जीवन स्वीकार करने के कार ण अहिंसा प्रधान जैन धर्म के अनुयायी के लिये इनकी रक्षा करना आवश्यक है, क्योंकि प्रकृति के अवयव पृथ्वी तल, अग्नि, एवं वनस्पति में निहित जीवन एवं उन पर आश्रित जीवधारियों की हिंसा होने पर पर्यावरण प्रदूषित हो जायेगा।

पृथ्वीकायिक जीवों की विराधना से स्थल/ भूमि प्रदूषण- जिनका शरीर ही पृथ्वी है तथा जिनका पृथ्वी नाम कर्म का उदय है, वे जीव पृथ्वी कायिक कहलाते हैं। उदा. जैसे मिट्टी, बालू, शर्करा, उपल, शिला, लवण धातुयें (सोना, चांदी, पीतल आदि) मेरू, चंदन, स्फटिक मणि आदि भी जब तक वे अपने मूल रूप में पृथ्वी से जुड़े रहें वे पृथ्वी कायिक जीव हैं।

पृथ्वी चार प्रकार की होती है- 1. पृथ्वी- जो अचेतन है, प्राकृतिक परिणमों से बनी है। कठिन गुणवाली हैं, वह पृथ्वी कहलाती है- जैसे सामान्य पृथ्वी।

2. पृथ्वीकाय- काय का अर्थ है शरीर। अतः पृथ्वीकायिक जीव द्वारा जो शरीर छोड़ दिया जाता है, वह पृथ्वीकाय कहलाता है। उदा. मरे हुये मनुष्य आदि का शरीर।

3. पृथ्वीकायिक- जिस जीव में पृथ्वी रूप काय विद्यमान है, उसे पृथ्वीकायिक कहते हैं। जैसे- खानों में स्थित सोना-चाँदी आदि धातुयें, खानों में स्थित पत्थर, नमक, कंकण, कोयला, गंधक आदि।

4. पृथ्वी जीव- जिस जीव ने जब तक पृथ्वी को काय रूप ग्रहण नहीं किया है, तब तक वह पृथ्वी जीव कहलाता है।

पृथ्वीकायिक जीवों की 7 लाख जाति तथा 22 लाख कुल कोटि है।

श्री एच.टी. वर्सटामेन ने सिद्ध किया है- जिस प्रकार बालक बढ़ता है, उसी प्रकार पर्वत (अर्थात् पृथ्वीकाायिक) भी बढ़ते हैं।

श्री वेल्मेन के कथनानुसार आल्पस् पर्वतमाला का पश्चिमी भाग आज भी बढ़ रहा है, सेलिवीस के दक्षिण पूर्व भाग भोलूकास के कुछ भू-भाग ओर इंडोनेशिया की भूमि की ऊंचाई बढ़ रही है। द्वीप की भूमि का ऊंचा बढ़ना और पर्वतों की वृद्धि पृथ्वीकायिकों की सजीवता का प्रमाण है।

आज भू गर्भीय तत्त्वों की प्राप्ति के लिये पृथ्वी के निरंतर दोहन से भूंकपों की विभीषिका मानव को प्रकंपित कर रही है। स्थान-स्थान पर भूकंप-बाढ़, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर रहे हैं। ज्वालामुखी फटने की संभावनायें प्रकट हो रही हैं। **इन प्राकृतिक विषदओं का जन्म पृथ्वीकायिक जीवों की विराधना का ही फल है।** आज की

बढ़ती हुई हिंसा, आतंकवाद, असीमित-भोग विलास, सुविधावादी मनोवृत्ति, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति ने भूमि प्रदूषण का विकराल रूप ले लिया है।

एक परिवार के लिये रहने को 4 कमरों का घर पर्याप्त है, परन्तु बड़े-बड़े आलीशान महल बनवाना, इन मकानों को बनवाने हेतु वनों को साफ कर देना, पहाड़ों को चीर कर मैदान बना देना। नल-कनेक्शन, बिजली कनेक्शन आदि के लिये तथा भू-गर्भीय तत्वों की प्राप्ति के लिये भू-स्खलन, भू-खनन आदि करना पृथ्वी कायिक जीवों की विराधना के अंतर्गत है।

कीटनाशक दवाइयों के छिड़काव से निरंतर पृथ्वीकायिकों की विराधना हो रही है, जिससे भूमि प्रदूषण बढ़ा रहा है और भूमि की उर्वरा शक्ति समाप्त होकर उत्पादन क्षमता कम होती जा रही है।

वैदिक संस्कृति में धरती को माता कहा जाता है। पुराणों में पृथ्वी को क्षमा की मूर्ति कहा जाता है। भारतीय संस्कृति मे भी भूमि पूजन की परम्परा निःसंदेह भूमि को सर्वोच्चता प्रदान करने के साथ-साथ जीवन दायिनी वसुधा को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने का प्रेरणा देती है।

अतः पृथ्वीकायिक जैसा एकेन्द्रिय जीव भी सुख-दुख प्रिय-अप्रिय आदि वृत्तियों का संवेदन करता हैं। इनकी चेतना अव्यक्त होती है। इनके अस्तित्व को स्वीकार करने वाली भूमि का संरक्षण तथा पर्यावरण की सुरक्षा कर सकता है। **अति सर्वत्र वर्जयते** सूक्ति के अनुसार पृथ्वी कायिक की रक्षा करके पर्यावरण संरक्षण के लिये प्रयास करना चाहिये।

2. जलकायिक जीवों की विराधना से जल प्रदूषण- जल एक प्राकृतिक स्रोत है। पृथ्वी का 2/3 भाग जले होते हुये भी मानव उपभोग योगय जल की मात्रा बहुत कम है, अधिकांश जल समुद्री जल है। उपभोग योग्य जल के मुख्य स्रोत हैं।- धारायें, झील, नदियाँ, जलाशय, झरने कुएं आदि। वस्तुतः जल ही जीवन है, इसलिये भी संरक्षणीय है, और जल स्वयं भी एक इन्द्रिय जीव है, इसलिये भी इसकी रक्षा करनी चाहिये।

जैन दर्शनानुसार- जिनका शरीर ही जल है, तथा जिनके जल नाम कर्म का उदय है, वे जीव जलकायिक कहलाते हैं। जैसे- ओस, हिम, कुहरा, छोटी बूंदे, शुद्ध जल, वन जल आदि। जैन दर्शन में जल को भागों में विभक्त किया है- **1 जल-** जो अचेतन है, जो जल आलोडित किया हुआ है उसे एवं कीचड़ रहित जल को जल कहते हैं।

2. जलकाय- जिस जल में से जीव नष्ट हो चुके हैं, वह जलकाय कहलाता है जैसे- गर्म जल आदि।

3. जलकायिक- जिस जीव ने जल को शरीर रूप से ग्रहण किया है, वह जलकायिक कहलाता है। जैसे- प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त जल।

4. जल जीव- विग्रह गति में स्थित जीव जो एक दो अथवा तीन समयों से जल को शरीर रूप में ग्रहण करेगा वह जल जीव है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक **श्री कैप्टेन स्केपेसिली** ने यंत्र द्वारा सिद्ध यिा है कि एक छोटे से जल कण में 36450 जीव होते हैं।

जैन दर्शन में जलकायिक जीवों की जाति 7 लाख एवं 7 लाख कुल कोटी कहे हैं। जल को

प्रदूषण से मुक्त रखने एवं उसके सीमित उपयोग के लिये जैन ग्रंथों में अनेक निर्देश उपलब्ध हैं। जैन परम्परा में आज भी लोकोक्ति है कि पानी का उपयोग घी से अधिक सावधानी से करना चाहिये।

पूर्व में घी के गिरने पर उतनी प्रताड़ना नहीं मिलती थी, जितनी एक गिलास पानी के गिरने पर मिलती थी। ये उपदेश आज की उपभोक्ता संस्कृति को हास्यापद लगती होंगी, किन्तु आज जो पीने के पानी का संकट है, उसे देखते हुये ये नियम अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है।

वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति पहले से 50 गुना अधिक जल उपयोग करता है। पहले के लोग पीने के लिये कुएं से पानी स्वयं भरकर लाते, ये जंगल में मल-मूल विसर्जन एवं नदी के किनारे स्नान करते थे उनके जल का वास्तविक व्यय बहुत कम था और वह उपयोग किया गया जल वनस्पति या मिट्टी में ही मिल जाता था, परन्तु आज हजारों लीटर अनछना जल का अपव्यय करने में भी संकोच नहीं होता है।

जैन परम्परा में प्राचीन काल से यह अवधारणा रही है नदी, तालाब कुयें आदि में प्रवेश करके स्नान, दातौन तथा मलमूत्र आदि का विसर्जन नहीं करना चाहिये, क्योंकि जल में शारीरिक मलों के उत्सर्ग के परिणाम स्वरूप जो विजातीय तत्त्व उसमें मिल जाते हैं, उनसे बहुतायत से जलीय जीवों को हिंसा होती है और जल भी प्रदूशित होता है। आलोचना पाठ में कहा है-

जल-मल मोरिन गिरवाएँ, कृमि कुल बहु घात कराए।
नदियन बिचचीर धुवाए, कोसन के जीव मराए॥22॥

कृषि, कल-कारखानों, मशीनों, कत्लखानों में तथा साफ सफाई में आज पानी का अपव्यय अधिक हो रहा है। भूमिगत जल के अंधाधुंध दोहन के कारण पानी का स्तर कम होता जा रहा है। तथा इनसे निकले हुये अपशिष्ट पदार्थों को नदियाँआदि प्राकृतिक स्रोतों में डाल देने से प्राकृतिक स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं।

हमारे साधु वर्ग एवं व्रती वर्ग तो सचित्त जल का उपयोग नहीं करते हैं, वे उबला जल ही ग्रहण करते हैं। गृहस्थ श्रावकों भी जल उपयोग से पूर्व छानकर एवं सीमित मात्रा में ही उपयोग करना चाहिये तथा जीवानी को यथास्थान पहुंचाकर जीवों की विराधना से बचना चाहिये। अनछना जल एवं अनावश्यक जल का प्रवाह भी अत्यंत जलकायिक जीवों की हिंसा है। इससे बचने का उपाय जैन दर्शन की जल शुद्धि एवं मितव्ययता ही है। अतः जैनों की इस कार्यशैली से पता चलता है कि पर्यावरण संरक्षण, जल प्रदूषण का निराकरण एवं अहिंसा का पालन जैन परम्परा में ही किया जाता है।

3. अग्निकायिक जीवों की विराधना से प्रदूषण-आज औद्योगिकरण, यांत्रिकीकरण तथा अत्यधिक वाहनों के निरंतर उपयोग से डीजल, पेट्रोल आदि के माध्यम से तेजकाय जीवों की हिंसा होती है। पृथ्वी, तृण, पत्र, गोबर, कूड़ा-कचरा आदि को जलाने से असंख्यात जीवों की विराधना होती है, तथा वातावरण में विद्यमान कीट-पतंगे आदि सूक्ष्म जीव अग्नि का संघात पाकर, अग्नि की उष्णता से मर जाते हैं। इससे निकलने वाले धूयें से सारा वातावरण प्रदूषित हो जाता है। अग्नि स्वयं भी एक इन्द्रिय जीव है।

आलोचना पाठ में कहा है-

हाहा परमाद बसाई, बिन देखे अग्नि जलाई।
तामध्य जीव जे आए, ते हू परलोक सिधाए॥

अग्नि स्वयं भी एक इंद्रिय जीव है। जैन दर्शनानुसार- जिस जीव का शरीर अग्नि है तथा जिनके अग्नि नाम कर्म का उदय है, वे जीव अग्निकाय कहलाते हैं।

जैन दर्शन में अग्नि को 4 भागों में विभक्त किया गया है-

1. अग्नि- जो प्रचुर भस्म में आच्छादित अग्नि है, जिसमें थोड़ी उष्णता है, वह अग्नि है।

2. अग्निकाय- जिस भस्म आदि से अथवा जिस अग्निकायिक जीव को अग्नि ने छोड़ दिया है, वह अग्निकाय है।

3. अग्निकायिक- जिस जीव ने अग्नि को शरीर रूप में ग्रहण किया है, वह अग्नि कायिक कहलाता है। जैसे ज्वालामुखी, पर्वतों में प्राकृतिक रूप उत्पन्न होने वाली अग्नि, अंगारा, ज्वाला, लौ, अग्नि, कंडे की आग, बिजली आदि।

4. अग्नि जीव- विग्रह गति में स्थिति जीव जो एक, दो, अथवा तीन समयों में अग्नि को शरीर रूप में ग्रहण करेगा, वह अग्नि जीव है। अग्निकाय जीवों की जाति 7 लाख है।

जर्मनी जूलॉजिस्ट अर्नेस्ट टेकेल ने Ridal of life में अग्निकाय की सत्ता मानी है।

आज प्रत्येक उपकरण बिजली से चल रहा है- जैसे - टी.वी. कूलर , फ्रिज, पंखा, ए.सी, मोबाईल, कम्प्यूटर, लेपटॉप आदि। इन बिजली के उपकरणों के उपयोग से अत्यधिक अग्निकायिक जीवों की विराधना हो रही है। साथ-साथ त्रस जीवों की विराधना भी होती है। पर्यावरण के असंतुलित होने का एक प्रमुख कारण नाभिकीय विस्फोट भी है।

दीपावली के अवसर पर पटाखों की चकाचौंध और गंधक युक्त वायु वातावरण को भर देती है। इससे कितने की त्रसकायिक एवं अग्निकायिक जीवों की विराधना के साथ पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है, और राष्ट्रीय ऊर्जा शक्ति का भी दुरूपयोग होता है। अतः पर्यावरण संरक्षण हेतु आतिशबाजी नहीं छोड़ना चाहिये। इसलिये दिगम्बर साधु बिजली का उपयोग तथा बिजली से चलने वाले उपकरणों, पंखा, कूलर , ए.सी., लेपटॉप, मोबाईल का उपयोग नहीं करते हैं।

इस प्रकार हम औद्योगिकरण/यांत्रिकीकरण/नाभिकीय विस्फोट आतिशबाजी तथा बिजली के उपकरणों का उपयोग आवश्यकतानुसार सीमित मात्रा में करें तो हम अग्निकार्यिक जीवों की विराधना तथा पर्यावरण को संरक्षित करने में अहम् भूमिका निभाते हैं। इसलिये जैनागम में श्रावक को उन व्यवसायों को करने का निषेध किया है, जिनमें अत्यधिक अग्निकार्यिकों को विराधना होती है। जैसे-कारखाने लगाना, ईट के भट्टे लगाना, अस्त्र- शस्त्रों तथा परमाणु बम, पटाखें आदि बनाना।

4. वायुकायिक जीवों की विराधना से वायु प्रदूषण- वायुमंडल हमारे पर्यावरण का अभिन्न अंग है। एक दिन में एक व्यक्ति लगभग 20,000 बार सांस लेता है और इस दौरान 35 पौंड वायु का प्रयोग करता है। यदि वायु ही शुद्ध नहीं रही तो वह निश्चित रूप से हमारे स्वास्थ्य के लिये खतरनाक सिद्ध हो सकती है। वाहनों और उद्योगों से निकलने वाली विषैली गैसों ने इस

वायु को अत्यंत प्रदूषित कर दिया है।

जैनागम में वायु को भी एक इन्द्रिय कहा है। वायु ही जिनका शरीर है तथा जिनके वायु नाम कर्म का उदय है, वे जीव वायुकायिक कहलाते हैं। जैसे आंधी, झंझावात आदि। जैनाचार्यों ने वायु को भी 4 भागों में विभक्त किया है।

1. **वायु**- जो अचेतन है, प्राकृतिक परिणमन से उत्पन्न हुई है। धूलि का समुदाय जिसमें हैं ऐसी भ्रमण करने वाली सामान्य वायु, वायु कहलाती है।

2. **वायुकाय**- वायुकायिक द्वारा जो शरीर छोड़ दिया जाता है, वह वायुकाय कहलाता है।

3. **वायुकायिक**- जिस जीव में वायु रूप काय विद्यमान है, उसे वायुकायिक कहते हैं। जैसे आंधी, झंझावात आदि।

4. **वायु जीव**- विग्रह गति में स्थित जीव जो एक, दो या तीन समयों में वायु को शरीर में ग्रहण करेगा, वह वायु जीव है।

जैन दर्शन में वायु कायिक जीवों की जाति 7 लाख एवं 7 लाख कोटि कुल कहे हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि सुई के अग्रभाग के बराबर हवा में लाखों जीव होते हैं, इन जीवों को थैंक्स कहते हैं। अतः वैज्ञानिकों ने भी वायुकायिक जीवों की सजीवता का प्रमाण प्रस्तुत कर दिया है।

औद्योगिकीकरण से गंधक तथा निरंतर अत्यधिक चलने वाले वाहनों से लैंड आक्साइड के हवा में मिलने से वर्षा के पानी में मिल जाते हैं जिसमें अम्लीय गुण धर्म वाली वर्षा जमीन पर होती है और यह अम्लीय पानी की वर्षा जमीन की उर्वरा शक्ति तथा उत्पादन क्षमता को नष्ट कर देती है।

आज श्वांस लेने के लिये शुद्ध प्राण वायु ऑक्सीजन भी नहीं मिल रही है। पर्यावरण संबंधी एक संख्या यूनेप के एक अध्ययनानुसार वायुमंडल के प्रदूषण से ओजोन परत पर आघात आने का खतरा बढ़ चुका है, उसय पर विषैली गैसों से गंभीर चोट पहुंच रही है। यह परत पृथ्वी पर सूर्य के प्रकाश से पराबैंगनी किरणों को रोकने का कार्य करती है। इन किरणों के पृथ्वी पर पहुंचने पर कैंसर जैसे अनेक रोगों की संभावनायें बढ़ जाती हैं। आज के दूषित वातावरण में 16% कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा बढ़ गई है। यदि इसे न रोका गया तो भविष्य में इससे बहुत बड़ा खतरा पैदा होने की संभावनायें हैं।

सभी श्रावकाचारों में गृहस्थों के लिये स्पष्टतः उन व्यवसायों का निषेध किया है, जिनमें अधिक मात्रा में धूम्र उत्पन्न होकर वातावरण प्रदूषित होता है। तथा अत्यधिक वायु कायिकों की विराधना होती है ।

जैन साधु इन वायुकायिक जीवों की विराधना से बचने के लिये पंखा, कूलर, ए.सी आदि का उपयोग नहीं करते हैं पद विहार करते हैं। अतः हमें वायुकायिक जीवों की रक्षा करके वायु प्रदूषण से बचने का प्रयास करना चाहिये तथा पर्यावरण को संतुलित रखने का प्रयास करना चाहिये।

5. वनस्पतिकायिक जीवों की विराधना से वन प्रदूषण- प्रकृति की दृष्टि से एक पौधे का जीवन भी उतना ही मूल्यवान है, जितना पेड़ पौधे पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करने में जितने सहायक है, उतना मनुष्य नहीं, वह तो पर्यावरण को प्रदूषित ही करता है।

जैन दर्शन में वनस्पति के शरीर की तुलना मानव शरीर से करते हुये कहा है कि वनस्पति की हिंसा भी प्राणी की हिंसा के समान है। जैनागम में वनस्पति को भी 4 भागों में बांटा गया है।

1. **वनस्पति**- जिसका आभ्यंतर भाग जीव युक्त है और बाह्य भाग जीव रहित है, ऐसे वृक्ष आदि वनस्पति है।

2. **वनस्पतिकाय**- छिन्न-भिन्न किये गये तृण आदि को वनस्पतिकाय कहते हैं।

3. **वनस्पति कायिक**- जीव सहित वनस्पति को वनस्पतिकायिक कहते हैं। जैसे पेड़-पौधे आदि।

4. **वनस्पति जीव**- आयु के अन्त में पूर्व शरीर को त्यागकर जो जीव वनस्पति कायिक में उत्पन्न होने के लिये विग्रह गति में जा रहा है, उसे वनस्पति जीव कहते हैं। जैनागम में वनस्पति कायिकों की जाति 10 लाख कही है।

इसलिये वनों में आग लगाना, वनों को काटना आदि गृहस्थ के लिये सबसे बड़ा पाप है। क्योंकि उससे न केवल वनस्पति की हिंसा होती है, अपितु अन्य वन्य जीवों की भी हिंसा होती है और पर्यावरण भी प्रदूषित होता है। अतः वन, वर्षा और पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने के लिये अनुपम साधन है।

पर्यावरणविदों के अनुसार वनस्पति के बिना जैविक प्रक्रिया असंभव है। जैविक संतुलन बनाने के लिये पौधों का संरक्षण बहुत आवश्यक है। मानव जीवन उसी पर आधारित है। प्राण वायु का स्रोत भी पौधे ही हैं।

आदिपुराण, पद्म-पुराण, भरत-बाहुबली, महाकाव्य, आचारांग जैसे अनेक ग्रंथों में वन संरक्षण की बात कही गयी है।

आज आधुनिक विज्ञान ने वनस्पति के बारे में जो उपलब्धियां पाई है, वे सब पूर्वाचार्यों ने बहुत पहले प्रस्तुत कर दी है। भारत के महान वैज्ञानिक-जगदीश चंद्र बसु ने यंत्र द्वारा वनस्पति पर प्रयोग करके सिद्ध किया कि उनमें संवेदनशीलता, सहानुभूति है। संगीत और प्रेम को भी वनस्पति स्वीकार करती है। जैसे शरीर-जन्मता है, बढ़ता है, वैसे ही वनस्पति जन्मती है, विकसित होती है, शरीर के विकास के लिये जिस प्रकार अन्न की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार वनस्पति को भी पानी, खाद, सूर्य के प्रकाशन के रूप में भोजन की आवश्यकता होती है। शरीर का कोई भी भाग शरीर से कट जाता है तो सूख जाता है, उसी प्रकार वनस्पति भी कटने पर सूख जाती है। डॉ. वसु का संशोधन यही बताता है कि गुण-भाव-पर्याय सब विधाओं से मनुष्य और वनस्पति में समानता है।

आज वैज्ञानिकों ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि वनस्पति में क्रोध, मान, माया, लोभ, ईर्ष्या, राग-द्वेष, आहार, भय, मैथुन, परिग्रह जैसी संज्ञाओं के संवेदन होते हैं। सबसे ज्यादा संवेदनशील वनस्पति होती है। हमारे मन में वनस्पति के प्रति प्रेम सहृदयता के भाव होने चाहिये तभी इनकी सुरक्षा संभव है। वृक्षों में भूमि, वायु और ध्वनि प्रदूषण को अवशोषित करने की सामर्थ्य है।

अतः वन प्रदूषण को रोकने के लिये वृक्षारोपण करना चाहिये, इसलिये पद्मपुराण में वृक्षारोपण को प्रतिष्ठा का विषय कहा है- **प्रतिष्ठा ते गमिप्यन्ति यैः वृक्षाः समारोपिताः।**

पर्यावरण संरक्षण करने हेतु जैनदर्शन में वनस्पतियों को तोड़ने, काटने का निषेध किया गया है तथा यथाशक्ति सीमित मात्रा में उपयोग करने का निर्देश है। अतः वृक्षों का संरक्षण एवं संवर्धन करना हमारा कर्त्तव्य है।

6. पर्यावरण एवं ध्वनि प्रदूषण- ध्वनि प्रदूषण का संबंध भी वायु प्रदूषण और वायुमंडल से हैं। आज जीवन के सुलभीकरण के लिये औद्योगिकरण एवं यांत्रिकीकरण बढ़ता जा रहा है। ध्वनि स्वास्थ्य का जबरदस्त शत्रु है। उद्योगों तथा वाहनों के कारण यह शत्रुता बढ़ती जा रही है।

आजकल उद्योग, कल-कारखाने, मोटर-वाहन, विमान, तेज संगीत, ध्वनि-विस्तारक यंत्र, लाउड-स्पीकर यंत्र ध्वनि प्रदूषण के कारण बन गये हैं । वैज्ञानिक मान्यतानुसार 60-70 डेसीबल ध्वनि सह्य होती है। इससे अधिक शोर माना जाता है। ऊर्जा के आंकलन में मोटर साइकिलों, डीजल गाड़ियों का शोर 90 डेसीबल है। छापाखाना एवं कल-कारखानों का शोर 100-200 डेसीबल, रॉक पॉप, डिस्को आदि संगीत का 180 डेसीबल, जेट विमानों 140-150 डेसीबल तथा रॉकेट का 180 डेसीबल शोर मापा गया है।

शरीर से आवाज की तरंगों में संपीडन होता है, वार्तालाप में बाधा होती है, मन विचलित हो जाता है तथा मांसपेशियों व कान में तनाव पैदा हो जाता है। इस ध्वनि विस्तार से मानसिक तनाव एवं अस्थिरता, कर्ण शक्ति की मन्दता एवं बहरापन तथा तज्जन्य पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर 5 स्थावर कायिकों की रक्षा करके पर्यावरण को विभिन्न प्रदूषणों से मुक्त करके पर्यावरण को संरक्षित किया जा सकता है।

सामाजिक, राजनैतिक और आध्यात्मिक प्रदूषण को दूर करने की दिशा में जैन धर्म ने जो योगदान दिया है, वह अपने आप में अनूठा है। इस दृष्टि से धर्म की परिभाषा में और पर्यावरण की सुरक्षा में जैन धर्म जितना खरा उतरता है उतना अन्य कोई धर्म दिखाई नहीं देता। जैन धर्म मानव धर्म मानवती की अधिकतम गहराई तक पहुंचकर प्राणी मात्र की रक्षा एवं सम्मान की प्रेरणा देता है। यही उसकी अहिंसा है, यही उसका कारूणिक रूप और यही पर्यावरण का आधार है। दानवता से प्रदूषण फैलता है अहिंसा, संयम, समता, करूणा, तथा मानवता जैनाचार के अंग है, पर्यावरण के रक्षक है।

जैनाचार में मूलभूत पहचान रूप 3 सिद्धांत- 1. प्रतिदिन देवदर्शन, 2. पानी छानकर पीना और 3. रात्रि भोजन का त्याग भी पर्यावरण संरक्षण के लिये अत्यंत उपयोगी है।

पानी छानकर पीना एवं उपयोग करने से पर्यावरण संरक्षण- पानी छानकर पीना एवं उपयोग में लाना जैनियों की प्रमुख पहचान है। पानी में स्वाभाविक रूप से सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति निरंतर होती रहती है।

आजकल कुछ लोग फिल्टर किये हुये पानी को छना पानी समझकर उसे कपड़े से छानने की

आवश्यकता नहीं समझते हैं। जबकि फिल्टर अथवा कीटनाशकों से पानी साफ तो किया जाता है, परन्तु पानी में रहने वाले जीवों को मारने/नष्ट करने से नहीं बचाया जा सकता है।

जैन दार्शनिकों के द्वारा बताया गया पानी छानने का मूल उद्देश्य जीवों की रक्षा करना है। पानी छानने में जीव रक्षा का भाव प्रमुख होने के कारण हमें जीवाणी को भी सावधानीपूर्वक यथास्थान पहुँचाने का आदेश दिया गया है। आज जो नल/बोरिंग से पानी छानते हुये पानी को जीव रहित करना ही उद्देश्य रह गया है।

विधिवत् छाना हुआ पानी 48 मिनिट तक पीने योग्य है, पश्चात् जीवोत्पत्ति संभव है। उबला हुआ पानी 24 घंटे सुरक्षित रहता है।

वाशिंगटन के वर्ल्ड वांच संस्थान के अनुसार साफ और सुरक्षित पानी पीने से अधिक समय तक जीते हैं। सर्वेक्षणानुसार भारत के केरल राज्य के निवासी साफ-स्वच्छ पानी पीने से सबसे अधिक समय तक जीते हैं ।

अतः पानी छानकर पीना न केवल वैज्ञानिक, स्वास्थ्य, विज्ञान और स्वच्छता, शास्त्र के अनुरूप हैं , अपितु पर्यावरण संरक्षण एवं समूचि सृष्टि के प्रति करुणा और मैत्री का संदेश है।

रात्रि भोजन त्याग द्वारा पर्यावरण संरक्षण- जैन दर्शन में रात्रि भोजन निषेध की परम्परा प्रदूषण मुक्तता की दृष्टि से एक वैज्ञानिक मान्यता है जिससे प्रदूषित आहार शरीर में नहीं पहुंचता और और स्वास्थ्य की रक्षा होती है। रात्रि एवं कृत्रिम प्रकाश में विषाक्त सूक्ष्म जीवो की उत्पत्ति होती है अतः सूक्ष्म जीव भोजन को भी विषाक्त बना देते हैं। जिससे अनेक जीवो की विराधना एवं भोजन प्रदूषित हो जाता हैं। पुनः देर रात में किये गये भोजन का परिपाक भी सम्यक् रूपेण नहीं होता है। इसलिये सूर्य के प्रकाश में बनाकर खाया गया भोजन प्रदूषण मुक्त एवं स्वास्थ्य वर्द्धक होता है।

यह मनोकल्पना नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक तथ्य है। जैनों के रात्रि भोजन निषेध के माध्यम से पर्यावरण और मानवीय स्वास्थ्य दोनों के रक्षण का प्रयास किया है। दिन में भोजन पकाना और खाना प्रदूषण से मुक्त रखना एवं पर्यावरण को संरक्षित करना है।

व्यसन त्याग से पर्यावरण संरक्षण- व्यसन वह वृत्ति है जो मानव को निरंतर उत्तम से जघन्य की ओर ले जाती है। मानव अपने नैतिक लक्ष्य को भूलकर अनैतिक व्यवहारों से दानवता की ओर बढ़ रहा है। जिससे वह व्यसनों का दास बढ़कर वैचित्रय पूर्ण, शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक रोगों को आमंत्रित करता है। जैनी वह कहलाता है जो 7 व्यसनों का त्यागी होता है। जुआं खेलना, मांस खाना, मदिरा पीना, चोरी करना, शिकार करना, वैश्यागमन, परस्त्रीगमन करना इन 7 व्यसनों को अपनाने वाले दुर्गति में जाते हैं इनके त्याग करने वाला व्यक्ति अपने जीवन का कल्याण करता है। इस प्रकार वह स्वतः ही पर्यावरण के संवर्धन में सहयोग करता है। व्यसनों से आन्तरिक तथा बाह्य दोनों प्रकार का पर्यावरण संरक्षित करता है।

जैन दर्शन में 7 व्यसन का त्यागी, 8 मूलगुणों का पालन करने वाला, श्रावक कहलाता है। वह श्रावक 12 व्रतों का पालन करता है। 12 व्रतों अन्तर्गत 5 अणुव्रत, 3 गुणव्रत, 4 शिक्षाव्रत आते हैं। 12 व्रतों में भौतिक एवं आध्यात्मिक पर्यावरण की शुद्धि में सार्थक भूमिका निभाते हैं।

अहिंसा द्वारा पर्यावरण संरक्षण- 5 अणुव्रत अहिंसा रूपी खेत में बाड़ी के समान हैं। अहिंसा के बिना श्रावक का आचार शून्य है। मानवता कल्याण अहिंसा में ही समाहित है।

आज अहिंसा वृत्ति को अपनाने से मानव प्राकृतिक प्रकोपों की विभीषिका से संत्रस्त हैं। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण पराकाष्ठा को प्राप्त हो गया भूभर्गीय तत्त्वों की प्राप्ति के लिये पृथ्वी के निरंतर दोहन से भूकंपों की विभीषिकाको प्रकंपित कर रही है।

जिस प्रकार हिंसा की व्यापकता पर चिंतन करने पर असत्य, स्तेय, अब्रह्मचर्य, परिग्रह तथा मांस भक्षण आदि हिंसा के ही रूप प्रतीत होते हैं उसी प्रकार सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तथा शाकाहारी भोजन आदि पुण्य कर्म अहिंसा के व्यापक स्वरूप में समाहित हो जाते हैं।

कुछ लोग पशु-पक्षियों को लेकर क्रूर-खेलों को प्रदर्शन करते हैं। इन खेलों में पशु-पक्षियों को निर्दयतापूर्वक घात कर दिया जाता है। दशहरे पर रावण दहन करके भी संकल्पी हिंसा करते हैं। ऐसे खेल या प्रदर्शन का आयोजन कुछ लोग करते हैं, वे तो पाप के भागीदार होते ही हैं, परन्तु हजारों लोग जो उन खेलों/प्रदर्शनों को देखने जाते हैं, उन्हें प्रोत्साहित, प्रशंसा करके अनुमोदना करते हैं, वे सभी भी उस हिंसा के भागीदार होते हैं।

भारत में आज 36000 से भी अधिक कारखाने चल रहे हैं, जिनमें लाखों बेजुबान/मूक पशु प्रतिदिन मौत के घाट उतार दिये जाते हैं, इसलिये आज इतना अधिक पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है।

जैनों की अहिंसा मनुष्य तक ही सीमित नहीं है, अपितु उनका प्रभाव सभी चराचर जीवों पर व्याप्त होता है अतः हमें सभी पशु-पक्षियों आदि जीवों को अभय प्रदान कर पर्यावरण संरक्षण में योगदान देना चाहिये। आचार्य उमास्वामी ने तत्वार्थ सूत्र में कहा है- **परस्परोग्रहो जीवानाम्**। अर्थात् एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक सभी जीव जाने-अनजाने एक-दूसरे का सहयोग करते हैं। विकास का मार्ग भी हिंसा या विनाश में नहीं अपितु सहकार को सन्निहित करने में है।

चींटी से लेकर हाथी, सबको अपना जीवन है प्यारा।
जीओ ओर जीने दो, यही हमारा है नारा॥

यदि हम किसी को जीवन नहीं दे सकते हैं तो उसका जीवन ले भी नहीं सकते हैं। जिन धर्म का यह सिद्धांत पर्यावरण के संरक्षण का सर्वोत्कृष्ट उपाय है।

सत्य व्रत द्वारा पर्यावरण संरक्षण- आज सत्य को तिलांजलि देकर असत्य का बाहुल्य हो गया है। असत्य वचन से मानसिक हिंसा होती है। असत्य भाषण में घृणा, प्रतिशोध, बैर, बैमनस्य आदि दुर्भावनायें जन्म लेती है, जिससे प्राणी हिंसक भी बन जाता है। रत्करण्डक श्रावकाचार में आचार्य समन्तभद्र ने सत्यव्रत की परिभाषा दी है- **स्थूलमलीकं न वदति न परान् वादयति सत्यमपि विपदे**। अर्थात् हित-मित अप्रिय और हिंसा रहित वचन बोलना चाहिये। सत्य वचन बोलने से समाज, छल, कपट, धोखा, तथा अन्य मिथ्या आचरणों से मुक्त हो सकता है। सत्य वचन के प्रयोग से आत्म संतुष्टि होती है। सत्य वचन के बोलने से मानसिक अथवा आध्यात्मिक पर्यावरण की शुद्धि होती है।

अस्तेय/अचौर्य व्रत से पर्यावरण संरक्षण- मन, वचन और कर्म से किसी की सम्पत्ति बिना आज्ञा के न लेना और न दूसरो को देना अस्तेय अचौर्य है। चौर्य कर्म के मूल में लोभी की प्रवृत्ति प्रबल है। वृक्षों की अवैध कटाई व चोरी, अभ्यारण्यों में बाघ, हिरण, हाथी आदि पशुओं का शिकार, दूषित, गैस उत्सर्जक, आधुनिक उपकरण एवं वाहनों का प्रयोग व्यापार में मिलावट, कम तौलना, रिश्वत लेना या देना स्तेय कर्म है। अस्तेय या अचौर्य व्रत पालन से व्यक्ति, समाज और देश मे व्याप्त आर्थिक प्रदूषण से भी रक्षा संभव है।

ब्रह्मचर्य व्रत से पर्यावरण संरक्षण- प्राकृतिक शोषण मे जनसंख्या वृद्धि की महती भूमिका है। जनसंख्या नियंत्रण हेतु ब्रह्मचर्य व्रत सार्थक है। ब्रह्मचर्य व्रत जीवन को मर्यादित एवं मैथुन सेवन को नियंत्रित करता है। ब्रह्मचर्य व्रत का पालन न करने से सामाजिक प्रदूषण तो फैलता ही हैं अपितु एड्स जैसे भयानक रोगों में भी वृद्धि हो रही है। अतः इन परिस्थितियों में ब्रह्मचर्य व्रत, व्यक्तिगत, सामाजिक और शारीरिक पर्यावरण शुद्धि हेतु वरदान है।

अपरिग्रह व्रत से पर्यावरण संरक्षण- अपरिग्रह का अर्थ है- किसी भी वस्तु का आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं करना।

हमारी इच्छायें, कामनायें, और लालसायें जितनी असीमित हैं, पदार्थ उतने ही सीमित हैं। उस पर केवल मनुष्य का ही नहीं , सम्पूर्ण जीव जगत् का अधिकार है। मनुष्य की बढ़ती और अभिलाषायें ही पर्यावरण को बिगाड़ रही हैं। आज जो औद्योगिक प्रतिस्पर्धा है वह मात्र धन कमाने की होड़ के कारण है। जिसमें दूसरें देशों को भेजने के लिये व्यक्ति अपने प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट कर रहा है। जैनाचार्यों ने 10 बाह्य परिग्रह और 14 अतरंग परिग्रह कहे हैं। क्षेत्र, वास्तु, धन-धान्य, दासी-दास, वस्त्र, बर्तन ये परिग्रह हैं। वस्तुओं के भोगोपभोग की इच्छा परिग्रह है और निस्पृस्ता अपरिग्रह है।

फैशन के इस दौर में वस्तुओं की उपयोगिता तो नहीं बढ़ी किन्तु अनुपयोगिता एवं अति लालसा की भूख से संग्रहवृत्ति अवश्य बढ़ी है। जिसकी मूर्ति में ही पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। अपरिग्रह को अपनाकर परमाणु विस्फोटों से पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं।

अतः जैनागम के अपरिग्रह के सिद्धांत को अपना लिया जावे तो पूरे विश्व में पर्यावरण संरक्षित हो जायेगा।

गुणव्रतों से पर्यावरण संरक्षण- पूर्व आदि 10 दिशाओं में नदी, ग्राम नगर आदि स्थानों की मर्यादा कर जीवन पर्यन्त उससे बाहर न जाये। उसे मर्यादा में लेने देने आदि कार्यो को करना दिग्व्रत गुणव्रत की सीमा के अन्तर्गत प्रतिदिन गमनागम की सीमा का नियम ग्रहण करना देशव्रत गुणव्रत है। बिना प्रयोजन के पापारम्भों का त्याग अनर्थदण्ड विरति गुणव्रत है। पानी का अपव्यय करना, भूमि का अत्यधिक खनन करना, बिना प्रयोजन के वनस्पति, वृक्ष आदि काटना ये सभी अनर्थदण्ड के अंतर्गत हैं। वर्तमान जीवन शैली का अधिकांश भाग अनर्थदण्ड हिंसा से जुड़ा हुआ है, इसे छोड़ने से पर्यावरण के विभिन्न घटकों की सुरक्षा हो सकती है।

सदाचारी गृहस्थ का सामाजिक जीवन मर्यादित होता है, उसको संचय की वृत्ति न बढ़े इसके लिये जैनागम में गुणव्रतों का निर्देश किया है। वह जीवन में धार्मिक आचरण से विमुख न हो तथा उसमें दान की वृत्ति बनी रहे। अतः ये गुणव्रत संरक्षण में अहम् भूमिका निभाते हैं।

शिक्षाव्रतों से पर्यावरण संरक्षण- जैनागम में 4 शिक्षाव्रत कहे हैं- 1. सामायिक 2. भोगोपभोग परिमाण 3. प्रोषधोपवास, 4. अतिथि संविभाग।

दुर्ध्यान एवं दुलेश्या छोड़कर प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल 3 बार सामायिक करना ही **सामायिक शिक्षाव्रत** है। इन्द्रिय जय हेतु भोगोपभोग की वस्तुओं का अल्प समय अथवा जीवन पर्यन्त नियमन **भोगोपभोग परिमाण शिक्षाव्रत** है। प्रत्येक मास की अष्टमी, चतुर्दशी को सर्व गृहारम्भों का त्यागकर नियमपूर्वक उपवास प्रोषधोपवास शिक्षाव्रत है और अतिथि को शुद्ध चित्त से प्रतिदिन निर्दोष विधिपूर्वक आहार देना **अतिथि संविभाग शिक्षाव्रत है।**

श्रावक के 4 शिक्षाव्रत आचरण को संयमित, आवश्यकताओं को नियंत्रित, जीवों की रक्षा करने में समर्थ हैं। श्रावकाचार व्यक्ति को आध्यात्मिक क्षेत्र की ओर ले जाने के लिये पहले सामाजिक कर्त्तव्य को पूरा करता है। वह आत्मकल्याण तो करेगा ही समाज का भी अधिकतम कल्याण उपकार से करता है। मानवता ही पर्यावरण को सुरक्षित करती है।

लेश्या से पर्यावरण संरक्षण- जैन दर्शन के अनुसार अनुरंजित योगों की प्रवृत्ति का नाम लेश्या है। लेश्या 6 प्रकार की है-कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल। कृष्ण लेश्या वाले जीवों का मानस अत्यंत प्रदूषित होता है। उसके आगे-आगे की लेश्या वाले व्यक्तियों का मानसिक प्रदूषण कम होता जाता है। और अन्तिम शुक्ल लेश्या वाला व्यक्ति कोमल परिणाम वाला होता है।

जैन धर्म में शुक्ल लेश्या वाले जीव को महान पुण्यात्मा माना गया है। उसके भाव वृक्ष को तनिक भी नुकसान न पहुंचाकर फल खाने वाले होते हैं। प्रायः सभी जैन मंदिरों में षट् लेश्याओं को एक वृक्ष से फल पाते हुये दिखाया जाता है। जिसमें कृष्ण लेश्या वाला व्यक्ति फल प्राप्ति हेतु पूरे वृक्ष को काटना चाहता है। नील लेश्या वाला व्यक्ति वृक्ष की मोटी शाखा को काटकर फल पाना चाहता है। कापोत लेश्या वाला व्यक्ति उसमें कम मोटी शाखा से सिर्फ फल के गुच्छे तोड़कर प्राप्त करना चाहता है। पीत लेश्या वाला व्यक्ति छोटी पतली शाखा काटकर फल प्राप्त करना चाहता है। **पद्म लेश्या** वाला व्यक्ति डाली से सिर्फ पके फल तोड़ने की भावना चाहता है। जबकि शुक्ल लेश्या वाला व्यक्ति बिना वृक्ष को नुकसान पहुँचाएँ स्वयं गिरे हुये पके फलों को उठाकर खाने की भावना रखता है। वास्तव में जैन धर्म प्रकृति का इसी भाव से दोहन करने की बात करता है जिससे आवश्यकता की पूर्ति भी हो जाए और प्रकृति भी सुरक्षित रहे।

श्रमणाचार से पर्यावरण संरक्षण- जैन श्रमणाचार भी पर्यावरण संरक्षण में अत्यधिक सहायक हैं। मुनि का आचार ही श्रमणाचार है। इसमें 5 महाव्रत, 5 इंद्रिय विजय, 5 समिति, 36 आवश्यक तथा 7 शेष गुण समाहित है। मुनि जीवन की ओर साधना के कारण श्रमणाचार को

प्रायः निवृत्तिमूलक एवं व्यक्तिवादी की संज्ञा दी जाती है किन्तु इसमें गुणात्मक विकास के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव जाति के उत्थान की भावना समाहित होती हैं। प्राणी मात्र की रक्षा की भावना निहित रहती है। मुनि की जीवनचर्या पर्यावरण को सुरक्षित तथा शुद्धिपरक संयमाचरण को प्रकट करती है। विशुद्ध वातावरण में रहने से ही साधु अच्छी तरह से ज्ञान, ध्यान और तप में संलग्न रह सकते हैं। साधु के 28 मूलगुण प्रकृति से अति दोहन की प्रवृत्ति पर अंकुश रखने के प्रतीक हैं।

दिगम्बर जैन साधु पिच्छी और कमण्डल आवश्यक उपकरण के रूप में रखते हैं। कमण्डल तो एक लकड़ी का पात्र होता है और पिच्छी, मोर द्वारा स्वयं त्यक्त पंखों को एकत्रित कर साधु जन स्वयं बनाते हैं। साधु संयम की रक्षा उसी पिच्छी के माध्यम से करते हैं। किसी भी वस्तु को अच्छी तरह देखभाल कर उठाकर पिच्छी से परिमार्जन करके रखते हैं, जिसमें सूक्ष्म जीवों की भी विराधना न हो।

साधु बिहार में किसी प्रकार का वाहन प्रयोग नहीं करते हैं, जिसके फलस्वरूप वे वायुमण्डल एवं ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करते हैं और रत्नाचार पूर्वक अर्थात् ईर्यापथ शुद्धिपूर्वक पद विहार से गमन करके सूक्ष्म जीवों की रक्षा करते हैं। 4 माह वर्षाकाल अत्यधिक जीव राशि उत्पन्न होने से उनकी रक्षा के लिये चातुर्मास अर्थात् एक स्थान पर निवास करते हैं। आहार में प्रत्येक वस्तु उबालकर अर्थात् अचित्त करके तथा शोधन करके ग्रहण करते हैं एवं पौष्टिक आहार ही ग्रहण करते हैं। साधु रात्रि में मौन रखते हैं तथा भोजन, सामाजिक, जप, ध्यान आदि स्थानों पर मौन रहना इष्ट माना है। यह मौन संकेत, ध्वनि को सीमित रखने की भावना का प्रतीक ही प्रतीत होता है। मुनिराज स्वयं दुख झेलकर भी अन्य जीवों के घात का विचार भी मन में नहीं लाते हैं।

हमारे मुनिराज पर्यावरण संरक्षण के अनुकरणीय उदाहरण हैं। उनका अस्नान मूलगुण तथा उबालकर पानी पीना-जल संरक्षण, भूमि-शयन मूलगुण-वन संरक्षण तथा भूमि संरक्षण, अदन्त धावन मूलगुण-वनस्पति संरक्षण, खड़े होकर एक बार आहार एवं करपात्र में आहार करना खनिज धातु संरक्षण, बिजली एवं बिजली से चलने वाले उपकरणों पंखा आदि का उपयोग नहीं करने से वायुमंडल संरक्षण के प्रतीक माना जा सकता है।

हमारे तीर्थंकर भी बड़े ही प्रकृति प्रेमी एवं पर्यावरण के रक्षक थे, उन्होंने तप के लिये शाल्मली, बरगद, अशोक, आम, अश्वत्थ, जामुन आदि वृक्षों के तल भाग को चुनकर तप द्वारा कैवल्य प्राप्त किया। निर्वाण प्राप्त किया तो पहाड़ियों से ताकि तीर्थभूत उन स्थानों का पर्यावरण सुरक्षित रहे। सम्पूर्ण जीव प्रिय है, इसलिये तीर्थंकरों के चिन्हों में वृषभ, हाथी, घोड़ा, बंदर, गैंडा, महिष, शूकर, सेही, हिरण, बकरा, सर्प, सिंह परम्पर विरोधी थलचर जीव, चकवा, जैसे नभचर जीव एवं मछली, कछुआ, मगरमच्छ जैसे जलचर एवं लालकमल, श्वेतमल, कल्पवृक्ष आदि वनस्पतियों को भी स्थान दिया है। मानों वे कह रहे हैं कि सम्पूर्ण प्रकृति मेरे लिये प्रिय है।

तीर्थंकर भगवान के गर्भ में अवतरण पर माता जो 16 स्वप्न देखती है, उसमें मछली,

निर्मल, सरोवर, निर्धूम अग्नि, पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा देती है। तीर्थंकर बालक के अभिषेक का जल क्षीर सागर से आता है जिसमें कभी भी जीवोत्पत्ति नहीं होती है तथा उसका रंग और क्षीर (दूध) के समान स्वच्छ होता है। यह भी पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा देता है।

पर्यावरण रक्षा के जनक भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत और बाहुबली ने पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि को ध्यान रखकर दृष्टि युद्ध, जलयुद्ध, मल्लयुद्ध किया होगा ताकि मानव शक्ति के ह्रास के साथ-साथ प्रकृति एवं प्रकृतिस्थ जीवों की हानि न हों क्योंकि दोनों की सेनाओं के बीच जो आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का उपयोग होता है वह पर्यावरण को नष्ट करने वाला ही होता है।

अनेकान्त एवं स्याद्वाद से पर्यावरण संरक्षण- जैन धर्म के अनेकान्त एवं स्याद्वाद सिद्धांत से भी पर्यावरण संरक्षण संभव है। क्योंकि अनेकान्त द्वारा आज के मानव की वैचारिक समस्या का समाधन हो सकता है। यह संसार के बहु आयामी स्वरूप से परिचित हो जाता है। जिस प्रकार जल के विभिन्न रूप होते हैं- बर्फ के रूप में ठोस, वाष्प के रूप में गैस और जल के रूप में द्रव होता है। अतः अब बताएइ कि जल का एक अणु ठोस या द्रव है अथवा गैस है, तो हमारा अनेकान्त के सिद्धांत से कहा जायेगा कि ठोस भी है, द्रव भी है, गैस भी है। एक ही वस्तु में सत् और असत् दोनों रूप विद्यमान होते हैं। इस तथ्य की पुष्टि हेतु आचार्य ज्ञानसागर जी ने **वीरोदय काव्य** में शूकर का दृष्टान्त दिया है कि विष्टा हमारे लिये अभक्ष्य है, किन्तु शूकर के लिये परम भक्ष्य है। शूकर के प्रति हमारी दृष्टि घृणित होती है किन्तु पर्यावरण शुद्धि में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

अनेकान्त की वचन पद्धति-स्याद्वाद है। अनेकान्त और स्याद्वाद में वैचारिक प्रदूषण दूर करने का सामर्थ्य है।

संयम के द्वारा पर्यावरण संरक्षण- जैनागम में कहा है- **धम्मो मंगल मुक्किट्ठों, अहिंसा संजमो तवो।**

अर्थात् अहिंसा, संयम और तप उत्कृष्ठ धर्म है। जैन धर्म में संयम को उत्कृष्ठ तप कहा है।

प्रदूषित पर्यावरण का यह खतरा असंयमित जीवन की देन है। संयम शून्य जीवन शैली के कारण प्रदूषण का खतरा बढ़ा है। हम संयम के मूल्य को समझें । वास्तव में असंयम अनियंत्रित भोगवादन ही पर्यावरण संकट के लिये जिम्मेदार है। असंयम अपने आप में एक बीमारी है। जिससे आज सभी पीड़ित हैं, इससे कोई अछूता नहीं है। इसका इलाज संयम रूपी दवा से ही संभव है। संयम से प्रतिरोधक शक्ति का निर्माण होगा और पर्यावरण अपने आप स्वच्छ हो जायेगा। यदि संयम रूपी दवा का सेवन नहीं किया गया तो प्रदूषण का खतरा बढ़ता ही जायेगा। पर्यावरण के संकट का समाधान संयम से ही संभव है। पर्यावरण संतुलन के लिये मानव जाति का दायित्व है कि वह अपनी जीवन शैली को संयम की ओर अग्रसर करें। भोगवादी संस्कृति के मलिन पक्षों पर अंकुश लगायें । विलासरी जीवन के लिये प्रकृति से छेड़खानी बंद करें, तभी पर्यावरण संतुलन एवं जीव मात्र का अस्तित्व सुरक्षित रह सकता है।

शाकाहार के द्वारा पर्यावरण संरक्षण- जैन धर्म में शाकाहार को पर्यावरण संरक्षण का

आधार माना गया है। यह अहिंसा की महान प्रतिष्ठा का सरल, सात्विक और स्वास्थ्यवर्द्धक आहार है, जो न केवल बाह्य पर्यावरण को संरक्षित व संवर्द्धित करता है, वरन् जीवन में पवित्रता, सद्गुण सदाचार और संयम की ओर ले जाता है। शाकाहार शब्द ही शा-शांति का, का-कांति, हा-हार्द्र, और र-रसों का रक्षक का परिचायक है अर्थात् शाकाहार हमें शक्ति, कान्ति स्नेह और रसों से परिपूर्ण करता है। मनुष्य प्रकृति प्रदत्त एक शाकाहारी प्राणी है। इसकी शारीरिक संरचना शाकाहार के अनुकूल है। शाकाहार समरसता और सहअस्तित्व है जो- चारित्रिक गुणों पर आधारित एक जीवन प्रकिया है।

शाकाहार में संतुलित आहार के सभी तत्त्व प्रोटीन, वसा, प्रोटीन कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण और विटामिन होते हैं। ये सभी तत्त्व वनस्पति, अनाज, दाल, दूध और फलों से प्राप्त हो जाते हैं। जिससे प्राणी दीर्घ आयु तक सरलता से जीता है।

करूणा ही आत्मा का स्वभाव है, जन-जन में शाकाहार आचरणीय बनकर ही पर्यावरण स्वच्छ रख सकता है। शाकाहार से जल संकट की समस्या का भी समाधान संभव है। क्योंकि मांस के उत्पादन में अधिक जल व अनाज के उत्पादन में कम जल लगता है। तेजी से बढ़ रहे कत्लखानों ने पर्यावरण को प्रदूषित कर दिया है और इन मूक पशुओं की हाहाकार एवं चीत्कार प्राकृतिक आपदाओं को निमंत्रण दे रही है।

शाकाहार का सेवन ही आहार शुद्धि है और आहार शुद्धि एवं पर्यावरण का जीवन्त संबंध है।

जैन मनीषियों के अनुसार- जो जीवन तथा अनुशासन में सहायक हो, जो पर्यावरण संवर्द्धन में सहयोग दे, जो मादकता उत्पन्न न करें, कर्त्तव्य के प्रति अवहेलना का भाव न लाए, वही सात्विक भाव है और इसका मूल आधार शाकाहार है, शाकाहार से हम स्वास्थ्य को भी स्वस्थ रख सकते हैं तथा पर्यावरण संरक्षण भी कर सकते हैं।

उपसंहार-जैन दर्शन दया और प्रेम, करुणा का उपहार है, जिसमें **परस्परोग्रहो जीवानाम्** का मूलमंत्र निहित है, जो हर प्राणी को प्रकृति और पर्यावरण से जोड़ता है। **जीओ और जीने दो** के उद्घोष में पर्यावरण के आदर भाव निहित हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन धर्म के सभी सिद्धांतों जैसे जल छानकर पीना, रात्रि भोजन नहीं करना, षट्कायिक जीवों की रक्षा करना, व्यसनों के त्याग, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, व्रतों का पालन करना, 3 गुणव्रत एवं 4 शिक्षाव्रत के माध्यम से श्रावकाचार का पालन करना, 5 समिति, 3 गुप्ति, 5 महाव्रतों के माध्यम से श्रमणाचार का पालन करना, लेश्या, संयम एवं शाकाहार आदि के आलोक में एक बात दृष्टिगोचर होती है कि पर्यावरण का संरक्षण जैन धर्म के नीतियों पर चलकर ही संभव हो सकता है।

जैन सिद्धात एवं आचार-विचार आंतरिक पर्यावरण तथा बाह्य पर्यावरण को संरक्षण करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं जिन्हें वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं के संदर्भ में समझना एवं आचरण में समाहित करना आज की महती आवश्यकता है।

चलो देखें यात्रा

राजस्थान का मनहर तीर्थ चंद्रगिरी-बैनाड़

नाम एवं पता: श्री दिगम्बर जैन चंद्रप्रभु अतिशय क्षेत्र, चंद्रगिरि ग्राम- बैनाड़ तह आमेर

सुविधायें: सुविधायुक्त 4 एवं सामान्य 10 कमरे तथा 2 हॉल है। भोजन अनुरोध पर सशुल्क है।

मार्गदर्शन: जयपुर से क्षेत्र झोंटवाडा होते हुये 15 किमी है।

महत्त्व एवं दर्शन: क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या 2 है। मूलनायक चंद्राप्रभु की प्रतिमा के अलावा बाहुबली की मूर्ती स्थापित की गई है। क्षेत्र का निरंतर विकास हो रहा है। प्राचीन क्षेत्र दर्शनीय है।

श्री मुनिसुव्रत अतिशय क्षेत्र प्रभुसर हस्तोडा: जयपुर सीकर रोड पर गोविन्दगढ़ से 15 किमी. रोड के बाई तरफ दर्शनीय मंदिर का जीर्णोद्धार हो गया है।

सम्पर्क: श्री मनीष गंगवाल - 9988020330

कविता

तेरी प्रभा से निजको लखा

आदर्श पीयूष सुपार्श्वनाथ ।
पादारविन्दो मम है सुमाथ ॥
तेरा चमत्कार अपूर्वता है ।
जो चित् चमत्कार प्रकाशता है ॥1॥
है काल काला यह व्याल सा है ।
प्रत्येक को ग्रास बना रहा है ॥
यो विश्व प्राणी डर से ग्रसे हैं ।
हे नाथ रक्षा तब हाल में है ॥2॥
ये काल भी तो तुम से डरा है ।
ये जो आपके ही चरणों झुका है ॥
हारा गया संयम शस्त्र से है ।
यों आप तो कालजयी बने हैं ॥3॥
सर्वज्ञ सूर्योदय की प्रभाती ।
आरोग्य दायी शिव सौख्य देती ॥
जो धर्म अब्भोज विकाशर्ता है ।
कारूण्य दायी सुरभी लिये हैं ॥
आशा निराशा परिमूक्त हूँ मैं ।
अध्यात्म पीयूषण सदा चखू मैं ॥
अज्ञान मोही बन के भ्रमा मैं ।
तेरी प्रभा से निज को लखा मैं ॥

आगम दर्शन

षड्खंडागम का द्वितीय खंड खुद्दाबंध का वर्ण्य विषय

श्री षड्खंडागम ग्रंथ में छुद्रक बंध खंड में 1582 सूत्र है तथा 13 अध्याय है जिनमें 11 अनुयोग द्वार तथा 2 महादंडक है। कर्म सिद्धान्त की दृष्टि से यह द्वितीय खंड बहुत उपयोगी सिद्ध होता है कौन सा जीव बंधक और कौन सा जीव अबंधक है। बंध बंधनीय अबंधक बंध विधान नामक चार अनुयोगों में से बंधक का वर्णन किया गया है। ग्यारह अनुयोग इस प्रकार 1जीव अपेक्षा स्वामित्व 2काल, 3 अंतर, 4 भंग विचय, 5 नाना जीव की अपेक्षा भंग विचय, 6 नाना जीव की अपेक्षा से द्रव्य प्रमाण, 7क्षेत्रानुगम, 8 कालानुगम, 9 स्पर्शानुगमा, 10 अंतर, 11 भागानुगम अल्पबहुत्वानुगम ये प्रमुख अनुयोग द्वार है।

क्र.	अधिकार	सूत्र संख्या	वर्ण्य विषय
1	प्रस्ताविक भाग	43	मर्गणानुसार बंधक अबंधक जीवों का कथन
2	स्वामित्वानुगम	91	कौन सजीव कौन सी गुण पर्याय में उत्पन्न होते हैं।
3	कालानुगम	1216	जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
4	अंतर अनुगम	151	मार्गणाक्रम से जघन्येत्कृष्ट अंतरकथन
5	भंग विचय	23	कौन से जीव सदैव रहते हैं कौन से नहीं रहते हैं।
6	द्रव्य प्रमाणानुगम	171	गुणस्थान मार्गणा की अपेक्षा संख्या
7	क्षेत्रानुगम	124	क्षेत्र स्पर्श का वर्णन
8	कालानुगम	55	नाना जीवों की अपेक्षा ज.उ. काल का वर्णन
9	अंतरानुगम	68	नाना जीवों की अपेक्षा अंतर वर्णन
10	भागाभागानुगम	88	जीवों की संख्या पर प्रकाश
11	अल्प बहुत्व अनुगम	106	जीवों की हीनाधिकता का वर्णन
12	चूलिका दंडक	79	जीवों की सापेक्षिक संख्या का कथन

प्रस्तुत खंड में बन्ध रूप कर्म व्यवस्था का वर्णन गहन रूप से किया गया है। कर्म सिद्धान्त की अपेक्षा यह खंड सम्पूर्णता प्रस्तुत करता है। इस संक्षिप्त परिचय से पाठकगण यह अवश्य समझेंगे कि षड्खंडागम ग्रंथ का कर्म सिद्धांत कितना प्रौढ और वैज्ञानिक है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
सितम्बर 2024

मूल दिगम्बर रूप

प्रथम-

नयनाभि रामी श्रीपुर सुधामी
सर्वज्ञ दृष्ट योगी निष्कामी
अंतरीक्ष पारस प्रभु विश्व भूप
भगवन मम मूल दिगम्बर रूप

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

छल कपट अरू लेप में
बदला दिगम्बर रूप
यह है साजिश श्वेताम्बरी
मूल दिगम्बर रूप

श्रीमती अनीता जैन, इंदौर

तृतीय-

उपसर्ग विजेता पार्श्वजिन
अंतरीक्ष चिद् रूप
क्षमाधारी शिरपुर बसे
मूल दिगम्बर रूप

श्रीमती बिंदू जैन, अहमदाबाद

वर्ग पहेली क्र. 298
अगस्त 2024 के विजेता

प्रथम : श्रीमती आयुषी जैन, दिल्ली
द्वितीय : पारस जैन, अहमदाबाद
तृतीय : आयुष जैन, सिरोंज

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द्द् अ द्ध् ण् आ अ ल् अ र् ष् द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

मर्यादा का परिणाम

रहसि दुर्लभमाण्य मनिषितं न हि विमुज्जति लब्धरसो जनः।

इसलिये राजा सुमुख वधू वनमाला को उसके पति के घर नहीं भेजा अपने ही घर रोक लिया सो ठीक ही है क्योंकि दुर्लभ वस्तु को पाकर उसका रस प्राप्त करने वाले उसे छोड़ते नहीं है।

न सुलभं सुमुखे किमु भर्तरि ।।

सुंदरी वनमाला, अपने उत्तम गुणों से राजा सुमुख की समस्त मुख्य स्त्रियों में मुख्यता को पाकर परम गौरव को प्राप्त हुई थी सो ठीक ही है क्योंकि भर्ता के अनुकूल रहने पर कौन सी वस्तु सुलभ नहीं ?

परिचितः प्रणयः खलु दुस्त्यजः ।।

कदाचित वह देव स्वर्ग में उत्तमोत्तम स्त्रियों में बीच बैठा था कि उसने अचानक ही अपनी पूर्वभव की स्त्री वनमाला को अवधिज्ञान का विषय बनाया अर्थात् अवधिज्ञान के द्वारा उसका विचार किया तो ठीक ही है क्योंकि परिचित अनुभूत स्नेह बड़ी कठिनाई से छूटता है।

कामग्रहमुहितस्य का मर्यादा संस्थितः प्रभुः ।।

तदनन्तर उसने मनोहारी का ग्रहण स्वयं ही कर लिया सो ठीक ही है क्योंकि कामरूपी पिशाच से गृहीत मनुष्य की मयार्दा क्या है ? और क्रम क्या है ? कामी मनुष्य सब मयार्दाओं कर्मों को छोड़ देता है।

तावद्धार्यादो यावन्मर्यादा संस्थितः प्रभुः ।।

राजा दक्ष की रानी इला देवी, पती के इस कुकृत्य से बहुत की रूष्ट हुई इसलिये उसने पुत्र को पिता से फोड़ लिया अलग कर लिया सो ठीक ही है क्योंकि स्त्री आदि तभी तक है जब तक स्वामी मर्यादा में रहता है-मर्यादा का पालन करता है।

केरियर

कंपनी सचिव बने पैसा कमायें

कंपनी सचिव- व्यवसाय के क्षेत्र में कैरियर की संभावनायें तीव्र गती से बढ़ रही हैं। जो लोग कार्पोरेट जगत में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं, उनके लिये इस विषय का व्यवसायिक ज्ञान होना अनिवार्य है।

कंपनी अधिनियम 1956 की धारा 383-ए, के अनुसार वह कंपनी जिसकी पूंजी 50 लाख अथवा इससे अधिक हो उसके लिये भारतीय कंपनी सचिव संस्थान (ICSI) के सदस्य की कंपनी सचिव (CS) के रूप में पूर्णकालिक नियुक्ति करना आवश्यक है। यद्यपि जिन कंपनी की आय 50 लाख से कम है, वह आई.सी.एस.आई के इंटरमीडीएट योग्यता प्राप्त व्यक्ति को सचिव नियुक्त कर सकती है।

कंपनी सचिव भूमिका एवं कार्य- अपने पद के अनुसार कंपनी सचिव कंपनी का सर्वोच्च मान्य अधिकारी होता है। निर्देशक मंडल शेयर धारक और सरकारी एजेंसियों के मध्य महत्त्वपूर्ण सेतु सचिव होता है।

कार्य- एक कंपनी सचिव को अपने सचिवालय से संबधित कार्यों एवं उत्तरदायित्वों के साथ कार्पोरेटरों को वित्त, लेखा, कानूनी, प्रशासनिक और कार्मिक क्षेत्रों के विभिन्न प्रकार्यों में साध्यता प्रदान करनी होती है। कंपनी सचिव को कार्पोरेट विकास योजना निर्माता के रूप में भी कार्य करना पड़ता है।

योग्यता: भारतीय कंपनी सचिव संस्थान (ICSI) एक मात्र संस्थान है, जिससे प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति ही कंपनी सचिव बनने के लिये योग्य है। 22 इंस्टीट्रयुशनल एरीया, लोधी रोड़ नई दिल्ली स्थित इस संस्थान के चार क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता मुंबई, नईदिल्ली तथा चेन्नई में स्थित हैं। और इसकी 34 शाखायें विविध प्रमुख शहरों में स्थित हैं।

कंपनी सचिव के लिये प्रारंभिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद फाउडेशन कोर्स 3 वर्ष के भीतर उत्तीर्ण करना होता है। स्नातक की योग्यता रखने वालों को केवल इंटरमीडिएट परीक्षा और संस्थान द्वारा संचालित अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती है। जिसके पश्चात उनका (ICSI) में पंजीकरण होता है।

पाठ्यक्रम- पाठ्यक्रम चार समुहों में विभाजी है- दो इंटरमीडिएट और दो अंतिम परीक्षा के लिये। प्रत्येक समुह में चार प्रश्नपत्र होते है। सभी प्रश्न पत्र कार्पोरेट कानून, वित्तीय प्रबंधन, श्रम एवं निजी कानून, कर कानून, लागत और प्रबंधन लेखा इत्यादी से संबद्ध होते हैं।

■ 1 अगस्त

- सुप्रीम कोर्ट ने एस.टी.एस. सी पर ओ.बी.सी से आरक्षण क्रीमलेचर लागू हो इस आशय का फैसला दिया।

- कोल्हापुर के स्वप्निल ने निशानेबाजी में तीसरा कास्य पदक 2024 ओलंपिक में जीता।

- इलाहाबाद हाइकोर्ट ने कृष्ण जन्म भूमि विवाद में मुस्लिम पक्ष की याचिका को खारिज किया अब हिन्दू पक्ष की 12 याचिकाओं की सुनवाई का मार्ग साफ हुआ।

■ 2 अगस्त

- भारत हॉकी में आस्ट्रेलिया से 3-2 से जीता।

- प्रसिद्ध चित्रकार सुधा मदन उपलकर का निधन हुआ वे 96 वर्ष की थी।

- मणिपुर में कुकी और मैतई के बीच शांति समझौता हुआ।

■ 3 अगस्त

- श्रीनगर: आतंकियों के लिये काम कर रहे 5 पुलिसकर्मी और एक शिक्षक बर्खास्त हुये।

- दलजीत सिंह चौधरी ने बी.एस.एफ का कार्य भार सम्हाला।

- म.प्र. को अंगदान प्रथा को बढ़ावा देने के लिये बेस्ट इमर्जिंग पुरुस्कार मिला।

■ 4 अगस्त

- शाहपुर सागर (म.प्र.) दीवार गिरने से 9 बच्चों की मौत हुई।

- ओलंपिक में भारत ने हॉकी मैच में ब्रिटेन को हराकर सेमीफाइनल में स्थान बनाया।

- बांग्लादेश में फिर हिंसा भड़की 91 लोगों की मौत हुई कर्फ्यू लगाया इंटरनेट बंद किये गये।

■ 5 अगस्त

- बांग्लादेश में तख्ता पलट हुआ सेना सरकार चलायेगी पी.एम. हाऊस में प्रदर्शनकारी घुसे। शेख हसीना ने देश छोड़ा।

- डे.बी तूफान फ्लोरिडा पहुँचा 2 लाख घरों में बिजाली गुल हुई।

- 22 वर्षीय अल्मा कपूर मिस यू.एस.ए. बनी।

■ 6 अगस्त

- बांग्लादेश की संसद भंग हुई उपद्रव जारी रहे 24 लोगों को जिंदा जलाया। खालिदा जिया जेल से छूटीं।

- त्रिशूर (केरल) सुन्दर सी मेनन पद्म श्री सम्मानित। व्यवसायी धोखाधड़ी के मामले में गिरफ्तार हुये।

- गुजरात की सांसद गेनीबेन ने गाय को राष्ट्र माता घोषित करने की मांग उठाई।

■ 7 अगस्त

- विनेश फोगाट ने तीन पहलवानों को चित्त करने के बाद उनका वजन 100 ग्राम अधिक निकलने से उन्हें पदक का अपात्र घोषित किया।

- काठमांडू (नेपाल) उत्तर पश्चिम पर्वतीय क्षेत्र में हेलीकॉप्टर दुर्घटना ग्रस्त हुआ

4 चीनी पर्यटक समेत 5 लोगों की मौत हुई।

- प्रयागराज में भारी बारिश के कारण गंगा यमुना में जल स्तर बढ़ा।

■ **8 अगस्त**

- पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य का निधन हुआ वे 80 वर्ष के थे।

- भारत ने स्पेन को 2-1 से हराकर ओलंपिक का चौथा कांस्य पदक अपने तरफ किया।

- विनेश फोगाट ने कुश्ती से सन्यास की घोषणा की।

■ **9 अगस्त**

- दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को 530 दिन बाद सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिली।

- एयर इंडिया ने तेल अबीब की उड़ाने स्थिगित की क्योंकि ईरान इजरायल में तनाव बढ़ा रहा है।

- यूक्रेन की सेना ने 27 रूसी ड्रोनों को मार गिराया।

■ **10 अगस्त**

- यूक्रेन ने रूस के कुर्स्क पर कब्जा किया।

- अनंतनाग में आतंकी हमला हुआ 2 जवान शहीद हुये।

- गाजा में स्कूल पर हमा हुआ 100 लोग मारे गये।

■ **11 अगस्त**

- बांग्लादेश के पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने यू.एस. पर आरोप लगाते हुये कहा कि सेंट मार्टिन द्वीप नहीं दिया तो देश छोड़ना पड़ा।

- मिर्जापुरः वनविभाग ने अवैध जमीन पर बने चर्च पर बुलडोजर चलवाया।

- यूक्रेनी हमले से रूस हिला 76000 लोगों को घर छोड़ने के निर्देश दिये।

■ **12 अगस्त**

- ट्रेनी डॉक्टर के रेप मर्डर के विरोध में देश के तीन लाख डॉक्टर हड़ताल पर गये।

- जहानाबाद (बिहार) वाणावर स्थित बाबा सिद्धेश्वर मंदिर में भगदड़ मचने से 6 महिलाओं सहित 7 लोगों की मौत हुई।

- बाग्लादेश की अंतरिम सरकार ने हिन्दुओं की सुरक्षा में हुई चूक के लिये माफी मांगी।

■ **13 अगस्त**

- ट्रेनी डॉक्टर रेप-मर्डर मामले कोलकाता हाईकोर्ट ने जांच सी.बी.आई को सौंपी।

- सुप्रीम कोर्ट ने पंतजली के खिलाफ अवमानना केस बंद किया।

- बी.एस.एफ जवानों ने पाक घुसपैठियों को मार गिराया। वह मुठभेड पंजाब सीमा पर हुई।

■ **14 अगस्त**

- सेना के कैप्टन दीपक सिंह आतंकी मुठभेड में शहीद, डोडा जिले में 4 आतंकी मारे गये।

- इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अहं टिप्पणी करते हुये कहा कि धर्म की आड़ में धर्मान्तरण नहीं चलेगा।

- बिहार के भाजपा नेता अजय शाह की हत्या अज्ञात हमलावरों ने की।

■ **15 अगस्त**

- जम्मू कश्मीर के बांदीपोर में बादल फटा वैष्णव देवी में भूस्खलन हुआ।

- दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट ने जमानत देने से इंकार किया।

- अग्नि मिसाईल के पितामह एयरोस्पेस

वैज्ञानिक रामनारायण अग्रवाल का निधन हुआ वे 84 वर्ष के थे।

■ **16 अगस्त**

- मोहम्मद यूनिस ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के फोन पर हिन्दुओं की रक्षा का भरोसा दिया

- दिल्ली हाईकोर्ट में स्वामी सुब्रमण्यम ने याचिका दायर की।

- उदयपुरः 2 छात्रों के झगड़े के बाद शहर में दंगा फैला।

■ **17 अगस्त**

- कानपुरः वाराणसी से अहमदाबाद जा रही साबरमती एक्सप्रेस गोविन्दपुरी स्टेशन के पास बेपटरी हुई 20 डिब्बे उतरे।

- कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलौत ने एम.यू.डी.ए के भूमि आवंटन घोटाले में मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के विरूद्ध मामला चलने की मंजूरी दी।

- कांगो में आतंकी हमले में 16 ग्रामीणों की मौत हुई 20 का अपहरण हुआ।

■ **18 अगस्त**

- बंगाल के रेप-मर्डर मामले में सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया।

- गाजा पर इजरायली आक्रमण से 28 लोग मरे।

- शिमला में भारी वर्षा होने से 132 सड़कें बंद हुई।

■ **19 अगस्त**

- भोपालः बाग सेवनिया इलाके में ज्वेलरी शॉप को अग्निवीर ने बंदूक की नोक पर लूटा।

- ऊधमपुरः आर.पी.एफ की टीम पर आतंकी हमला हुआ एक इंस्पेक्टर शहीद हुआ।

- तालीबानी रक्षामंत्री मौलवी याकूब मुजहिद ने पाकिस्तान को खुली चेतावनी दी।

■ **20 अगस्त**

- अजमेरः 32 साल पुराने फोटो ब्लेकमेल कांड के नफीस चिश्ती, नसीम टार्जन, सलीम चिश्ती, इकबाल भाटी, सोहल गनी, जमीन हुसैन को अदालत ने उम्र कैद की सजा सुनाई।

- बदलापुरः 3-4 साल की बच्चियों के साथ स्कूल में दुष्कर्म के मामले में भीड़ ने ट्रेन रोकी।

- बीना (म.प्र.) एक निजी अस्पताल में स्वाईन फ्लू का मरीज मिला।

■ **21 अगस्त**

- गंजम (उड़ीसा) के चिकिती ब्लॉक में जहरीली शराब पीने से एक की मौत 20 बीमार।

- अनुसूचित जाति के आरक्षण में क्रीम लेयर पर सुप्रीम कोर्ट के विरोध में भारत बंद रहा।

- छतरपुरः एफ.आई.आर दर्ज कराने पहुँचे मुस्लिम समुदाय के लोगों ने थाने पर पथराव किया 3 सिपाही घायल हुये।

■ **22 अगस्त**

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बायोकेमिस्ट जी पद्म नोभन का विज्ञान रत्न से सम्मानित किया।

- अफ्रीका देश के वोत्सवाना में 2492 कैरेट का हीरा मिला।

- लेहः 200 मीटर गहरी खाई में स्कूल बस गिरी। 6 की मौत हुई 22 गंभीर घायल हुये।

■ **23 अगस्त**

- भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडीमीर जेलेंस्की से मुलाकात की कहा भारत हमेशा शांति का पक्ष धर है।

- भारत के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह अमेरिका पहुँचे सुरक्षा समझौतो पर हस्ताक्षर

किये।

- काठमांडू : महाराष्ट्र की तीर्थ यात्री बस खाई में गिरि 27 लोगों की मौत हुई 43 डूबे।

■24 अगस्त

-जालना: स्टील फैक्ट्री में विस्फोट हुआ बायलर फटा 34 घायल हुये 6 गंभीर हुये।

- पूणे: हेलीकॉप्टर दुर्घटना ग्रस्त हुआ 4 यात्री घायल हुये।

- रूस की एक जेल में कैदियों के बीच संघर्ष में 8 लोगों की मौत हुई।

■ 25 अगस्त

- हसनपुर: अमरोहा के 5 वर्ष बच्ची को हार्ट अटैक आया डॉक्टर ने मृत घोषित किया।

- हिजबुल्लाह ने इजरायल पर 320 ड्रोन दागे इजरायल ने 100 जेट से बड़ा हमला किया इजरायल में 48 घंटे की इमरजेंसी लागू हुई।

- हिंडीगुल: तमिलनाडु के जिले की एक पटाखा फैक्टरी में विस्फोट होने से 2 लोगों की मौत हुई।

■ 26 अगस्त

- सिंधूदुर्ग जिले के मालवण स्थित राजकोट किले पर लगी छत्रपति शिवाजी की प्रतिमा गिरी।

- भाजपा ने कश्मीर की पहली 44 उम्मीदवारों की सूची वापिस ली।

- रूस ने यूक्रेन के 35 शहरों पर मिसाइलें दागी यूक्रेन ने जबाबी हमला किया बिल्डिंग से ड्रोन टकराया।

■ 27 अगस्त

- राज्यसभा में 12 सीटें में से 11 सीटे एन.डी.ए. ने जीती। इस तरह से एन.डी.ए 112 सीटें हो गई।

- आई.सी.सी के जयशाह के निर्विरोध अध्यक्ष बने।

- श्रीलंकाई नौ सेना ने 8 भारतीय मछुओं को गिरफ्तार किया।

■ 28 अगस्त

- राट्पति दुर्पदी मुर्मू ने कहा यौन अपराधों को हम जल्द भुला देते हैं ये एक घिनौनी बीमारी है।

- झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने झामुमों से इस्तीफा दिया।

- हल्दवानी के 55 दंगा आरोपियों की हाईकोर्ट से जमानत मिली।

■ 29 अगस्त

- गुजरात में बाढ व भारी वर्षा से 28 लोग मरे।

- अवामी लीग के नेता इशाक खान का शव सड़ी गली हालात में मेघायल में मिला।

- सतना (म.प्र.) 50 गायों को उफनती नदी में धकेलने से 20 गायों ने दम तोड़ा। नाबालिग सवहित 4 लोग गिरफ्तार हुये।

■ 30 अगस्त

- पालघर: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सिंधूदुर्ग के राजकोट किले में छत्रपति शिवाजी की मूर्ति गिरने पर माफी माँगी।

- अवनि लखेरा ने पैरालम्पिक में दो गोल्ड जीतने वाली पहली महिला बनी।

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा स्त्रीधन की मालकिन महिला पिता भी वापिस नहीं माँग सकता।

■ 31 अगस्त

- रूबिना फ्रांसिस ने पैरालम्पिक में कांस्य पदक जीता।

- मणिपुर: बीजेपी प्रवक्ता माइकल लामजांग के पैतृक आवास को जलाया।

- हिमाचल में भूस्खलन से 72 सड़के बंद हुई।

इसे भी जानिये

संविधान के कुछ महत्वपूर्ण अनुच्छेद

अनुच्छेद-1	यह घोषण करता है कि भारत राज्यों का संघ है।
अनुच्छेद-3	संसद विधि द्वारा नये राज्य बना सकती है तथा पहले से अवस्थित राज्यों के क्षेत्रों सीमाओं एवं नामों में परिवर्तन कर सकती है।
अनुच्छेद-5	संविधान के प्रारंभ होने के समय भारत में रहने वाले वे सभी व्यक्ति यहाँ के नागरिक होंगे, जिनका जन्म भारत में हुवा हो, जिनके पिता या माता भारत के नागरिक हों या संविधान के प्रारंभ के समय भारत में रह रहे हो।
अनुच्छेद-53	संघ की कार्यपालिका संबंधी शक्ति राष्ट्रपती में निहित रहेगी।
अनुच्छेद-64	उपराष्ट्रपती राज्यसभा का पदेन अध्यक्ष होगा।
अनुच्छेद-74	एक मंत्री परीषद होगी, जिसके शीर्ष पर प्रधानमंत्री रहेगा, जिसकी साध्यता एवं सुरक्षा के आधार पर राष्ट्रपती अपने कार्य संपन्न करेगा। राष्ट्रपती मंत्री परिषद के लिये किसी सलाह के पूर्ण विचार को पश्चात दी गई सलाह के अनुसार वह कार्य करेगा। इससे संबंधित किसी विवाद की परीक्षा किसी न्यायालय नहीं की जायेगी।
अनुच्छेद-76	राष्ट्रपती द्वारा महान्यायवादी की नियुक्ति की जायेगी।
अनुच्छेद-108	यदि किसी विधेयक के संबंध में दोनों सदनों में गतीरोध उत्पन्न हो गया हो तो संयुक्त अधिवेशन का प्रावधान है।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोन: 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

दिशा बोध

मधुर भाषण

1. सत्पुरुषों की वाणी ही वास्तव में सुस्निग्ध होती है, क्योंकि वह दयार्द्र, कोमल होती है और बनावट से रहित होती है।
2. औदार्यमय दान से भी बढ़कर सौन्दर्य वाणी की मधुरता, दृष्टि की स्निग्धता और स्नेहार्द्रता में है।
3. हृदय से निकली हुई मधुर वाणी और ममतामयी स्निग्ध-दृष्टि में ही धर्म का निवास है।
4. जो मनुष्य सदा ऐसी वाणी बोलता है, जो सबके हृदय को आह्लादिक कर दे, उसके पास दुःखों की अभिवृद्धि करने वाली दरिद्रता कभी न आयेगी।
5. नम्रता और प्रिय संभाषण-बस ये ही मनुष्य के आभूषण हैं, अन्य नहीं।
6. यदि तुम्हारे विचार शुद्ध तथा पवित्र हैं और तुम्हारी वाणी में सहृदयता है, तो तुम्हारी पापवृत्ति का क्षय हो जाएगा और धर्मशीलता की अभिवृद्धि होगी।
7. सेवाभाव को प्रदर्शित करने वाला विनम्र-वचन मित्र बनाता है तथा बहुत-से लाभ पहुँचाता है।
8. वे शब्द, जो सहृदयता से पूर्ण और क्षुद्रता से रहित हैं, इस लोक तथा परलोक दोनों सुख पहुँचाते हैं।
9. श्रुतिप्रिय शब्दों का माधुर्य चखकर भी मनुष्य क्रूर शब्दों का व्यवहार करना क्यों नहीं छोड़ता ? क्योंकि उसकी दुर्गति निश्चित है।
10. मीठे शब्दों के रहते हुए भी जो मनुष्य कड़वे शब्दों का प्रयोग करता है, वह मानों पके मीठे फलों को छोड़कर कच्चे कटु फल खाता है।

पुण्य, कब, कैसे

✻ बाल ब्र. सरोज दीदी, सागर (म.प्र.) ✻

पुण्य की व्याख्या करते हुये आचार्य पूज्यपाद स्वामी सर्वार्थसिद्धि ग्रंथ में लिखते हैं।

पुनाति आत्मानं पूयतेऽनेनेति वा पुण्यम् (सर्वार्थसिद्धि) 6/311

जो आत्मा को पवित्र करता है या जिससे आत्मा पवित्र होता है वह पुण्य है जैसे साता वेदनीय आदि।

आचार्य कुन्द कुन्द स्वामी अध्यात्म के रसिक अध्यात्म का अनुभव करने वाले जिन्होंने आत्म तत्त्व के अलावा यह जीव आत्मा में निरन्तर नहीं रह सकता। क्योंकि उत्कृष्ट ध्यान भी अन्तर्मुहूर्त से ज्यादा नही टिक सकता। जब अन्तर्मुहूर्त के बाद बाहर आता है तो जीव पुण्यमय होते हुये शुभ कर्म का आश्रव करता है।

पंचास्तिकाय जैसे महान ग्रंथ में कुन्दकुन्द स्वामी पुण्याश्रव की चर्चा करते हुये कहते हैं कि यह रागो जस्स पसस्थो अणु कम्ण संसिदो य परिणामो।

चित्तम्हि णत्थि कलुषं, पुण्णं जीवस्थ आसवदि पुण्याश्रव के कारणों को स्पष्ट करते हुये कहा गया कि प्रशस्त राग, अनुकम्पा से सहित परिणाम, और चित्त में कलुषता का अभाव। यह तीन शुभ भाव यह जीव के पुण्य कर्म के आश्रव के कारण हैं। और इन परिणामों से जीव पुण्य का रूप होता है। पंच परमेष्ठियों से पूर्ण अनुराग होना प्रशस्त राग है।

अनुकम्पा जो दया से युक्त परिणाम है। जिस जीव के पर के दुख से स्वयं का जीव कंप जाता है। सब जीवों के सुख का भाव करता है। और जिसके जीवन से कलुषता का अभाव है वह जीव पुण्य कर्म का आश्रव करता है। कौन या उपयोग किस कर्म का कारण है यह चर्चा करते हुये कुन्दकुन्द स्वामी पंचास्तिकाय ग्रंथ में लिखते हैं कि

उपयोगो जदि हि सुहो पुण्ण जीवस्स संचयजादि।
असुहो वा तथं पावं तेसिमथावे चयमत्थि।।

यदि जीव का शुभ उपयोग होता है तो जीव के पुण्य कर्म का संचय होता है।

यदि जीव शुभ परिणाम करना चाहता है तो शुभ के आश्रय भूत पंचपरमेष्ठी की आराधना आवश्यक है। क्योंकि मार्ग या तो सराग होगा या वीतराग होगा पर वीतराग का अवलम्ब स्वयं में ज्यादा समय टिक नहीं सकता। इसलिये पंचपरमेष्ठी का अवलम्बन आवश्यक होगा। ऐसा शुभोपयोग से युक्त होगा।

शुभोपयोगी श्रमण के लिये कुन्द स्वामी प्रवचनसार की गाथा 46 में अरहंतादिषु भत्ती वच्छलदा पवयणाभिजुत्तेसु विज्जय जदि सायण्णे सा सुह जुत्ता हवे चरिया मुनि अवस्था में श्रमण अरहंत आदि में शक्ति, साधर्मी में वात्सल्य आदि भाव रखता है।

शुभोपयोगी श्रमण की प्रवृत्ति के बारे में प्रवचनसार के चारित्र अधिकार में कुन्द कुन्द आचार्य कहते हैं कि पूज्य मुनियों की वन्दना करना नमस्कार करना आते हुये को देखकर उठकर खड़ा होना, जाते समय उनके पीछे-पीछे गमन करना उनके श्रम को दूर करना यह सराग चर्या में निंदित नहीं है।

ऐसा श्रमण लोक का निस्तारक कहा है क्यों सराग चर्या में यह आवश्यक है जब प्रवृत्ति करते ही हैं तो दंसणज्ञान का उपदेश देना शिष्यों का संग्रह अनुग्रह करना। जिनेन्द्र भगवान की आराधना का उपदेश देना। यह सब शुभोपयोगी मुनि की प्रवृत्ति है। शुभोपयोगी मुनि वैयावृत्ति करते हुये अगर लौकिक जनों से संभाषण भी करता है। तो भी निषेध नहीं है। यह सभी कार्य पुण्य के कारण हैं जो श्रमण के लिये पुण्य के कारण हैं।

जब दसवें गुणस्थान तक कर्म का आश्रव होता है तो पाप के आश्रव से बचने की प्रेरणा दी गई। और शुभ में प्रवृत्ति का उपदेश आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी स्वयं दे रहे हैं। अगर यह पुण्य सर्वथा हेय होता तो कुन्दकुन्द जैसे आचार्य चारित्र अधिकार में श्रमणों को शुभोपयोग रूप प्रवृत्ति का उपदेश नहीं देते।

वे जानते थे कि यदि शुभापयोग मय प्रवृत्ति का उपदेश नही दिया गया तो फिर अशुभोपयोग होगा शुद्धोपयोग में प्रवृत्ति अधिक समय नहीं रहा जा सकता इसलिये इसी बात को स्पष्ट करते हुये कहा हैं। प्रवचनसार चारित्र अधिकार गाथानं

असुहोपयोग रहिदा सुद्युवजुत्ता सुहोवतुत्ता वा
णित्थारयंति लोगं तेसु पसत्थं लहदि यत्तो।

अशुभोपयोग से रहित शुद्धयोपयोगी हो या शुद्धोपयोग श्रमण दोनों ही लोक को, भव्य पुरुषों को निस्तारक होते हैं। उनकी भक्ति करने वाला मनुष्य प्रशस्त फल को प्राप्त होता है।

इसी भाव को स्पष्ट करते हुये भाव पाहुड में भी कहा है।

जिणवर चरणांम्बुरुह णंमति जे परम भत्ति रायेण।
ते जम्म वेलि मूलं खणंति वर भाव सत्थेण ।। 153 गाथा

इस गाथा में कुन्द कुन्द स्वामी ने कहा है कि जो भव्य जीव उत्तम भक्ति और अनुराग से जिनेन्द्र भगवान के चरण कमल को नमस्कार वे उस भक्तिमयी उत्तम शुभ भाव रूपीहथियार के द्वारा संसार रूपी कर्म बेल (लता) को जड़ से नष्ट कर देते हैं। इसी भाव को स्पष्ट करते हुयेकहा है कि -

अरहंत णमोकारों भावेणय जो करेदि।
सो सव्व दुक्ख मोक्खं पावदि अचिरेण ।। प्रवचनसार

इस गाथा में स्पष्ट कहा है कि जो भक्त भाव पूर्वक अरहंत को नमस्कार करता है, वह शीघ्र

ही णमोकार के शुभ भाव से सम्पूर्ण दुखों से युक्त होता है। अर्थात् मोक्ष को प्राप्त होता है।

उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि जिनेन्द्र की भक्ति को परम राग के साथ कहा है जितना राग भगवान के प्रति होगा उतना ही विषयों से अनुराग घटेगा। यह राग संसार की परम्परा को नष्ट करने में सक्षम होगा। इसलिये भगवान अरहंत या पंचपरमेष्ठी की शक्ति श्रेष्ठ भाव पूर्वक करना चाहिये। हेय भाव से अगर करेंगे तो पुण्य का बंध न होकर पाप का बंध होगा जो अनंत संसार का कारण होगा।

अरहंत पद की प्राप्ति तीर्थंकर पद की प्राप्ति के लिये। **पुण्ण फला अरहंतां** कहा गया है। यदि अरहंत पद को प्राप्त होगा।

जिने भक्तिं, जिने भक्ति, जिने भक्ति दिने-दिने-सदामेस्तु सदामेस्तु सदामेस्तु भवे-भवे। जब तक मुक्ति न हो तब तक जिनेन्द्र भगवान की भक्ति बनी रहे। हमारा हृदय उनके चरणों में लीन रहे।

ऐसा पूज्यपाद स्वामी भगवान से प्रार्थना करते हुये कहते है। कुन्द कुन्द स्वामी जैसे आचार्य दस भक्तियों के माध्यम से जिनेन्द्र के गुणों कर गान करते हैं। क्योंकि अशुभोपयोग से बचने का दूसरा साधन नही है। इसलिये आत्मा को पवित्र करने वाला पुण्य है और जब तक शुद्धोपयोग न हो तब तक शुभोपयोग मय यह आत्मा बना रहे। तभी शुद्धयोपयोग की प्राप्ति होगी। और उससे ही केवल ज्ञान की प्राप्ति होगी।

कविता

सत् शिव सुन्दर मुक्ति द्वारा

संस्कार फीचर्स

चिंतामणि प्रभु पार्श्वनाथ का, अनुपम मंदिर शुभ प्यारा
वाशिम नगरी की शोभा है, अमीझरा आदि द्वारा।
देव पेठ में भव्य जिनालय सुंदर है।
करूणा केतन भव्य हितैषी, जिनशासन का मंदिर है।
दो चैत्यालय इसी नगर में, भविजन को तारन हारा ।।
सुनो सुनो अब श्रावक सारे, धर्म नगरिया वाशिम है।
इसी जिले में शिरपुर नगरी, पार्श्वनाथ का शासन है।
अंतरीक्ष प्रभु पार्श्वनाथ का, तीरथ जग में है न्यारा ।।
निर्ग्रंथों की महिमा गाये, मूल दिगम्बर तीर्थ है।
युगों-युगों का अतिशयकारी, संकट मोचक तीर्थ है
सत्य विजय की राह देखता, सत् शिवसुंदर मुक्ति द्वारा।

सदी के महानतम संत आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज

❋ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ❋

अध्यात्म सरोवर के राजहंस साधना के सुमेरु, संत शिरोमणि, महाकवि आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर जी महाराज दिगम्बर जैन परंपरा के ऐसे महान संत थे, जो सही मायने में साधना, ध्यान व तपस्या से होकर आत्मकल्याण के मार्ग पर सतत अग्रसर रहे। वे पंचमकाल में चतुर्थकाल सम संत थे। महाप्रज्ञ आचार्य श्री तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुख मुद्रा प्रायः सभी का मन मोह लेती थी।

वे न केवल श्रमण संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र थे बल्कि पूरी भारतीय संस्कृति को उन्होंने अपनी साधना के द्वारा गौरवान्वित किया। आचार्य श्री की पावन वाणी सत्यं, शिवं सुन्दरं की विराट अभिव्यक्ति तथा मुक्ति द्वार खोलने में सर्वथा सक्षम थी। उन्होंने अपनी अनवरत साधना से जीवन को कलात्मकता को भारतीय संस्कृति के अनुरूप अभिव्यक्त किया।

आचार्य श्री अपनी आगमोक्त चर्या और आध्यात्मिक चिंतन के द्वारा निरंतर आत्मसाधना व प्रभावना में संलग्न रहे। आप श्रमण परंपरा के विलक्षण और तपस्वी संत थे। आपने समाज और संस्कृति को एक नई दिशा दिखाई थी।

आचार्य श्री मात्र जैनों के ही नहीं, जन-जन की आस्था के केन्द्र थे। इनकी प्रेरणा से हजारों गौवंश की रक्षार्थ दयोदय गौशालाएं संचालित हो रही हैं। हिंदी भाषा अभियान, इंडिया हटाओं भारत लाओ अभियान, हथकरघा, स्वालंबन रोजगार, स्वदेशी, शिक्षा स्वास्थ, संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी का बेजोड़ साहित्य, हाइकू तथा 507 चेतन कृतियों का निर्माण आदि उनकी श्रेष्ठतम साधना उन्हें संत शिरोमणि कहलाने के लिये काफी है।

आचार्य श्री का व्यक्तित्व अत्यंत गंभीर था, रत्नत्रय के धारी मोक्षमार्ग के पथिक थे। वे साधना के हिमालय थे। वे सत्य की साधना के साथ प्रयोग करते रहे।

आचार्य श्री के दर्शन पाकर लगता था कि न जाने कितने जन्मों का पुण्य आज फलित हो रहा है। आचार्य श्री चलते फिरते तीर्थ और विश्वविद्यालय थे। उनके तेज दमकते हुये आभामंडल और मुस्कान को देखकर हजारों लोगों के दुख दूर हो जाते थे। उनके दर्शन जो भी करता था वह धन्य हो जाता था। उनकी दिव्य देशना में जो अमृतवाणी झरती थी उसे पान कर हजारों लोगों की प्यास बुझती थी। आचार्य श्री की हर चर्या अतिशय सी दिखती थी।

उनकी मंगल वाणी खिरते समय जो शांति का अमृत बरसता था, चारों ओर एक अजीब सा सन्नाटा, मात्र आचार्य श्री की वाणी अनुगूंज सुनायी देती थी। सचमुच अद्भुत और निराले संत थे आचार्य श्री।

बेमिशाल, अद्भुत विराट व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व के धनी आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज जैसे संत शताब्दियों में होते हैं। उनके जाने से जो शून्यता हुई है उसकी भरपायी संभव नहीं है। वे स्वयं अपने आप में एक दर्शन थे। आचार्य श्री देह रूप में हमारे बीच नहीं है। अब हमारा दायित्व बनता है कि आचार्य श्री के दिखाए रास्ते पर चलने का संकल्प लें। कुछ कार्य , जो

होना चाहिये वह हैं - मेरा अनुरोध है जल्दी ही एक विस्तृत आचार्य विद्यासागर विनयांजलि ग्रंथ निकाला जाए जो ऐतिहासिक दस्तावेज होगा। इसमें सभी जैन जैनेतर संतों के साथ सभी राजनेताओं के लेख, विचार तथा विधानसभा, लोकसभा आदि में हुई श्रद्धांजलि कार्यक्रम आदि की डिटेल अवश्य दी जाये ताकि ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में आगे काम आ सके। कुंडलपुर में आचार्य श्री नाम से विश्वविद्यालय खोला जाये उसमें आचार्य श्री के ग्रंथों पर अनुसंधान हो। आचार्य श्री के नाम पर सरकारी भवनों , मार्गो, ट्रेनों, बस स्टेण्ड, अस्पताल आदि के नाम हो इसके प्रयास किये जायें। आचार्य श्री के साहित्य को सरकारी पाठ्यक्रमों में शामिल करने के प्रयास हों। आचार्य श्री के नाम पर शोध संस्थान सरकारों द्वारा स्थापित हों, उनके नाम पर सरकारों द्वारा पुरुस्कार दिये जाये।

पट्टाचार्य पद पर पूज्य आचार्य श्री की भावनानुसार परम पूज्य मुनि श्री समयसागर जी महाराज को 16 अप्रैल को कुंडलपुर में विधि विधान के साथ विराजमान किया गया है। निश्चित ही अब परम पूज्य आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के मार्गदर्शन, निर्देशन में आचार्य श्री के अधूरे कार्य पूरे होंगे।

उनकी कमी समाज को, इस भारत को निश्चित रूप से खलेगी। इस भारत के लिये तो रत्न के समान थे, उनकी वाणी व उपस्थित सदा रहेगी और हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देगी। उनके संदेश, आदेश बताये हुये मार्ग पर चलना, ये हम सबका कर्तव्य है। उनके जीवन का अनुभव व ज्ञान सदा भारतवासियों के बीच में रहेगा। विश्व को उनकी शिक्षाओं का अनुसरण करना चाहिये।

अंतिम श्वांस तक उन्होंने अपने कठोर साधनाव्रत का निर्वाह किया। लाखों लोग उन आदर्शों पर आज चल रहे हैं, उनके चले जाने का दुःख तो सभी को होना स्वाभाविक ही है। उनके द्वारा दिग्दर्शित का मार्ग पर हम सभी लोग और अधिक दृढ़ता और समर्पित भाव से निरंतर आगे बढ़ते रहें तथा उन आदर्शों को तीव्र गति प्रदान करें।

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के विचार प्रकाश स्तंभ बनकर सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। दीक्षा दिवस पर कोटिशः नमन।

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय हुआ सम्मानित

जयपुर- वरिष्ठ उपाध्याय (कक्षा-12) परीक्षा परिणाम में सर्वोच्च सूचकांक प्राप्त होने पर श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय को राजस्थान सरकार द्वारा राज्य स्तरीय सम्मान समारोह मे सम्मानित किया। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर से महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार जैन ने सम्मान ग्रहण किया।

कहानी

कल्लू चाय वाला

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

दोपहर के दो बज रहे थे 4 अप्रैल का दिन था बाजार में शादी की खरीदी करने वालों की रेलम पेल लगी थी। तपती दोपहरी में जहां लोग बाहर निकलने से डरने थे वही चाय पीने वालों की मांग बढ़ती चली जा रही थी। ज्वेलरी और कपड़ों की दुकान पूरी भरी हुई थीं, लोग शादी-विवाह की सामग्रियां जोर-शोर से खरीद रहे थे, बीच-बीच में विद्युत मंडल वालों को भी गालियां मिल रही थी, क्योंकि गरम दुपहरी में जब बिजली चली जाती थी तो व्यापारी और ग्राहक दोनो विद्युत मंडल वालों को खुब जमकर कोसते थे। इसी बीच में बुंदेलखंड की परंपरा अनुसार दुकानदारों को अपने ग्राहकों को स्वागत करना भी बहुत जरूरी होता है, फिर खुरई जैसे कस्बे में चाय के बिना स्वागत अधुरा माना जाता है, कितनी भी मिठाई, ड्रायफ्रुट्स, पकवान खिला दी जायें, तो भी यदि चाय अंत में पीने को न दी जाये तो स्वागत अधूरा ही माना जाता है।

कल्लु अपने स्टोव्ह को थोड़ी भी राहत नही दे पा रहा था। वो तीन केटलिया पूरी भरकर दोनों हाथ में लेकर चलता था और साथ गिलास का स्टेण्ड। हाथ में तीन केटलिया लेकर चलना कल्लु का कमाल ही माना जाता था। खुरई के कपड़ा बाजार और सराफा में कल्लु के सिवाय किसी की चाय कोई पसंद नहीं करता था। कल्लु की दुकान सुबह 5 बजे से खुल जाती थी और रात 11बजे तक भी बंद नही हो पाती थी। ग्राहाकों के ताँते लगे रहते थे। कल्लु का एक ही बेटा था उसका नाम अंकुश था परंतु वो पुर्ण रूपेन निरंकुश था। एक ही बेटा होने से कल्लु को प्राण से प्यारा था परंतु वह जन्म से ही जिद्दी किस्म का था। पढ़ने लिखने में होशियार और अच्छी नौकरी पाने की तमन्ना रखता था। कल्लु भी कहता था कि मेरा बेटा मेरा जैसा चाय नहीं बेचेगा। उसको हमें कुछ बड़ा पदवीधारी अधिकारी बनाना है। अंकुश अपने पिताजी की बाते

सुनकर खुब फूल जाता था और वह जमीन की जगह आसमान में उड़ने लग जाता था। जब भी अंकुश अच्छे नंबर से पास होता था तो कल्लु अपने बेटे का उत्साह बढ़ाने के लिये उसको कुछ ना कुछ इनाम जरूर देता था और अंकुश मिले हुये रूपयों से पार्टी मनाने लगा था। अंकुश को पार्टी मनाने की इतनी अधिक आदत पड़ चुकी थी हर चौथे पांचवे दिन पार्टी मनाने लगा था। कल्लु को जितना भी पैसा मांगता था कल्लु को उतने पैसे देना पड़ता था वरना वह ड्रामा करता था। कभी-कभी तो वह बड़ी-बड़ी धमकिया देने लगा था। उसकी धमकी के आगे कल्लु को झुकना पड़ना था परंतु कल्लु के पास अंकुश का इलाज था।

खुरई में एक साधना नाम का उभयलिंगी शख्स था जो रोज कल्लु के दुकान पर ही बैठता था। साधना मोटर साइकिल में भी बुलेट पर चलती थी, साधना की पुरे मार्केट में भी गुंडागर्दी चलती थी। साधना के सामने अच्छे-अच्छे लोग घुटना टेक देते थे, साधना की वाणी में भी बहुत मिठास थी तथा साधना झिरो कराटे में भी ब्लैक बेल्ट थी। खेल कुद में साधना ने पुरे खुरई में किर्तीमान स्थापित किया था। साधना अपने विद्यार्थी जीवन में होशियार विद्यार्थी मानी जाती थी। लोग कहते थे साधना ने जितना संघर्ष किया उतना संघर्ष कोई भी नहीं कर सकता है। युवकों को अच्छी प्रेरणा देने का काम साधना करती थी। नगर में होने वाले कोई भी रचनात्मक कार्य में साधना का नंबर प्रथम रहता था। साधना स्वाध्याय भी खुब जबरदस्त करती थी। साधना जोर से बोलना भी जानती थी और जोरदार तर्क देना भी जानती थी। उसे सबको चुप करना भी आता था। साधना की प्रतिभा हर क्षेत्र में थी। उसकी बहुमुखी प्रतिभा के सामने सभी नतमस्तक हो जाते थे।

आज जब कल्लु चाय बांट कर के लौट रहा था तभी बीच बाजार में अंकुश ने कल्लु को रोका बोला पापाजी कहां जा रहे आप कल्लु ने कहा बेटा दुकान पर जा रहा हुँ अंकुश ने कहां आज मेरी पार्टी है और पार्टी में कम से कम 100 रूपये खर्च होंगे। कल्लु ने कहाँ बेटा अभी 4 दिन पहले ही पार्टी की थी और आज फिर तुम पार्टी की बात कह रहे हो। अंकुश ने कहा हाँ पापाजी मैं क्या करूं मे रे दोस्त चिट डालकर पार्टी करने वाले का नाम तय करते हैं और आज फिर मेरा नाम पार्टी करने वालों में आ गया है और मुझे पार्टी करना ही पड़ेगी। कल्लु ने कहा कहा कि अंकुश तू जितना खर्च कर रहा है उतने खर्च करने की क्या अपनी हैसियत है, और जो हैसियत से ज्यादा खर्च करेगा क्या वह मिट नहीं जायेगा?

मुझे तेरे पढ़ाई का भी पुरा खर्च उठाना है। मैं हर चार दिन में पार्टी करने के लिये पैसे नहीं दे सकता। अंकुश ने पैसे नही देने की बात सुनकर अपना सुर बदल दिया और वह बीच रास्ते में ही कल्लु को अपमानित करने लगा। देखते ही देखते लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई। सब लोग कल्लु और अंकुश

का संवाद सुनकर चटकोरे ले रहे थे। कई लोग कह रहे थे जिसकी एक ही औलाद होती है उसको तो यह कष्ट झेलना ही पड़ेगा क्योंकि प्रायः लोग अकेली संतान को इतना लाड़ प्यार देते हैं कि उसे अच्छे संस्कार देना ही भुल जाते हैं। अकेली संतान के लिये आदमी के पास देने को पैसा तो होता है पर आदमी अपने संतान में व्यसनमुक्ति के संस्कार देने में समय नहीं देता है, परिणाम यह आते हैं जो हम सामने देख रहे हैं। कल्लु के कानों तक लोगों की आवाज जा रही थी और कल्लु यह सोचने लगा कि सचमुच में अंकुश को बिगाड़ने में और इस स्थिति तक लाने में कोई दूसरे का हाथ नहीं है। इस सबके लिये हर प्रकार से जिम्मेदार मैं ही हूँ परंतु जो लोग तमाशा देख रहे हो वो लोग मेरी इस स्थिति पर हंस सकते हैं, ताना मार सकते हैं परंतु कोई भी अंकुश को समझा नहीं सकता है। कल्लु ने कहाँ बेटा अंकुश अभी तुम पार्टी को आधा कर दो और मेरे से 50 रूपये लेकर अपनी पार्टी पूरी कर लो। अंकुश झिड़की देते हुये बोलो पापाजी तुम में अकल है या नहीं। इस महंगाई के जमाने में 50 रूपये में क्या पार्टी होगी, आप ही खुद बताओ। मेरी इज्जत की दीवाला निकालने की बात क्यों सोच रहे हो सीधे तरीके से 100 रूपये निकाल दो तो अपना काम तुम करो और मेरा काम मैं करूँ।

कल्लु को भी अंकुश की बात पर गुस्सा आ गया। कल्लु बोलो तू कितना भी तमाशा कर ले आज मैं तुझे 50 रूपये से ज्यदा नहीं दूंगा। अंकुश भी कल्लु की बात पर बिखर गया। और बोला पापाजी मैंने भी महाभारत को देखा है बुढ़े लोग सठिया जाते हैं और आप भी सठिया गये हो। मुझे भी कंस जैसा कुछ करना होगा। जैसे की राजा अपने पिता के मुकुट और राजगद्दी न देने पर अपने पिता का मुकुट अपने हाथ से निकालकर अपने सिर पर रख लिया था और वह राजा बन गया था। राज्य अधिकारी बनने के बाद आपको मालुम होगा की राजा ने अपने पिता को कारागृह में डलवा दिया था। अंकुश ने कल्लु के जेब में हाथ डालकर उनके पुरे पैसे छीन लिये और उनमें से 100 रूपये निकालकर बाकी के पैसे कल्लु को वापिस कर दिये। जब अंकुश यह हरकत कर रहा था तब साधना भी वहाँ पहुँच गयी और वह चुप रही। जब पुरी भीड़ एक-एक करके खिसक गई तक साधना ने अंकुश की तरफ इशारा किया और अंकुश को अपनी गाड़ी के पीछे बैठने को कहा। अंकुश साधना के गाड़ी के पीछे बैठ गया, साधना अंकुश को तहसील कार्यालय के पीछे ले गई।

तहसील कार्यालय के पीछे बरगद के नीचे बने चबुतरे पर बैठ गई। साधना ने अंकुश से साथ में बैठने को कहा, साधना ने अंकुश से कहा की अंकुश मैं तेरे से कहूँ कि 5 रूपये तू कुएँ में डाल दे तो वया करेगा? अंकुश बोला आपके कहने पर में 5 रुपये नहीं 500 रूपये डाल दूंगा। साधना ने कहा

तो एक काम कर सामने जो महेश खडा है उसको बुलाकर ला। अंकुश तुरंत उठा और महेश को बुलाकर लाया। महेश तहसील में माली का काम करता था। महेश साधना को अपना मार्गदर्शक मानता था। महेश अपने झाड़ों में पानी दे रहा था, तभी अंकुश ने महेश के कंधे पर हाथ रखा और कहा महेश भैया आपको साधना जी बुला रही हैं, तो महेश ने कहा उनसे कहो मैं चार-पाँच झाड़ों को पानी देकर आता हुँ। महेश अपने पानी देने के काम में लगा रहा। जब पानी देने का काम पुरा हुआ तब महेश ने अपने पैरों का रुख साधना जी की ओर किया। साधना के करीब पहुंच कर के राम-राम बोलकर महेश ने कहा फरमाये साहब मुझे क्या आदेश है?

साधना ने कहा तुम 5 रूपये निकालो इस कुए में डाल दो। महेश बोला आपको क्या हो गया है? मैं अपनी मेहनत की कमाई का पैसा कैसे डाल सकता हूँ कुएँ में? मैं कोई हफ्ता वसुली थोडी करता हूँ, जो मैं अपना पैस कुएँ में डाल दूँ। अपना पैसा कुए में वही डाल सकता है जो जुआ सट्टा में जीता है या फिर उसके पास फिरौती का पैसा आता है। मेहनत का पैसा में आपके कहने पर कुएँ में नहीं डाल सकता। हाँ आप मुझे बताये की कुएँ में डालने की आवश्यकता क्या है। साधना ने कहा देख भाई महेश तू मेरी हर बात मानना है पर आज तुझे ये क्या हो गया जो तू आज मेरी 5 रूपयों की भी इज्जत नही रखी। महेश बोला मैं 5 रूपये नहीं 500 रूपये कहने पर खर्च कर सकता हूँ पर कुएँ में डालने का प्रयोजन, मेरे ध्यान में आना चाहिये। तब साधना ने कहा कि देखो महेश मैंने उस अंकुश से 5रूपये कुएँ में डालने को कहा तो इसने कहा मैं 5 नहीं 500 रूपये मैं कुएँ में डाल सकता हूँ और तुमने कहा कि मैं 5 नहीं 500 रूपये आप पर खर्च कर सकता हूँ। तुम दोनों के बात का अंतर मैं समझ रही हूँ। तब अंकुश के तरफ ईशारा करते हुये साधना ने कहाँ देखो भाई अंकुश किसकी बात सही है? अंकुश बोला मैं समझ गया मेहनत की कमाई का पैसा कोई भी कुएँ में नहीं डाल सकता है। हरामखोरी का पैसा कोई भी कुएँ में डाल सकता है। साधना जी अब आपको मुझे समझाने की कोई जरूरत नहीं, आज के बाद में मेरी सारी पार्टिया बंद और अब में अपनी पैसे की किसी भी तरह बर्बादी नहीं करूंगा। साधना अंकुश को गाड़ी पर बिठाकर फिर से कल्लु चाय वाले की पास ले गयी। अंकुश ने कहा पापा मैं आज के बाद आपके पैसों की बर्बादी नहीं करूंगा। और मैं आपके हर काम में सहयोग करूंगा। और में आपकी दुकान पर भी बैठूंगा। साथ ही साथ पढ़ाई भी करूंगा और आपके सपने को साकार भी करूंगा। कल्लु ने साधना से कहा आपने मेरे बेटे को सही रास्ता दिखाया इस उपकार को कभी नहीं भुलेगा **कल्लु चाय वाला**।

हमारे गौरव

अमर शहीद भारमल

सन्मती (मराठी) के अगस्त 1957 के अंक में प्रकाशित संक्षिप्त लेख के अनुसार 16 दिसम्बर 1942 को पुलिस की गोली से तत्काल ही अमर शहीद भारमल को देहवसान हो गया था।

Who's Who of Indian martyrs, Voi I Page 43 के अनुसार भारमल का जन्म 1927 के लगभग ग्राम मुरगुड, ता. कागल जिला कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में हुआ। उनके पिता का नाम श्री रामचंद्र भारमल था। वे कक्षा 7 के विद्यार्थी थे, तभी उन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। उन्होंने कागल की ट्रेजरी पर लूटने के लिये हमला किया, पुलिस द्वारा पकड़े गये और उसी दिन पुलिस की गोली से मारे गये। यह घटना 13 दिसम्बर 1942 की है।

इतनी कम आयु में इतनी देशभक्ती देशप्रेम सच में सराहनीय है। ऐसे देशभक्त वीर को बार-बार प्रणाम है। धन्य है ऐसी देशभक्ति धन्य है ऐसे भारत माता के वीर सपूत।

कविता

ईश्वर ने यह संसार बनाया कैसे

✻ वीरेन्द्र भूपत ✻

हर आदमी कहता है, ईश्वर ने यह संसार बनाया है।
पर मेरी समझ में नही आता, यह कैसा संसार रचाया है।
जब ईश्वर कुछ कर्त्ता घर्त्ता नहीं ,
तो यह कर्त्ता घर्त्ता वाला संसार कैसे रचाया
जब ईश्वर पर सुखी है, तो यह उलझने परेशानी
दुखी करने वाला संसार बनाया कैसे
जब भगवान सब जानता है,
तो अज्ञानी बगैर पढ़े लोगों को कैसे बनाया
जब भगवान दयालु है तो, काटने पीटने वाले लोग कैसे बनाये
जब भगवान सही न्याय करता है
तो आज अन्याय लूटने वाले लोग कैसे बनाये
जब भगवान वीतरागी है तो
तो आज रागी द्वेषी लोग बनाये कैसे
जब भगवान सबको देने वाला है
तो यह गरीब परेशान लोग बनाये कैसे
ऐसा ईश्वर को कहने वाले लोग ईश्वर ने बनाये कैसे

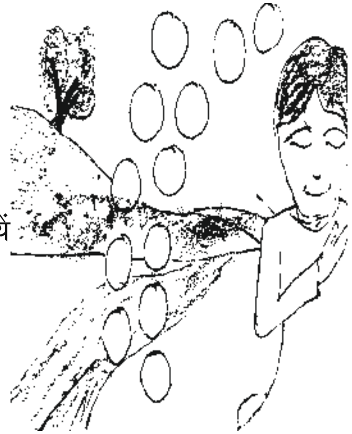

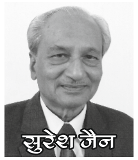

क्रमांक-43 वरिष्ठ नागरिक

जब डॉक्टर से मिलने जाएँ

बुजुर्गावस्था में जब शरीर कमजोर हो जाता है, तो उसे अनेक बीमारियां घेर लेती है। ऐसे में देर सवेर डॉक्टर से मिलने जाना ही पड़ता है। कई बार ऐसा होता है कि आप डॉक्टर से तो मिल आते हैं, लेकिन तसल्ली नहीं होती। कुछ सवाल ऐसे होते हैं, जो दिमाग में तो होते हैं, लेकिन डॉक्टर के पास जाकर दिमाग से उतर जाते हैं। आप डॉक्टर से मीटिंग का पूरा फायदा कैसे उठाएं, आइये जानते हैं।

पहले खुद क्लीयर हो:- जब कभी भी डॉक्टर से मिलने जायें, पहले खुद को क्लीयर कर लें कि आपने डॉक्टर से किस बारे में बात करनी है, आप किस बारे में जानना चाहते हैं। सेहत से जुड़े कौन-कौन से सवाल हैं, जिन्हें आप डॉक्टर से डिस्कस करना चाहते हैं। पहले से ये सब चीजें तय कर लेने से आपके सारे सवाल क्लीयर हो जायेंगे। आप कम समय में काफी कुछ पूछ सकेंगे। सबसे आसान तरीका यह है, कि आप डॉक्टर से जो कुछ भी पूछता है, उसे क्रम बार लिखकर एक लिस्ट तैयार कर ले, जो भी बात बाद में ध्यान में आये उसे भी लिस्ट में लिख लें। एक - एक पाईंट डॉक्टर से डिस्कस करें ताकि कोई बात छूट न जाये। इस लिस्ट को संभल कर रखें। दूसरी बार जब डॉक्टर के पास जयें तो दवाई खाने के बाद जो-जो फायदा हुआ है, उसे टिक कर लें, तथा जो फायदा नहीं हुआ उसके नीचे लाल लाईन लगा दे। यदि किसी दवाई ने कोई रियेक्शन किया है वह भी लिस्ट में नोट कर ले। ऐसा करने हर बार आपके सामने अपनी खुद की हिस्ट्री आ जायेगी।

फैमिली की मेडिकल हिस्ट्री जांच ले: कई बीमारियां ऐसी होती हैं , जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती हैं । इसलिये जब आप डॉक्टर से मिलने जायें, तो अपनी फैमिली हिस्ट्री पर भी एक नजर जरूर डालें। देखें कि जो आपके करीबी रिश्तेदार हैं, उनमें से किसी को कोई ऐसी बीमारी तो नहीं, जो आपकी हैल्थ पर अपना असर डाल सके। जैसे कि शूगर, टी.वी इत्यादि।

मैटाबॉलिक सिंड्रोम का रिकार्ड रखे:- मैटाबॉलिक सिंड्रोम होने पर कमर का नाप बढ़ जाता है। अगर सर्दी में कमर का नाप 40 इंच और औरतों में 35 इंच से ज्यादा हो, तो वह मैटाबॉलिक सिंड्रोम का शिकार होते हैं। यह सिड्रोम डायबिटीज और कार्डियों वैसक्यूलर बीमारी का खतरा बड़ा देता है। इसे लिक्विड प्रोफाईल, कैलेस्ट्रॉल, ब्लड शूगर, ब्लड प्रैशर रीडिंग या कमर का नाप लेकर पता किया जा सकता है। आमतौर पर डॉक्टर इसकी जांच नहीं करते, लेकिन अगर आपको इस तरफ से कोई खतरा लगे तो डॉक्टर से परामर्श जरूर करें।

पुरानी बीमारियों के बारे में बतायें:- यदि ठीक समय पर बीमारी का पता लग जाये,

तो उसका निदान करना हो जाता है। अगर अफसोस की बात है कि लोग छोटी बीमारियों की गंभीरता को समझे बिना उसे नकार देते हैं, लेकिन यह छोटी बीमारियों कई दूसरी बड़ी बीमारियों को जन्म दे सकती हैं। इन बीमारियाँ का भी जिक्र करें।

बुरी आदतों के बारे में बतायें:- आपकी दी हुई छोटी-छोटी जानकारी डॉक्टर के लिये काफी फायदेमंद हो सकती है। अगर आपको कोई बुरी आदत हे, जैसे कोई नशा बगेरा करते हैं इत्यादि, तो भले ही आप दूसरों से छिपायें, डॉक्टर को बता देनी चाहिये। हो सकता हे कि इनमें से ही कोई आदत आपकी बीमारी का कारण हो और उसे छोड़कर आप बीमारी की ही खत्म कर सकें।

कविता

उपकारी गुरु

उत्सव जैन, राजस्थान

हमें गर्व है आचार्य श्री पर, जैनों का मान बढ़ा है।
जैन संस्कृति का प्रचार कर, तीर्थों का उद्धार करवाया है ॥1॥
स्वयं चले संयम के पथ पर, कई शिष्यों को संयमी बनाया है।
आपके उपदेशों को सुनकर, विदेशों में जैन ध्वजा को फहराया है ॥2॥
आचार्य श्री के ज्ञान को देखकर, श्रावक फूला नहीं समाया है।
आचार्य श्री के उपदेशों को सुनकर, श्रावकों में काफी बदलाव आया है ॥3॥
कही व्रत कहीं उपवास श्रावक कर, अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण पाया है।
आचार्य श्री का महान उपकार, सम्पूर्ण विश्व में अहिंसामयी वातावरण बनाया है ॥4॥
संस्कारों का बीजारोपण कर, प्राचीन संस्कृति को बचाया है।
कहीं श्रावकों ने उचे पद पाकर, जीवन सफल बनाया है ॥5॥
कहीं संयम के पथ पर चलने को आतुर, सोच रहे क्या खोया क्या पाया है।
आचार्य श्री के साहित्य पढ़कर, अपने जीवन के अंधकार को मिटाया है ॥6॥
चलते फिरते तीर्थ हमारे गुरुवर, जिन्हों ने आगम को बचाया है।
आचार्य श्री का महान उपकार, जैन तीर्थों की रक्षा का बीड़ा उठाया है ॥7॥
कहीं दानियों ने दान देकर, अपना फर्ज निभाया है।
जिनवाणी का व्यापक प्रचार कर, जैन धर्म को बचाया है ॥8॥
बच्चों को नैतिक शिक्षा देकर, मर्यादा में रहना सिखाया है।
संयम का पथ देखकर, कई श्रावकों को भावों में परिवर्तन आया है ॥9॥
आचार्य श्री का महान उपकार, मातृभूमि और राष्ट्र भाषा का मान बढ़ाया है।
उत्सव जैन कहता ऋणी है हम आचार्य श्री के, सबको जीव दया का पाठ पढ़ाया है ॥ 10॥

शरीर में कैल्केरिया फास का महत्व

जिसने कैल्केरिया फास अपनाया पाये स्वस्थ विकसित काया

✻ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ✻

इसे केल्केरिया फास्फोरिका, फास्फेट आप कैल्शियम, कैल्शियम फॉस्फेट भी कहते है।

हमारे शरीर में प्रमुख रूप से 12 तत्वों में प्रमुख स्थान पर है जो शरीर के 1000 ग्राम रक्त को 0.094 का मानव नर कंकाल की हड्डियों में 57 % पाया जाता है व रक्त के वर्णहीन तरल, रक्तकणों, लार, आमाशय रस, संयोजी तन्तुओं दांतो व दूध में पाया जाता है। शरीर में 8.6 से 10.3 mg/dl तक होता है।

कार्य- 1. यह बचपन यौवन और बुढ़ापा इन तीनों अवस्था में अतयंत्र उपयोगी तत्व है जो शरीर के उचित विकास और पोषण के लिये नितांत आवश्यक है। यह श्वेत रक्तकणों का पोषण करके लाल कणों का उत्पादन करता है।

2. हड्डियों का पोषण व उन्हें ठोस बनाता है, हड्डियों के पर्दों का पोषण करता है।

3. यह नये रक्त कोष निर्माण व रक्त में जमाव क्षमता बनाने में सहयोगी है।

4. नर्म व विकासोन्मुखी तन्तुओं के लिये सर्वाधिक महत्व का तत्व है जो नवीन तन्तु निर्माण हेतु आवश्यक पोषण प्रदान करता है।

5. बच्चों के दांत निकलने समय की तकलीफ को दूर करके विकास में सहायक है।

6. शारीरिक क्रियाओं को दुरुस्त करके शरीर में रोगों के बाद अन्य औषधियों के लिये मार्ग प्रदान करता है।

7. दिल की धड़कन को नियंत्रित करता है। मसल्स के सिकुड़ने फैलने तथा तंत्रिका के कार्यों में सहायक होता है।

कमी- 1. मांसपेशियों में खिचाव, हड्डियों की बोनडेसिटी (खोखली होना) कम होना, ओस्टियोपोशेसिस (हड्डी क्षरण), सूखी त्वचा, नाखूनों का टूटना, दांतों का क्षरण दांत में दर्द, बालों का झड़ना, खून की कमी, चेहरे पर फुंसिया निकलना आदि।

2. भूख न लगना, कमजोरी होना, हृदय संबंधी बीमारिया, हार्मोन गडबडी, किडनी रोग व शरीर में विटामिन और मैग्नेशियम की कमी होना एवं शरीर में संचालित कार्यों मे व्यवधान उत्पन्न होने से अनेक कष्ट उत्पन्न होना।

अधिकता- कब्ज, पेट दर्द, किडनी में पथरी बनना, जी मचलाना, उल्टी, कमजोरी, हृदय रोगों की समस्या, समझ नहीं पड़ना।

उपचार- 1. टूटी हुई हड्डियों के सिरों के जुड़ने में देरी लगना, हड्डियों का प्राकृतिक विकास व हड्डियों के सभी रोग जो दूषित रक्त दोष के कारण उत्पन्न होते हैं।

2. मौसम में किसी प्रकार का परिवर्तन आने पर जोड़ों में दर्द, गठियावात, संधिवात के साथ ठंडक और सुन्नपन की अनुभूति, घुटनों का दर्द, पिंडिलियों में ऐठन।

3. नवयुवतियों का मासिक धर्म ठीक समय पर नही होना, रजकाल में दर्द होना, नवविवाहित जोड़ो का अधिक सहवास से शरीर क्षय होना, स्वप्न दोष, अधिक कामेच्छा होना, खून की कमी, अनिद्रा रोग नियंत्रण करता है।

4. मानसिक व्यग्रता, बच्चों के दांत धीरे-धीरे निकलने के समय तकलीफ, टांसिल बढ़ने का पुराना रोग व टांसिल में घाव हो जाना।

5. बच्चों के सम विकास की औषधिक जो दोषपूर्ण शारीरिक विकास की महाऔषधि है, अच्छा खाने पीने पर भी शरीर कमजोर होना। कद नही बढ़ता, रिकेट रोग (बच्चों का अस्थि विकृत रोग), मानसिक दृश्टि से पिछड़े बच्चे जिससे वह मोटा, थुलथुल भारी भरकम, पेट बढ़ जाना, सिर की खोपड़ी की हड्डियां पिलपिली व गर्दन अधिक लंबी होना आदि।

6. उन स्त्रियों जिनके जल्दी जल्दी बच्चे पैदा होने से अधिक देर तक स्तनपान कराने से कमजोर हो गई हो, अतिरज या सफेद पानी जाने से कमजोर हो गई हो।

7. बूढों और बच्चों का बिस्तर में अनजाने में पेशाब निकल जाना, फेफड़ों की टी.वी, डाईबिटिज, रक्त हीनता।

विशेष: 1. कैल्केरियाफास को प्राकृतिक रूप में या सूक्ष्म रूप में तैयार औषधि की शरीर ग्रहण करता है। भारी मात्रायें शरीर में दुष्प्रभाव डालकर अनेकों समस्याओं का कारण बन सकता है।

2. नियमित रूप से उम्र के अनुसार कैलकेरिया फास का सेवन करने से असयम दांत नष्ट होने या दांत के रोग नहीं होते हैं।

3. बच्चों में गाय का दूध, महिलाओं में गर्भ के समय से कैल्केरिया फास की आवश्यकता होती है जो हार्मोन्स बदलाव में आवश्यक है। व गर्भ से शिशु का पूर्ण विकास के होने में भी आवश्यक होता है।

उपलब्धता–दूध डेयरी उत्पाद पनीर, चीस, दही, अमरुद, अंगूर, संतरा, पपीता, कीवी, बादाम स्ट्रावेरी, ब्लेकवेरी, सोयामिल्क, कोकोनट मिल्क, पालक, सुरजना फली शरीर में आवश्यक मात्राये-1. बच्चों में प्रतिदिन 0-6 माह, 200 मिलीग्राम, 7-12 माह 260, 1-3 वर्ष में 700, 4-8 वर्ष 1000, 9-18 वर्ष 1300 मिलीग्राम ।

2. महिलाओं 19 से 50 वर्ष- 1000 से 1200 मिलीग्राम, पुरुषों 19-70 वर्ष 1000 से 1200 मिलीग्राम 35 वर्ष की उम्र के बाद लगातार कैल्शियम का स्तर घटता रहता है। इसलिये युवा अवस्था में हड्डियों की देखभाल करना जरूरी है ताकि बुढ़ापे में हड्डियाँ व शरीर में स्फूर्ति बनी रही। इसलिये अपने भोजन, जीवन शैली का पूरा ध्यान रखते हुये सेहतमंद और सक्रिय जीवन शेली, नियमित दिनचर्या, घूमना, व्यायाम, योग से स्वस्थ जीवन व पूर्ण सक्रिय विकसित काया हमेशा साथ देती रहेगी।

हास्य तरंग

1. एक महिला ने अपनी सहेली को बताया कि बूढ़े व्यक्ति से शादी कर पछता रही हूँ। सहेली ने पूंछा क्या उसके पास दौलत नहीं है ? बैंक बैलेन्स नहीं है ? क्या कार बंगला नहीं है ? महिला बोली ऐसी कोई बात नहीं है पर उसने जितनी उम्र बताई थी वह उसके 10 वर्ष कम उम्र का आधार कार्ड देखने से मालूम पड़ा है।

2. पत्नी (पति से) कितने बार कह चुकी हूँ, मेरे भाई के लिये लड़की देखने चलो पर हर बार कोई न कोई बहाना बनाकर टाल देते हैं पति क्योंकि मेरी पसंद अच्छी नहीं है।

3. दादी बैंक में खाता खुलवाने गई। बैंक अधिकारी ने फार्म पर हस्ताक्षर करने के लिये कहा। दादी मुझसे हस्ताक्षर करते नहीं आते हैं। बैंक अधिकारी क्या दादी जी आप तो पड़ी लिखी है, आप अपने जमाने में दादाजी को चिट्ठी लिखती थी वैसे हस्ताक्षर करना है। अच्छा- दादी ने लिखा आपके चरणों की दासी मरूदेवी।

4. एक डॉक्टर जब भी ऑपरेशन करना होता तो पहिले टेबिल के नीचे घुस जाता था क्योंकि पहिले वह मैकेनिक थे।

5. टीचर (छात्र से) अपने पिता जी का नाम बताओ, छात्र- श्रीमतिराम, टीचर छात्र को डांटते हुये तुम्हें इतना भी ज्ञान नहीं है पुरुष के नाम के आगे श्री भी लगाते हैं या नहीं। छात्र जी मुझे मालूम है मेरे पिता नाम मतिराम है।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

समोसा

सामग्री- 3 कच्चे केले
2 चम्मच हरी मिर्च, अदरक पेस्ट
1/2 चम्मच हल्दी पाउडर
1 चम्मच गरम मसाला
1/2 चम्मच धनिया पाउडर
स्वादानुसार नमक
1 नींबूरस
2 कप मैदा
3 चम्मच तड़के के लिये तेल
आवश्यकतानुसार तेल

विधि- मैदा के अंदर नमक डालकर उसका आटा गूंद लेंगे और साइड में रख देंगे अभी हम मसाला के तैयारी करते हैं समासो के लिये।

कच्चे केले को कुकर में पका लें फिर उसका छिलका निकाल कर उसको मैश कर लें एक कड़ाई में तेल गर्म करें उसके अंदर अदरक का पेस्ट और जीरा चटकायें फिर हल्दी पाउडर, गरम मसाला पाउडर, नमक, नींबू का रस, धनिया पत्ते डालकर अच्छे से मिक्स करें फिर उसको ठंडा करें।

कढ़ाई में तेल गर्म करने रखें आटे से रोटी बेलें उस रोटी को बीच से दो भाग कर ले मसाले का थोड़ा भाग लेकर रखें और उसको तिकाने आकार में फोल्ड कर लें। इस तरह से सभी को फोल्ड करके समोसे तैयार करने और गर्म तेल के अंदर डाले और हरी चटनी, सॉस के साथ परोसे।

बाल कहानी

रास्ता बदल गया

कश्मीर की सुन्दर वादियों में एक बारामुला जिले के शिरी गांव में बजाहत फारूख वह रहता था। वह सेवा यूथ फ्यूचर एनजीओ के जरिये घाटी के युवाओं को गलत रास्ते पर जाने से रोकने के लिये मिशन में जुड़ चुका था। वह घाटी में शांति बनाये रखने के लिये जुटा था, युवाओं के बीच घाटी में उसने एक वर्कशॉप का आयोजन किया था। घाटी के दूर दराज इलाकों से उसके लिये बहुत सारे युवकों का सहयोग मिला था और एक उसका संगठन भी बन चुका था। उसने एक स्पोर्ट्स में इवेन्ट करवा लिया था, उसने जगह-जगह एक अच्छी किताबों का लाइब्रेरी खोली थी। जिस लाइब्रेरी में बहुत सारे युवक इकट्ठे हो रहें थे और सारे के सारे छात्र उसकी अभियोजना से काफी जुड़ रहे थे। जैसे कि घाटी में पहले भी किसी ने यह सोचा नहीं था कि ऐसा कुछ हो सकता है। बजाहत वठ्ठ की टीम में छह-सात हजार लोग ट्रेनिंग लेने के लिये आने लगे थे, जिन्हें लेकर आतंकी लोग प्रोपोगेंडा फैलते थें , वे आतंकी निर्दोष सेना और कश्मीरियों की जान ले लेते थे। बजाहत ने इस सबके लिये मोड दिया, इसमें हारकाब्रत और उसके परिवारों को ट्रेस कर लिया जाता था। इसमें तमाम लोग पाकिस्तान से आये थे, पाकिस्तान का यह बहुत बड़ी भीड़ सारे कश्मीरों में अशांति का माहौल बनाये रखती थी। पथराव के लिये लोगों को जोड़ा करती थी लेकिन बजाहत के बेटे को कभी भी यह चीज पसंद नहीं आयी, माता पिता और बच्चों को देख करके बजाहत की इस कार्य को प्रभावित होने लगे और बजाहत ने सब अनपढ़ लोगों को इकट्ठा करके उनके लिये अच्छे साहित्य और अच्छी किताबों को पढ़ने की प्रेरणा दी और परिणाम यह सामने आया कि बजाहत अब हथियार उठाने की अपेक्षा उन्हें सेना कि खिलाफ जब कभी जब उन्होंने हथियार उठाये थें, पत्थरवाजी वह करवाता था । 2016 के बीच में पत्थरबाजी की तमाम घटनाओं में बजाहत शामिल रहा करता था परन्तु उसने अब यह एक बात निश्चित कर ली कि हमें अब किसी प्रकार से भारत विरोधी आंदोलन नहीं करना है क्योंकि भारत हमारी माँ है, भारत हमारी वतन है और इस आधार पर उसने अपने सम्पूर्ण पत्थरबाजियों को छोड़कर के घाटी के गुमराह युवकों को एकत्रित कर उन्हें सही राह दिखाने के लिये कार्य करना प्रारंभ कर दिया। बजाहत भी सुधरा और बजाहत फारूख वट की कहानी भी मुड़ गई।

संस्कार गीत

बच्चो बच्चो बोलो

बच्चो बच्चो बोलो तेरी मुट्ठी क्या है
मुट्ठी में तूफान उन्नति डगर है
मुट्ठी में हिम्मत जीवन सफर है
बच्चो बच्चो बोलो तेरी मुट्ठी में क्या है।

1\.
मुट्ठी में जीने की सच्ची कला है
संघर्ष में लक्ष्य पाना भला है
बच्चो बच्चो बोलो तेरी मुट्ठी में क्या है

2\.
मुट्ठी में तेरी दुनिया बसी है
मेहनत के पीछे दुनिया चली है
बच्चो बच्चो बोलो तेरी मुट्ठी में क्या है।

3\.
मुट्ठी को बांध तुम आगे बढ़ोगे।
मंजिल को पाने तुम हर दम चलोगे
बच्चो बच्चो बोलो तेरी मुट्ठी में क्या है।

4\.
मुट्ठी में विद्या मुट्ठी में शिक्षा
हम न माँगेगे कोई भिक्षा

बाल कविता

करें प्रार्थना

करें प्रार्थना सुन भगवान
हम सब बच्चे महान ॥
मेरी माँ के हों संस्कार
व्यसन भुक्त मम आचार
गुरु की शिक्षा सेवादान ॥1॥
सत्य अहिंसा को हम पालें
जुआ मांस मदिर को टालें
श्वांस श्वांस प्रभु का नाम ॥2॥
प्रेम ओर करूणा व्यवहार
हम से हो सबका उपकार
करें विनय पर न अभिमान
अपने जैसा सबको माने
नहीं किसी को कभी सतायें
मात पिता गुरु का सम्मान

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

पारसोला (राज.)- आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज के करकमलों से दिनांक 06 सितम्बर 2024 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर पारसोला राजस्थान में ब्र. प्रदीप भैया दाहोद, ब्र. शकुन्तला देवी धरियावद, श्री दिलीप जैन को दीक्षायें दी गई। जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री प्रणितसागर जी महाराज, आर्यिका प्रेक्षामति माताजी, क्षुल्लक प्राप्तसागरजी महाराज रखा गया।

आगामी दीक्षायें

मदनगंज किशनगढ़- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज के करकमलों से 13 अक्टूबर 2024 को मदनगंज किशनगढ़ अजमेर राजस्थान में श्री भेरूलाल कासलीवाल भीलवाड़ा, पन्नालाल जैन मोजमाबाद को दीक्षायें दी जावेंगी।

समाधिमरण

कुलाचरम हैदराबाद- आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री वाङ्मय सागर महाराज का समाधिमरण 09 सितम्बर 2024 को रात्रि 09.47 मिनिट पर हुआ। पहले उनका नाम पंडित शिवचरण लाल मैनपुरी था।

अरिहंतनगर औरंगाबाद- आचार्य श्री विरागसागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री विश्वधीरसागर महाराज जी का समाधिमरण अरिहंतनगर औरंगाबाद महाराष्ट्र में 16 सितम्बर 2024 को प्रातः 6.05 मिनिट पर स्थविर मुनि विहितसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में हुआ।

फिरोजाबाद (उ.प्र)- मुनि श्री अमितसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री अविचार सागर महाराज जी का समाधिमरण 22 सितम्बर 2024 को प्रातः 06.47 मिनिट पर हुआ।

फिरोजाबाद (उ.प्र)- आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्यिका श्री क्षमानंदिनी माताजी का समाधिमरण श्री छिदामीलाल जैन मंदिर नसिया फिरोजाबाद (उ.प्र.)में 25 सितम्बर 2024 को हुआ।

दशलक्षण पर्व में धूम

सावरमति अहमदाबाद- श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर धर्मनगर सावरमति अहमदाबाद गुजरात में दशलक्षण पर्व 07 सितम्बर से 18 सितम्बर 2024 तक तत्वार्थ सूत्र महामंडल विधान के साथ-साथ प्रतिदिन अभिषेक, शांतिधारा, सहस्रनाम वाचन, तत्वार्थ सूत्र वाचन के साथ पर्व की पूजायें साथ ही एक अध्याय की अर्घावली के साथ चौसठ ऋद्धि विधान एवं कर्मदहन विधान सैकड़ों व्यक्तियों ने उपस्थित होकर किया। सांय 6 बजे आत्म विशुद्धि के लिये प्रतिक्रमण, सामायिक, ध्यान, योग तत्पश्चात भक्तामर अराधना, आरती, भक्ति के बाद प्रतिदिन दस धर्मों पर बाल ब्र. जिनेश मलैया, प्रधान संपादक संस्कार सागर इंदौर के मार्मिक प्रवचन तत्पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये जिसमें भक्तामर गायन प्रतियोगिता, आध्यात्मिक क्रिकेट, जैन

संस्कृति एक मिनिट, भजन प्रतियोगिता, फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता, मोक्ष सीढ़ी प्रतियोगिता, कौन बनेगा संस्कार भूषण, तीन के ग्रुप प्रश्न मंच, अंताक्षरी प्रतियोगिता, लाडू सजाओ प्रतियोगिता आदि प्रतियोगितायें आयोजित की गई। इस पर्व पर दस उपवास करने वाले साधक लगभग आठ रहें। पांच उपवास करने वाले साधक लगभग सात रहे। तथा उपवास करने वालों साधकों की संख्या 58 रही। सभी की पारणा 18 सितम्बर महामस्तकाभिषेक के बाद तथा क्षमावाणी, गले मिलो प्रतियोगिता आयोजन किया गया। 17 सितम्बर को श्रीजी की रथयात्रा निकाली गई तत्पश्चात श्री जी का अभिषेक एवं शांतिधारा की गई। दस उपवास करने वाले श्रीमति मिलन जैन, श्रीमति नीतू जैन, श्रीमति टीना जैन, श्रीमति पुष्पा जैन, श्री धनेश जैन, संयम जैन, इंदू जैन, अंश शाह। पांच उपवास या उससे अधिक करने वाले -पूजा जैन, नीतू जैन, राखी जैन, जिनम शाह, किन्नरी शाह, सौरभ जैन, सुलोचना जैन इसके अलावा रत्नत्रय के तीन उपवास करने वाले- श्री नटवरलाल जी, नेहा जैन, अनिला जैन, आर्यन जैन, प्रिंसी जैन, संभव जैन, पल जैन, वीर जैन, अनंत जैन, सुदेश जी सौगानी, शिवानी जैन, देवेन्द्र सिंह, युवराज जैन इसके अलावा रूचि जैन, ममता जैन, निती जैन, शिल्पा जैन, दिशा जैन, मीना जैन, शिल्पी जैन, तन्वी जैन, माया जैन, तन्मय जैन, पुनीत जैन, संदीप जैन, निकिता जैन, प्रक्षाल जैन, नेहा जैन, शिवानी जैन, सुरेश चंद जी, रंजना जैन, सुरेन्द्र जैन, कशिश जैन, प्रीति शाह, हितल शाह, सीमा शाह, मयुर जैन, यशवी जैन, आकांक्षी जैन, अखिल जैन, शिल्पी जैन, अंश शाह आदि ने भी उपवास की साधना कर दशलक्षण पर्व पर आत्मसाधना कर जीवन को उज्जवल बनाने का प्रयास किया।

धूपदशमी पर्व पर आज के धर्म के महानायक अर्थात् आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की जीवन झांकी

इंदौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के जीवन से संबधित झांकी लगाई गयी। जिसमें आचार्य श्री द्वारा दीक्षित शिष्यों का कल्पवृक्ष के माध्यम से चित्रण किया गया, आचार्य श्री द्वारा 131 मुनिराज, 172 आर्यिका माताजी, 61 एलक जी, 141 क्षुल्लक जी, 3 क्षुल्लिका माताजी इस प्रकार कुल 508 दीक्षायें दी गई एवं आचार्य श्री द्वारा चलाये गये प्रकल्पों को भी झांकी के माध्यम से दिखाया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री गजेन्द्र जैन (गिन्नी ग्रुप), मुख्य अतिथि राजेश जैन (एम.आई.सी मेम्बर), विशेष अतिथि श्री बालमुकुंद सोनी (पार्षद), नवीन जी गोधा, रमेशचंद जी जैन, राहुल जैन स्पोर्ट्स, सहयोगी हर्ष जैन, मनोज बाकलीबाल, धर्मेन्द्र जैन, राजीव सेठी, भरत जैन, धर्मेन्द्र जन, आजाद मोदी, मनोज जैन, अक्षय कासलीवाल, डी.के. जैन, डॉ. अरविन्द जैन, वीरेन्द्र जैन, प्रदीप जैन, आशीष जैन, संजय जैन, अनुराग जैन, प्रदीप जैन, अंशुल जैन आदि रहें।

वर्ग पहेली 300

1	2		3	■	4	5	■	6
7		■	8				■	
9		10		■		■	11	
■	■		■	12		13	■	
14				■	■	15	16	■
	■	■	■	17	■	18		
19		20	21	■	22		■	
	■	23		24		■	25	■
■	26		■	27		■	28	

बाये से दाये

1. साधु का शौच उपकरण -4
7. पथ, राह रास्ता -2
8. साथी, सहगामी -4
9. चुनौती, युद्ध के लिये आह्वान -4
11. शब्द, ध्वनि -2
12. हिन्दुस्तान, इंडिया -3
14. बिम्बसार की राजधानी राजा श्रेणिक की जन्म भूमि -4
15. दशरथ के पुत्र, अयोध्या के राजा -2
17. वह (संस्कृत) -1
18. वस्त्र कपड़ा चीर -3
19. गृहस्वामी -4
22. कृमि -2
23. तड़फन -4
26. कमल पेन -2
27. किनारा, साहिल -2
28. शिर का जन्तु -2

ऊपर से नीचे

1. राष्ट्रीय पुष्प/फूल -3
2. पाप को गलाने वाला सच्चा सुख देने वाला -3
3. तरंग, उमंग -3
4. जेल -4
5. पथिक -2
6. वीर निर्वाण दिवस, दीपों का पर्व -4
10. नौवे तीर्थंकर पुष्पदंत भगवान की जन्म भूमि -3
13. गीलापन, आर्द्र, मस्त -4
14. राजाओं में श्रेष्ठ, राशी -4
16. द्रव्यमान -2
20. गिरा हुआ -3
21. तिलहन, शरीर के काले निशान -2
22. माथा मस्तिष्क -3
24. सीमित -2
25. अध खिला फूल -2

वर्ग पहेली 299 का हल

1 वि	2 दि	शा	■	3 क	4 पी	■	5 को	6 प
7 रा	न	■	8 ख	मी	र	■	9 म	हा
10 ट	मा	11 ट	र	■	■	■	12 ल	ड़
■	13 न	ब	ल	■	14 त	15 प	■	■
16 द	■	■	■	17 कु	रू	प	■	18 ल
19 श	20 ब	21 न	म	■	22 ब	ड़ी	■	घु
23 ल	ख	न	■	24 त	र	■	25 न	त
26 क्ष	त	■	27 य	म	■	28 सं	य	म
29 मा	र	प	ति	■	30 व	त	न	■

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।

विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एक्रेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध हैं। जो काले नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 28/09/2024, पोस्टिंग दिनांक : 03/10/2024

मानव तस्करी दुनिया की सबसे बड़ी समस्या

❊ विजय कुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.) ❊

मानव तस्करी एक प्रकार का अपराध है जिसमें किसी मानव को खरीदा और बेचा जाता है खरीदे जाने वाले के बाद उसका इस्तेमाल मुफ्त में आजीवन मजदूरी कराने, उसके शरीर के अंगों को बेचने एवं अन्य लाभ प्राप्त करने हेतु किया जाता है इनमें इंसानों को मुख रूप से औरतों और बच्चों को खरीदा और बेचा जाता है। यौन शोषण, देह व्यापार, जबरन मजदूरी, जबरन शादी, घरेलू बेगार करवाना, गोद देना, भीख मंगवाना, अंगों का प्रत्यारोपण करवाना, मादक पदार्थों को एक स्थान से दूसरे भिजवाने के लिये महिलाओं एवं बच्चों की मानव तस्करी संगठित अपराध है और मानवाधिकार के हनन का सबसे भ्रणित नमूना है। सारी दुनिया में मानव तस्कारी गंभीर समस्या है, इस समस्या को जड़ से समाप्त करना संभव ही नही है। हम यह कह सकते है मानव तस्करी रोकने जो प्रयास रहे है उनसे यह अपराध कुछ कम हुआ है। हाल ही में एक अमेरिकी एजेंसी ने मानव तस्करी पर जो रिपोर्ट जारी की है। उस रिपोर्ट में उल्लेख किया है मानव तस्करी रोकने के उपायों के आधार पर भारत द्वितीय श्रेणी में हैं।

अमेरिका का विदेश मंत्रालय हर वर्ष एंट्री ट्रेफिकिंग रिपोर्ट जारी करता है। उक्त जारी ट्रेफिकिंग इन पर्सन्स रिर्पोट में भारत में मानव तस्करी रोकने के आधार पर द्वितीय श्रेणी के देश के रूप माना है। भारत सरकार ने अमेरिका के ट्रैफिकिंग विक्टिम्स प्रोटेशन एक्ट के न्यूनतम मानदंडो को प्रभावी तरीके से लागू नहीं कर सकती है। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया है मानकों के अनुपालन का भारत में प्रयास किया जा रहा है।

हम भारत में मानव तस्करी के मामलों की बात करें तो टी.आर.पी रिर्पोट के अनुसार भारत में मानव तस्करी के अधिकांश मामले आंतरिक होना पाया गया है। इन मामलों में अधिकांश प्रकरण निचली पिछडी जातियों व धार्मिक अल्प संख्यकों से जुड़े होते है। सबसे ज्यादा खतरा इन जातियाँ पर ही रहता है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में भवन या सड़क निर्माण, स्टील, कपड़ा उद्योग, अंडरग्राउंट केबल निर्माण, बिस्कुट एवं नमकीन कारखाने, फूलों की खेती और मछली पालन जैसे उद्योगों में डरा धमकाकर जबरन मजदूरी कराने की मानसिकता ने मानव तस्करी ने तीव्र गति से विस्तार लिया है। बेगार बधुआ मजदूरी सहित वेश्यावृत्ति के लिये देश में अवैध रूप से वेरोजगार अथवा जरूरतमंदर लोगों को उचित नौकरी या रोजगार के अवसार दिलाने का झांसा देकर वयस्कों बच्चों युवतियों व महिलाओं को अपने जाल में फंसाते है। ग्लोबल मारच अगेंस्ट चाइल्ड लेबर एंड ट्रेफिकिंग व्यवसायिक यौन शोषण से छुड़ाये गये 60 प्रतिशत पीड़ितों ने यह स्वीकार किया है कि उन्होंने उचित रोजगार दिलाने के नाम पर मजबूर किया गया। जारी रिपोर्ट में उल्लेख किया है भारत में मानव तस्कारी रोकने शोषण से मुक्ति दिलाने अनेक संस्थायें काम कर रही हैं, विडंबना यह है जिनको तस्कारी से मुक्त कराया जाता है उन पीड़ितों को संरक्षण पुनर्वास देखरेख करने की शासकीय सेवाएँ पूरी तरह से सक्रिय नही है अथवा विफल है।

भारत में कानून प्रवर्तन में प्रगति की सही जानकारी नही मिल पाती क्योंकि अधिकारी तस्करी रोकने के समुचित व गैर एकीकृत आंकड़े नही देते। रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरों के आंकड़ों में निरीक्षण, अभियोजना या दोष साबित होने वाले मामले शामिल नहीं किये जाते और आंकड़ों में पीड़ितों की सजा के मामले होते हैं, जबकि वेश्या वृति के लिये ग्राहक तलाशने व सेक्स तस्करी पीड़ितों को छिपाने में संलिप्तता को आपराधिक कृत्य घोषित करने वाले अनैतिक व्यापार अधिनियम को पूरी क्षमता से लागू नहीं किया जाता है। भारत में महिलाओं की तस्कारी के मुख्य केन्द्र दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, गुजरात सहित भारत नेपाल सीमा क्षेत्र है। मानव तस्कारी निवारण संरक्षण और पुनर्वास बिल 2018 तत्कालीन महिला एवं बाल विकास मंत्री मेनका गांधी के कार्यकाल में बनाया गया है यह कानून सभी प्रकार की मानव तस्करी की जांच उसके निवारण संरक्षण और पीड़ितों को न्याय दिलाने का प्रावधान करता है। इस कानून में यह भी प्रावधान किया है कि किसी व्यक्ति को दूसरे अपराध में 10 वर्ष की सजा हो गई है तो उस व्यक्ति पर यह कानून लागू नहीं होगा। भारतीय दण्ड संहिता की धारा 370 में सेक्स ट्रेफिकिंग के विभिन्न तरीकों का निषेध और सात वर्श से लेकर आजीवन कारावास तक की सजा का प्रावधान किया गया है। साथ ही यह भी प्रावधान है मानव तस्कारी में सरकारी अधिकारियों की संलिप्तता पायी जाना प्रमाणित होता है उसको आपराधिक कृत्य मानते हुये अधिकतम आजीवन कारावास की सजा दी जायेगी। भारतीय दंड संहिता 1860 के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता 2023 को एक जुलाई 24 से लागू किया गया है। पुरानी भारतीय दंड संहिता की धारा 370 के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता में धारा 143 स्थापित की गई है। पुरानी धारा 370 और नई धारा 143 में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। मानव तस्कारी रोकने इस कानूनी प्रावधान के अलावा बंधुआ श्रम प्रणाली अधिनियम, बाल श्रम अधिनियम, किशोर न्याय अधिनियम और भारतीय दण्ड संहिता के अन्य प्रावधानों के अन्तर्गत बेगार के विभिन्न तरीकों का निषेध किया गया है। अमेरिका अपने टीवीपीए कानून के न्यूनतम मानकों पर कार्यान्वयन के आधार पर विभिन्न देशों का वर्गीकरण करता है। प्रथम श्रेणी में वे देश आते हैं जहाँ पर टीवीपीए के न्यूनतम मानकों को पूरी तरह से लागू करते है जबकि दूसरे स्थान पर वे देश आते हैं, जो न्यूनतम मानकों को पूरी तरह लागू नही कर पाते, लेकिन प्रयासरत होते है। टीवीपीए न्यूनतम मानकों की व्यापकता के चलते भारत अब तक सफल नहीं हो पाया है। सारी दुनिया में चल रहे अनेक प्रयासों के बावजूद यह विचारणीय प्रश्न है कैसे रूकेगी मानव तस्करी ?